ISSN 0971-1953

एन.सी.एल.

# आलोक

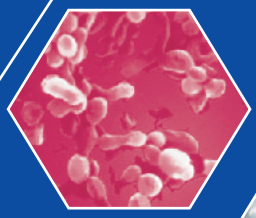

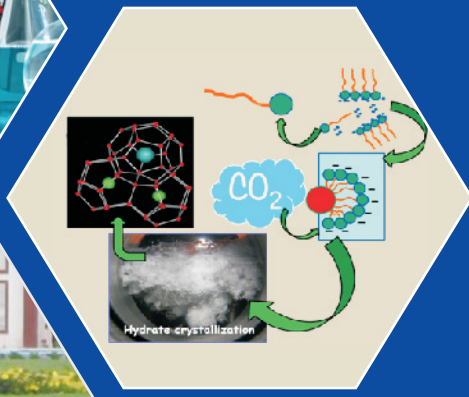

सीएसआईआर – राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

# हिन्दी पखवाड़ा समारोह की झलकियाँ

# एन.सी.एल. आलोक

वार्षिकी | 14 सितम्बर 2015 | अंक : 19

संरक्षक

**डॉ. विजयमोहनन के. पिल्लै**

निदेशक

सम्पादक

**श्रीमती स्वाति चढ्ढा**

हिन्दी अधिकारी

सहयोग

श्री. गोपाल परदेशी

श्री. सुभाषचंद्र मिश्र

प्रकाशक

**सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला**

पुणे 411008


पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं, सम्पादक अथवा एनसीएल प्रयोगशाला का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

डॉ. हर्ष वर्धन

Dr. Harsh Vardhan

सत्यमेव जयते

मंत्री
विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान
भारत सरकार
नई दिल्ली – 110001

MINISTER
SCIENCE & TECHNOLOGY AND EARTH SCIENCES
GOVERNMENT OF INDIA
New Delhi - 110001

# संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि सीएसआईआर – एनसीएल जैसी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अनुसंधान प्रयोगशाला वैज्ञानिक अनुसंधानों के साथ–साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति को लागू करने हेतु कटिबद्ध है और **'एनसीएल–आलोक'** का प्रकाशन प्रयोगशाला की राजभाषा हिन्दी के प्रति इसी कटिबद्धता को दर्शाता है। इस पत्रिका के माध्यम से विभिन्न वैज्ञानिक एवं शोधपरक लेखों का हिन्दी भाषा में प्रस्तुतिकरण निश्चित रूप से सराहनीय कार्य है, जो विज्ञान के क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के विकास में सहायक सिद्ध होगा।

मुझे विश्वास है कि **'एनसीएल–आलोक'** के माध्यम से जहां एक ओर विभिन्न वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकारियां जन–सामान्य तक उनकी अपनी भाषा हिन्दी में पहुंचेगी, वहीं दूसरी ओर संस्थान के कर्मचारियों को भी अपने विचार तथा ज्ञान को हिन्दी में अभिव्यक्त करने का सशक्त मंच प्राप्त होगा। निश्चित रूप से इस पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा हिन्दी के विकास को गति प्राप्त होगी।

मेरी ओर से इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी पदाधिकारियों और लेखकों को हार्दिक बधाई एवं अनेकानेक शुभकामनाएं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।

हर्ष वर्धन

**(डॉ. हर्ष वर्धन)**

**डॉ. गिरीश साहनी**
एफएनए. एफएएससी, एफएनएएससी
सचिव, वे.औ.अ.वि., भारत सरकार एवं
महानिदेशक

**Dr. Girish Sahni**
FNA, FASc, FNASc
Secretary, DSIR, Govt. of India &
Director General

**वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्**
अनुसंधान भवन, 2 रफी मार्ग, नई दिल्ली – 110001

**COUNCIL OF SCIENTIFIC & INDUSTRIAL RESEARCH**
Anusandhan Bhawan, 2, Rafi Marg, New Delhi - 110001

# संदेश

हर्ष का विषय है कि सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी राजभाषा पत्रिका **एनसीएल आलोक** के 19 वें अंक का प्रकाशन करने जा रही है। निःसंदेह पिछले 19 वर्षों से निकल रही इस पत्रिका में प्रकाशित होने वाले लेखादि मौलिक रूप से राजभाषा हिंदी में ही लिखे जाते होंगे, लिखे भी जाने चाहिए, क्योंकि संघ की राजभाषा नीति के अनुसार जब संघ सरकार का समस्त प्रकार का कार्य – प्रशासकीय, वित्तीय, वैज्ञानिक, तकनीकी आदि मूल रूप से हिंदी में किया जाने लगेगा, तो इससे न केवल पारदर्शिता, सर्जनात्मकता, उत्पादकता को बढ़ावा मिलेगा वरन् ज्ञान, विज्ञान तथा भाषा की स्पष्टता, लोकप्रियकरण तथा ग्राह्यता भी पुष्ट होगी।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों की पुस्तकें राजभाषा हिंदी में उपलब्ध कराये जाने की ज्वलंत आवश्यकता है ताकि उच्च शिक्षा का अनुसरण करने वाले पर्याप्त संख्या में लाभान्वित हो सकें । वैज्ञानिक शोध लेख एवं मौलिक लेखन, वैज्ञानिक तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति जन–जन तक पहुंचाना और भी श्लाघनीय व सराहनीय प्रयास है । मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका में प्रकाशित मौलिक, ज्ञानवर्धक, नवीनतम एवं महत्वपूर्ण जानकारी छात्रों, शोधकर्ताओं, बुद्धिजीवियों और प्रबुद्ध पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई व पत्रिका की सफलता के लिए शुभकामना।

गि॰ साहनी

**(डॉ. गिरीश साहनी)**

सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला
डॉ. होमी भाभा मार्ग, पुणे – 411008, भारत

**CSIR-NATIONAL CHEMICAL LABORATORY**
Dr. Homi Bhabha Road, Pune - 411 008, India.

**डॉ. विजयमोहनन के. पिल्लै**
निदेशक

**Dr. Vijayamohanan K. Pillai**
Director

# निदेशक की कलम से

सीएसआईआर – राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला की वार्षिक राजभाषा पत्रिका **'एनसीएल–आलोक'** के 19 वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए अत्यंत गौरव का विषय है। किसी भी देश के विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है और सीएसआईआर तथा अन्य वैज्ञानिक संस्थानों की स्थापना इसी उद्देश्य के साथ की गई थी। हमारी प्रयोगशाला भी अपने अनुसंधान कार्यों के माध्यम से देश के विकास के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रही है, साथ ही हमारी प्रयोगशाला भारत सरकार की राजभाषा नीति को लागू करने हेतु प्रतिबद्ध भी है। हमारी प्रयोगशाला में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतु अनेक गतिविधियां जारी है और **'एनसीएल–आलोक'** पत्रिका उन्हीं गतिविधियों का एक दर्पण है।

मैं अपनी प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों से यह निवेदन करना चाहूंगा कि वे अपने अनुसंधान कार्यों को राजभाषा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से जन–साधारण तक पहुंचाए । मुझे प्रसन्नता है कि **'एनसीएल–आलोक'** हमारे स्टाफ की कलात्मक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ–साथ विभिन्न वैज्ञानिक आलेखों को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करके जन–साधारण से जोड़ने का कार्य भी कर रही है। इससे निश्चित रूप से राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार तो होगा ही, साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा ।

मैं **'एनसीएल–आलोक'** के प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मियों एवं रचनाकारों को बधाई देते हुए पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी पत्रिका अपनी जिम्मेदारी का पूरी निष्ठा के साथ निर्वहन करते हुए राजभाषा तथा विज्ञान के पथ को आलोकित करेगी।

**डॉ. विजयमोहनन के. पिल्लै**

सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला
डॉ. होमी भाभा मार्ग, पुणे – 411008, भारत

**CSIR-NATIONAL CHEMICAL LABORATORY**
Dr. Homi Bhabha Road, Pune - 411 008, India.

# संपादकीय

एक भारत देश, पचासों प्रदेश और सैकड़ों भाषाएं । देश में फैली अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह हिन्दी में ही है । हिन्दी राजभाषा, संपर्क भाषा और राष्ट्रभाषा के तौर पर इस विविधता से भरे देश को एकता के सूत्र में बांधने का काम बखूबी कर रही है और अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में तेजी से विकसित हो रही है । विभिन्न देशों में हिन्दी भाषा की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है । इतना सब होने के बाद भी राजभाषा के तौर पर हिन्दी भाषा को विकसित करने के लिए अनेक प्रयासों और प्रयोगों की आवश्यकता है।

किसी देश की सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में उस देश की भाषा अहम् भूमिका रखती है। विश्व के सभी स्वतंत्र देश और नवोदित राष्ट्रों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि उनका उत्थान, उनकी अपनी भाषाओं के माध्यम से ही सम्भव है और रुस, जापान, जर्मनी, चीन आदि सभी राष्ट्र इसके प्रमाण है । इन देशों में शासन की भाषा, शिक्षा–दीक्षा की भाषा, अभियांत्रिकी और चिकित्सा विज्ञान की भाषा उनकी अपनी भाषा है। आज हमें इस दिशा में विचार तथा प्रयास करने की अत्यंत आवश्यकता है जिससे हमारी युवा पीढ़ी हिन्दी तथा अन्य प्रांतीय भाषाओं के महत्त्व को समझें और उनका प्रयोग करके उन भाषाओं का अस्तित्व निखारें ।

निश्चित रूप से विज्ञान तथा अनुसंधान आधुनिक प्रगति की आधारशिला है, इन क्षेत्रों को मजबूत बना कर राष्ट्र को मजबूत बनाया जा सकता है किंतु यह भी विचारणीय तथ्य है कि जब तक ज्ञान–विज्ञान अपनी भाषा में नहीं होगा, इसका लाभ जनता को नहीं मिलेगा । हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी 'लैब टू लैंड' का नारा दिया है और यह तभी संभव हो पाएगा जब विभिन्न वैज्ञानिक शोध एवं अनुसंधान कार्य अपनी भाषा के माध्यम से होंगे । अत: वैज्ञानिक साहित्य की संपदा अपनी राजभाषा हिन्दी में बढ़ाना आज समय की मांग है ।

प्रस्तुत पत्रिका में जहां **'राजभाषा आलोक'** के अंतर्गत राजभाषा हिन्दी से संबंधित लेखों को सम्मिलित किया गया है वहीं **'प्रौद्योगिकी एवं अनुसंधान आलोक'** के अंतर्गत विभिन्न वैज्ञानिक शोधपरक तथा तकनीकी लेखों को प्रस्तुत किया गया है । **'साहित्यिकी'** के अंतर्गत वैविध्यपूर्ण साहित्यिक रचनाएं समाविष्ट की गई हैं । इस पत्रिका के प्रकाशन में हमारी प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों तथा अन्य कर्मचारियों/अधिकारियों के साथ साथ बाहरी विद्वानों ने भी अपना रचनात्मक योगदान दिया है, मैं उन सभी का आभार व्यक्त करती हूँ । आशा है कि पत्रिका राजभाषा प्रचार–प्रसार के अपने उद्देश्य में सफल होगी । एनसीएल–आलोक का यह अंक महान वैज्ञानिक माननीय डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी को समर्पित है ।

**श्रीमती स्वाति चढ्ढा**

## समस्त एन.सी.एल. परिवार की ओर से

## मा. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी को

# हार्दिक श्रद्धांजलि

वे ज्ञान थे विज्ञान थे,
हर दिल की वे जान थे ।
कैसे भूलेंगे उनको,
ऐसे वे इन्सान थे,
वे तो सिर्फ और सिर्फ महान थे .....

# अनुक्रमणिका


| विषय | लेखक | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| **प्रौद्योगिकी एवं अनुसंधान आलोक** | | |
| 1. क्षयरोग (टी.बी.) : एक जटिल बीमारी | – डॉ. एच.बी. बोराटे | 4 |
| 2. कार्बन नैनोपदार्थ एवं नैनोतकनीकी (नैनोटेक्नोलॉजी) | – श्री. ओमकार सिंह कुशवाहा | 7 |
| 3. क्यों होती है रजोनिवृत्ति पश्चात अस्थिसुषुरता? | – डॉ. सुधीर कुमार | 9 |
| 4. सेलोफेन : एक विचित्र रसायन | – डॉ. अनिल लचके | 10 |
| 5. क्लोनिंग – क्या एवं क्यों | – डॉ. बी.डी.बुलचंदानी | 11 |
| 6. अनुसंधान विषयक यात्रा – 2 | – डॉ. श्रीमती शुचिश्वेता केंदूरकर | 14 |
| 7. ''हमारा गौरवशाली प्राचीन वैमानिक शास्त्र'' – गहन शोध का मोहताज़ | – श्री. सुरेश चिपलुनकर | 16 |
| **राजभाषा आलोक** | | |
| 1. दिग्विजय के लिए संकल्पों के पंखों पर आरुढ़ हिन्दी | – डॉ. केशव फालके | 20 |
| 2. भूमंडलीकरण, हम और हमारी हिन्दी | – डॉ. किशोर वासवानी | 26 |
| 3. अनुवाद – एक अनुभव | – श्री महेन्द्र कुमार मिश्र | 30 |
| 4. पारिभाषिक शब्दावली | – डॉ. राजबहादुर | 31 |
| 5. राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान | – | 32 |
| 6. सीएसआईआर–एनसीएल में राजभाषा कार्यान्वयन | – | 33 |
| 7. हिन्दी पखवाड़ा समारोह रिपोर्ट | – | 35 |
| 8. हिन्दी भाषा के संबंध में विभिन्न विद्वानों के विचार | – | 36 |
| **साहित्यिकी** | | |
| 1. सपनों का भारत स्वयं बनाएँ | – श्री ओमकार सिंह कुशवाहा | 38 |
| 2. सियाचिन ग्लेशियर – एक सर्वोच्च युद्धभूमि | – फ्ला. लेफ्ट. पराग र. चिटनवीस | 41 |

# अनुक्रमणिका


| विषय | लेखक | पृष्ठ क्र. |
|---|---|---|
| 3. बाल जीवन एवं आधुनिक परिवेश | – श्रीमती चंदना रॉयवर्धन | 45 |
| 4. मेरी हैदराबाद यात्रा का वह अविस्मरणीय अनुभव | – श्री मोहन ब. सूर्यवंशी | 47 |
| 5. खुश रहो, मुस्कुराते रहो, निरोगी रहो | – श्री सुभाष चन्द्र मिश्र | 49 |
| 6. बचत के उपाय | – श्रीमती कल्पना तलाटी | 51 |
| 7. कार्यस्थल और आपका व्यवहार | – श्रीमती स्वाति तिवारी | 53 |
| 8. सामाजिक विकास में साहित्य की भूमिका | – डॉ. हरभजन सिंह हंसपाल | 55 |
| 9. क्रान्ति की प्रतिमान – भगत सिंह की माताजी | – डॉ. धर्मेन्द्र शर्मा | 56 |
| 10. हिन्दी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर – मैत्रेयी पुष्पा | – डॉ. योग्यता भार्गव | 59 |
| 11. आज की दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी – कारण एवं निवारण | – डॉ. संजय जाधव | 61 |
| 12. इम्तिहान | – श्री परिमल बनाफर | 63 |
| 13. मुक्ति | – गीतिका द्विवेदी | 65 |
| 14. जायसी का रहस्यवाद | – डॉ. पुष्पा पुष्पध | 67 |
| 15. आग कहाँ से लाओगे | – डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य | 68 |
| 16. मेरी दुआ कबूल हो गई | – श्री सुरेश वसंत कनपटे | |
| 17. पंचकाव्य | – श्री सत्यप्रसाद कंडवाल | 69 |
| 18. गज़ल | – डॉ. सतीश चतुर्वेदी | |
| 19. हवाईजहाज का सफर मेरा | – डॉ. एच.बी.बोराटे | 70 |
| 20. हे मानव | – कु. प्रियंका शर्मा | 71 |
| 21. बेटी | – श्रीमती मीरा रायकवार | |
| 22. जिन्दगी की पाठशाला | – श्रीमती साधना खन्ना | 72 |
| 23. देखो हमारा भारत श्रृंगार कर रहा | – श्री संघशील 'सागर' | |
| 24. भावार्पण | – श्रीमती स्वाति चढ्ढा | 73 |

# प्रौद्योगिकी एवं अनुसंधान आलोक

# क्षयरोग (टी.बी.) : एक जटिल बीमारी

**डॉ. एच.बी. बोराटे,** वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एन.सी.एल., पुणे

क्षयरोग (तपेदिक या टीबी) यह आम तौर पर माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्यूलासिस (myco bacterium tube rculosis) नामक जीवाणु की वजह से होनेवाला घातक संक्रामक रोग है। यह जीवाणु रॉबर्ट कॉख (Robert Koch) द्वारा 24 मार्च 1882 को पहचाना और वर्णित किया गया और इस खोज के लिये उनको 1905 में नोबल पुरस्कार दिया गया। यह रोग सामान्यतः फेफड़ों को प्रभावित करता है लेकिन यह शरीर के परिधीय लिम्फ नोड्स (peripheral lymph nodes), गुर्दे (kidneys), मस्तिष्क और हड्डियों जैसे अन्य भागों पर भी हमला कर सकता है। जब सक्रिय फुफ्फुसीय क्षयरोग से पीड़ित लोग खांसते, छींकते, गाते, थूकते या दूसरों के साथ बातें करते हैं तो वे सूक्ष्म आकार की संक्रामक एयरोसोल बूंदों को बाहर निकालते हैं। एक छींक से लगभग 40,000 बूंदें निकल सकती हैं। इन बूंदों में से हर एक बूंद क्षयरोग फैला सकती है, क्योंकि क्षयरोग की संक्रामक खुराक बहुत कम (10 से भी कम बैक्टीरिया) होती है। क्षयरोग संक्रमण से प्रकट क्षयरोग की ओर प्रगति तब होती है जब क्षयरोग के जीवाणु प्रतिरक्षा प्रणाली की सुरक्षा पर काबू पा लेते हैं और संख्या बढ़ाना शुरु कर देते हैं। क्षयरोग के जीवाणु से संक्रमित 5 से 10 प्रतिशत लोगों में उनके जीवन काल के दौरान सक्रिय रोग विकसित हो जाता है। इसके विपरीत, एचआईवी से संयुक्त रूप से संक्रमित लोगों में से 30 प्रतिशत में सक्रिय रोग विकसित हो जाता है। खून–वाली थूक के साथ पुरानी खांसी, बुखार, भूख न लगना, वजन घटना और थकान आदि लक्षण क्षयरोग को दर्शाते हैं। इसका निदान छाती का एक्स–रे, रक्त परीक्षण, शरीर के द्रव्य (fluids) की माइक्रोबायोलॉजिकल कल्चर तथा ट्यूबरक्यूलाइन त्वचा परीक्षण (Tuberculin Skin Test) के द्वारा किया जाता है। माइकोबैक्टीरियम बोविस (Mycobacterium bovis), माइकोबैक्टीरियम अफ्रिकेनम (Mycobacterium africanum), माइकोबैक्टीरियम कानेत्ती (Mycobacterium canettii), माइकोबैक्टीरियम माइक्रोटी (Mycobacterium microti), माइकोबैक्टीरियम पीनिपेड़ी (Mycobacterium pinipedii) इत्यादि क्षयरोग पैदा करने वाले माइकोबैक्टीरियम समूह के अन्य जीवाणु हैं। क्षयरोग के उपचार में एंटीबायोटिक दवाइयों का उपयोग करके बैक्टीरिया को मारा जाता है। माइकोबैक्टीरिया की कोशिका की दीवार की असामान्य संरचना और रासायनिक संघटन दवाइयों के प्रवेश को बाधित करते हैं और कई एंटीबायोटिक दवाइयों को अप्रभावी करते हैं इसलिए क्षयरोग का प्रभावी उपचार कठिन है और लंबी अवधि तक उपचार की आवश्यकता पड़ती है। रिफैम्पिसिन (Rifampicin), आइसोनियाजिड (Isoniazid), पाइराजिनामाइड (Pyraxinamide), एथेमब्यूटॉल (Ethambutol) और स्ट्रेप्टोमायसिन (Streptomycin) इत्यादि दवाइयाँ नए रोगी के उपचार के लिए उपयोग में लाई जाती हैं और first line TB drugs कहलाती हैं। नए शुरु हुये फुफ्फुसीय क्षयरोग के सुझाये गये छह महीनों के उपचार में पहले दो महीनों तक रिफैम्पिसिन, आइसोनियाजिड, पाइराजिनामाइड और एथेमब्यूटॉल जैसी एंटीबायोटिक के संयोजन का उपयोग किया जाता है तथा बाद के चार महीनों में केवल रिफैम्पिसिन और आइसोनियाजिड का उपयोग किया जाता है।

अगर क्षयरोग के उपचार में केवल एक औषधि का उपयोग किया गया या उपचार बीच में बंद किया गया तो दवा–प्रतिरोध (drug resistance) देखा जाता है। जब माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्यूलासिस की नस्ल आइसोनियाजिड और रिफैम्पिसिन हेतु प्रतिरोध दर्शाती है तो उसे एकाधिक–दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (multidrug-resistant TB, MDR TB) कहा जाता है। दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग के लिए second line TB drugs समूह की महंगी औषधियों का प्रयोग करना होता है और लंबे समय तक उपचार लेना जरूरी होता है। पाइराजिनामाइड,

असफलता का मौसम, सफलता के बीज बोने के लिए सर्वश्रेष्ठ समय होता है।

एथेब्यूटॉल, रिफाब्यूटॉल, रिफाब्यूटिन (Rifabutin), कानामायसिन (Kanamycin), अमिकासिन (Amikacin) काप्रीओमायसिन (Capreomycin), स्ट्रेप्टोमायसिन (Streptomycin), लिवोफ्लौक्सासीन (Levofloxacin), मौक्सीफ्लौक्सासीन (Moxifloxacin), ओफ्लौक्सासीन (Ofloxacin), पैरा अमीनोसालिसाइलिक एसिड (para-aminosalicylic acid), साइक्लोसेरिन (Cycloserine), टेरिजिडोन (Terizidone), थायोनामाइड (Thionamide) प्रोटियोनामाइड (Protionamide) इत्यादि औषधियाँ एकाधिक–दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (MDR TB) के लिए उपयोग में लाई जाती हैं।

जब क्षयरोग के जीवाणु first line TB drugs समूह के आइसोनियाजिड और रिफैम्पिसिन और second line TB drugs समूह के लिवोफ्लौक्सासीन, मौक्सीफ्लौक्सासीन या ओफ्लौक्सासीन में से कोई एक और कानामायसिन, अमिकासिन या काप्रीओमायसिन में से एक औषधि हेतु प्रतिरोध दर्शाते हैं तो उसे अत्यधिक–दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (Extermely drug-resistant TB, XDR TB) कहा जाता है। क्लोफाजिमीन (Clofazimine), लिनेजोलिड (Linezolid), अमोक्सिसिलिन/क्लावुलानेट (Imipenem/Cilastatin), थायोअसेटाजोन (Thioacetazone) इमीपेनिम / सिलास्टाटिन (Imipenem / Cilastatin), अधिक मात्रा में आइसोनियाजिड क्लारिथ्रोमायसिन (Clarithromycin) इत्यादि औषधियाँ अत्यधिक–दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (XDR TB) के लिए उपयोग में लाई जाती हैं।

दवा–प्रतिरोध, वर्तमान क्षयरोग–विरोधी औषधियों का विषैलापन (toxicity), लंबे समय तक उपचार की जरूरत इत्यादि की वजह से क्षयरोग–विरोधी नई औषधियों की खोज आवश्यक है। क्षयरोग–विरोधी औषधियाँ और एचआइवी–विरोधी औषधियों के बीच अवांछित क्रियाएँ होती हैं इसलिए अगर एचआइवी–बाधित व्यक्ति में क्षयरोग का संक्रमण हो जाए तो बहुत ही जटिल समस्या उत्पन्न होती है। क्षयरोग–विरोधी नई और सस्ती औषधियाँ खोजने की अत्यधिक आवश्यकता का यह भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है।

नई औषधियाँ खोजने के लिए मरीजों और स्वस्थ लोगों पर लंबे समय तक प्रयोग करना पड़ता है जिसे चिकित्सीय परीक्षण का पहला, दूसरा या तीसरा चरण (फेज–1, फेज–2 या फेज–3 क्लीनिकल ट्रायल) कहा जाता है। इस दिशा में चालीस वर्ष किए गए प्रयासों के फलस्वरूप Sirturo (bedaquiline) और Delamanid (OPC-67683) ये औषधियाँ एकाधिक–दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (MDR TB) के उपचार के लिए उपलब्ध हो गयी हैं। नाइट्रोइमिडाजोल (nitroimidazole) समूह के PA-824 और रिफामायसिन (rifamycin) समूह का Rifapentine, बेंजोथायाजीनोन (benzothiazinone) समूह का PBTZ169 ओक्जाजोलिडीनोन (oxazolidinone) समूह के AZD5847 और Sutezolid (PNU-100480) इत्यादि रसायनों की क्षयरोग–विरोधी उपयुक्तता की जाँच भी जारी है।

क्षयरोग की रोकथाम के लिए नवजात शिशुओं में बीसीजी (बैसिलस काल्मेट–गुएरिन) टीकाकरण किया जाता है। सौ साल पुराने इस उपाय के साथ साथ क्षयरोग के नये टीके को विकसित करने के लिए भी अनुसंधान जारी है और MVA85A, (M72+AS01$_E$),Vaccae™ इत्यादि कई संभावित उम्मीदवार चिकित्सीय परीक्षण के पहले व दूसरे चरण में हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization) के 2014 के वैश्विक क्षयरोग रिपोर्ट (2014 global TB report), जिस में 202 देश–प्रदेशों (countries and territories) के आँकड़े दिये गए हैं, के अनुसार 2013 में पूरी दुनिया में 90,00,000 क्षयरोग के रोगी थे और भारत में सर्वाधिक (दुनिया के 24 प्रतिशत ) रोगी थे। दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (MDR TB) के रोगियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (MDR TB) से 2013 में वैश्विक स्तर पर 2,10,000 रोगियों की मौत हो गयी । अत्यधिक–दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (XDR TB) के मामले भी देखे जा रहे हैं और 2013 में दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (MDR TB) के 9 प्रतिशत रोगियों में अत्यधिक–दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (XDR TB) देखा गया।

क्षयरोग का मुकाबला करने के लिए वैज्ञानिक तथा

---

यह सच है कि पानी में तैरनेवाले ही डूबते हैं, किनारे पर खड़े रहनेवाले नहीं, मगर किनारे पर खड़े रहनेवाले कभी तैरना भी नहीं सीख पाते ।

**– सरदार पटेल**

औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) की विविध प्रयोगशालाओं में क्षयरोग–विरोधी औषधियों के बारे में अनुसंधान चल रहा है और Cadila Pharma के साथ Risorine नामक formulation का विकास किया गया है जो रिफैम्पिसिन (Rifampicin) की जैवउपलब्धता (bioavailability) बढ़ाता है जिस की वजह से औषधि की मात्रा कम की जा सकती है।

**नैदानिक परीक्षण (diagnostic test) -** यह क्षयरोग के उपचार का एक महत्वपूर्ण अंग है। Molbio Diagnostic Pvt. Ltd. जो Bigtec Private Limited, Bangalore और Tulip Group, Goa का संयुक्त उद्यम (joint venture) है, ने क्षयरोग के लिए पर आधारित Truelab™ नामक नैदानिक परीक्षण 2013 में विकसित किया है। क्षयरोग के मुकाबले के लिए तरह तरह की औषधियों के नए संयोजन भी चिकित्सीय परीक्षण के विविध चरणों में हैं।

क्षयरोग–विरोधी औषधियों के अनुसंधान का कार्यक्षेत्र विस्तारित करने के उद्देश्य से सीएसआईआर द्वारा प्रायोजित किये गए Open Source Drug Discovery (OSDD) नामक कार्यक्रम के अंतर्गत 2008 से क्षयरोग–विरोधी नई औषधियाँ खोजने का संशोधन कार्य चल रहा है। इस संबंध में 2012 में TB Alliance international, जो कि एक गैर–लाभकारी संगठन (non-profit organization) है और नई शीघ्र कृतिशील, सस्ती दवाइयों का विकास करता है, के साथ दवा–प्रतिरोधी क्षयरोग (MDR TB) के उपचार के लिए सखोल चिकित्सीय परीक्षण करने के बारे में एक अनुबंध किया गया है। इस के अंतर्गत PA 824 जो नाइट्रोइमिडाजोल (nitroimidazole) समूह का सदस्य है, Moxifloxacin जो fluoroquinolone समूह का सदस्य है, और पाइराजिनामाइड (Pyrazinamide) इन दवाइयों का चिकित्सीय परीक्षण और DOTS PLUS (directlty observed treatment) नामक वर्तमान उपचार पद्धति में लाये जानेवाली दवाइयों के साथ के संयोजन का चिकित्सीय परीक्षण भी अन्तर्भूत हैं। इस उपक्रम में National Institute for Research in Tuberculosis (NIRT), चैन्नई और M/s GVK Biosciences को समाविष्ट किया गया है।

OSDD के अंतर्गत चल रहे विश्वव्यापी अनुसंधान में 130 देशों के 8,000 से ज्यादा लोग काम कर रहे हैं। नई दवाइयों के विकास में small molecule chemical libraries का अत्यंत महत्व होता है, यह बात ध्यान में रखकर वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) की IICT, NCL, NIEST, NIIST, CLRI, CDRI जैसी प्रयोगशालाओं में 90 से ज्यादा परियोजना प्रमुखों (project leaders) की मदद से नए रासायनिक पदार्थों (new chemical entities) के संश्लेषण (synthesis) का काम चल रहा है। संश्लेषित किए गए ये यौगिक पदार्थ IICT - स्थित Central respositor at National MOL Bank में रखे गए हैं और इनमें से करीब 10,000 यौगिक पदार्थों की क्षयरोग–विरोधी क्रियाशीलता की जाँच CSIR-IICT और Premas Biotech में की गयी है। इस के आलावा IGIB, NII, University of Hyderabad, IICT, NIIST, BITS Hyderabad इत्यादि प्रयोगशालाओं और Anthem Biosciences नामक CRO में target based क्षयरोग–विरोधी क्रियाशीलता की जाँच का काम चल रहा है।

OSDD के अंतर्गत किए गये काम को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट ने 2013 में क्षयरोग विरोधी नई दवाइयों के बारे में संशोधन करनेवाले छात्रों को TATA CSUR-OSDD नामक शिष्यवृत्ति प्रदान करने के लिए वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद को अनुदान राशि प्रदान की है।

क्षयरोग की जटिल समस्या को हल करने की दिशा में चल रहे उपर्युक्त प्रयत्नों के फलस्वरूप भारतीय उद्गम की क्षयरोग–विरोधी नई औषधियाँ या ज्ञात औषधियों के नए संयोजन बनाने में सफलता हासिल होगी और भारत क्षयरोग–मुक्त होगा– ऐसी आशा है।

✦ ✦ ✦

''यदि आप बार – बार असफल नहीं हो रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आप कुछ नया नहीं कर रहे हैं।''– **वुडी एलन**

# कार्बन नैनोपदार्थ एवं नैनोतकनीकी (नैनोटेक्नोलॉजी)

**श्री. ओमकार सिंह कुशवाहा,** वरिष्ठ शोधछात्र, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

नैनोपदार्थ एवं नैनोतकनीकी पिछले तीन दशकों में पदार्थ अनुसंधान का महत्त्वपूर्ण अंग बन गए है। नैनोपदार्थ विकास में कार्बन नैनौपदार्थ विशेषरूप से केंद्रबिन्दु बने हुए हैं। इसी क्रम में फुलरीन ($C_{60}$) 1985, पहला प्रमाणिक नेनौपदार्थ था जिसने नैनोविज्ञान तथा नैनोअभियांत्रिकी के आरम्भिक विकास में अद्वितीय योगदान दिया। इसके बाद सन् 1990 में कार्बननैनोट्यूबस (नैनोनलिकाएँ) की खोज हुई जो कि अबतक के सबसे अधिक तीव्र एवं सघनरूप से खोजे गए नैनोपदार्थ हैं। अभी हाल ही में अस्तित्व में आए ग्रेफीन नामक कार्बन नैनोपदार्थ की अद्वितीय क्षमताओं तथा गुणों ने वैज्ञानिकों को बहुत आकर्षित किया है। इस चमत्कारिक पदार्थ की खोज के लिए ज़िम तथा नोवोसेलोव को नोबल पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हे 2010 के भौतिकी क्षेत्र में मिला । आज ग्रेफीन विज्ञान एवं तकनीकी एक विस्तृत शोध का विषय है।

ग्रेफीन एक एकल–परमाणु–परत है जिसमें सभी कार्बन $sp^2$ हाइब्रिड बन्ध द्वारा षटभुज आकृतियाँ (मधुकोश) जैसी संरचना बनाते हैं। आज ग्रेफीन को सभी प्रकार के कार्बन नैनोपदार्थ की मूल परमाणुवीय आकृतिक इकाई माना जाता है तथा स्मार्ट पदार्थ के रूप में प्रसिद्ध है।

फुलरीन ($C_{60}$) शून्य–आयामी होता है, कार्बन नैनोनलिकाँए एक आयामी, ग्रेफीन द्वि–आयामी तथा कार्बन का एक अन्य अपरूप ग्रेफाईट त्रि–आयामी होते हैं। अन्य कार्बन नैनोपदार्थ जैसे क्वांटम बिन्दु, कार्बन नैनोनलिकाएँ, ग्रेफीन आक्साइड, कार्बन नैनोतार आदि भी कम महत्त्वपूर्ण नही हैं तथा आधुनिक विज्ञान में अग्रणी हैं।

आज के डिजिटल युग में अर्धचालक पदार्थ (सेमीकण्डक्टर मैटीरियल) बहुत ही आकर्षक एवं उपयोगी हैं। अर्धचालक पदार्थ अपनी शुद्ध अवस्था में चालकता तथा कुचालकता बहुत कम दर्शाते हैं क्यों कि उनमे ऊर्जा–अंतर (बैंड गैप) बहुत ही कम होता है। इस शुद्ध अवस्था में इनका उपयोग ठीक प्रकार से नहीं किया जा सकता है। इनको प्रभावी उपयोग हेतु n तथा p प्रकार के डोपेन्ट्स के द्वारा क्रियान्वित किया जाता है जिससे इनके गुणों में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि होती है। इस प्रक्रिया से p-n जंक्शन (बन्धक), ट्रांजिस्टर, जंक्शन लेजर्स, प्रकाश उत्सर्जक डायोड़ तथा अन्य प्रकार के तकनीकी क्रांति के लिए उपयोगी उपकरण तथा यंत्र बनाए जा सकते हैं।

शुद्ध ग्रेफीन भी प्रायोगिक रूप से अनुपयोगी है क्योंकि इसमें कम चालक घनत्व, शून्य ऊर्जा अंतर तथा रासायनिक निष्क्रियता होती है। अर्ध चालकों की तरह ग्रेफीन को भी डोपेन्ट्स, अशुद्धियों तथा विकारों द्वारा क्रियान्वित करके अद्वितीय गुणों को प्राप्त किया जा सकता है।

अशुद्धियों द्वारा डोपिंग की प्रक्रिया में कुछ कार्बन परमाणुओं को बोरान अथवा नाइट्रोजन परमाणुओं द्वारा विस्थापित कर दिया जाता है जिससे चमत्कारिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त उच्च ऊर्जा किरणों का उपयोग भी विकार उत्पन्न करने के लिए प्रमुखता से किया जाता है, जिसके लिए इलेक्ट्रॉन, प्रोट्रान तथा अन्य कणों का उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार चुम्बकीय विकार के द्वारा पैरामैगनेटिक प्रभाव वाले ग्रेफीन पदार्थ उत्पन्न किए जा सकते हैं।

उपरोक्त वर्णित तकनीकों का उपयोग करके अत्याधुनिक विकसित ग्रेफीन नैनोपदार्थ प्राप्त किए जा सकते हैं। कार्बन नैनोपदार्थ ने आधुनिक अनुसंधान की न केवल दिशा बदल दी है बल्कि प्रतिदिन नए कीर्तिमान बना रहे हैं। आइए ग्रेफीन तथा अन्य कार्बन नैनोपदार्थ के आधुनिक उपयोगों के बारे में जाने।

**क) इलेक्ट्रानिक उपकरण** :

फारइंफ्रारेड तथा टेट्राहर्ट्ज इलेक्ट्रानिक उपकरणों में, एम्प्लीफिकेशन, सेंसर, फ्रिक्वेंसी मल्टीप्लीकेशन आदि।

**ख ) प्रकाशकीय इलेक्ट्रॉनिक उपकरण**

फोटोडिटेक्टर, मोड्यूलर, पॉलेराइज़र, नॉच फिल्टर, मोड़ लॉकर आदि.

---

देश को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है। – **श्री गोविंददास**

**ग ) ऊर्जा उपयोग –**

i) **सोलर सेल** :

ग्रेफीनयुक्त पॉलीमर सोलर सेल, ग्रेफीन–अकार्बनिक क्वांटमडाट हाइब्रिड सोलर सेल, ग्रेफीनयुक्त डाई उत्प्रेरित (सेंस्टाइज्ड़) सोलर सेल आदि।

ii) **फ्यूल सेल** :

ग्रेफीन अथवा कार्बननैनोपदार्थ एक उत्प्रेरक के आधार के रूप में, नाइट्रॉजन डोप्ड ग्रेफीन धातुमुक्त उत्प्रेरक के रूप में आदि।

iii) **ऊर्जा भण्डारण** :

सुपरकैपेसिटर, कार्बन नैनोनलिकाओं तथा ग्रेफीनयुक्त हाइब्रिड सुपर कैपेसिटर आदि।

iv) **लीथिय आयन बैटरी** :

कार्बन नैनोपदार्थ युक्त Li आयन बैटरी , Li आयन बैटरी (ग्रेफीनहाइब्रिड इलेक्ट्रोड़युक्त)

**घ) बायोसेंसिंग तथा बायोइमेजिंग :**

(i) ग्रेफीन एवं अन्य कार्बन नैनो पदार्थयुक्त एंजाइम बायोसेंसर, ग्लूकोज, आरगेनोफास्फेट आदि का पता लगाने के लिए।

(ii) इलेक्ट्रोकेमिकल डिटेक्शन जैसे कि ग्लूकोज़ का पता लगाना, डी.एन.ए का पता लगाना आदि।

(iii) जीन डिलीवरी, वायरस सेंसिंग, प्रोटीन एंटीबॉडी डिटेक्शन, ड्रग डिलीवरी आदि।

(iv) आप्टिकल डिटेक्शन जैसे कि फ्लोरोसेंट प्रभाव, प्रोटीन का पता लगाना, धातु–आयन का पता लगाना, डीएनए खोजना आदि।

(v) एम आर आई कंट्रास्ट पदार्थ के रूप में

इस प्रकार हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि आनेवाला युग नैनोयुग होगा तथा इक्कीसवीं सदी कार्बन नैनो पदार्थ की सदी होगी।

✦ ✦ ✦

## मिट्टी की पूजा

एक बार एक विदेशी मेहमान देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद से मिलने पहुंचा। डॉ. प्रसाद के सेवक ने आगंतुक को बताया कि राजेंद्र बाबू अभी पूजा कर रहे हैं, इसलिए आप प्रतीक्षा करें। विदेशी मेहमान कुछ देर बैठा रहा, फिर उसके भीतर उत्सुकता जागी । वह देखना चाहता था कि आखिर राजेन्द्र बाबू किस तरह पूजा कर रहे हैं, हालांकि वह अंदर जाने से कतरा रहा था। लेकिन उससे नहीं रहा गया। आखिरकार वह वहां पहुंच ही गया । वहां जाकर वह राजेन्द्र बाबू को पूजा करते हुए देखने लगा। राजेन्द्र बाबू ने मिट्टी की एक डली के सामने श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़े और सिर झुकाया, यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। राजेन्द्र बाबू पूजा से उठे तो सामने विदेशी आगंतुक को पाकर प्रसन्न हो गए और उसे बैठक में ले गए । वे आगंतुक के चेहरे के भाव को देखकर ही समझ गए कि उसके भीतर उनकी पूजा को लेकर कोई–न–कोई सवाल उठ रहा है। बैठक में पहुंचते ही सबसे पहले आगंतुक ने उनसे मिट्टी की डली को पूजने का कारण पूछा और उसके पीछे के दर्शन को स्पष्ट करने को कहा । राजेंद्र बाबू बोले – मिट्टी की यह डली हमारे देश की पवित्र माटी की प्रतीक है। हमारे यहां मिट्टी को ईश्वर की नियामत माना गया है। इस पवित्र मिट्टी व नदियों के जल के माध्यम से ही हम असंख्य उपयोगी द्रव्य प्राप्त करते हैं, इसलिए हम भारतीय प्रकृति के कण–कण में ईश्वर के दर्शन करते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव, पशु–पक्षी, कंकड़–पत्थर सब में ईश्वर विराजमान है। यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है।' यह सुनकर वह विदेशी मेहमान अभिभूत हो उठा।

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता । **– डॉ. राजेन्द्रप्रसाद**

# क्यों होती है रजोनिवृत्ति पश्चात अस्थिसुषुरता?

डॉ. सुधीर कुमार

**अस्थिसुषरता** या **ऑस्टियोपोरोसिस** (Osteoporosis) हड्डी (Bone) का एक रोग है जिससे फ्रैक्चर का खतरा बढ़ जाता है । ऑस्टियोपोरोसिस में अस्थि खनिज घनत्व (BMD) कम हो जाता है, अस्थि सूक्ष्म–संरचना विघटित होती है और अस्थि में असंग्रहित प्रोटीन की राशि और विविधता परिवर्तित होती है।

**ऑस्टियोपोरोसिस** महिलाओं और पुरूषों दोनों में पाया जाने वाला रोग है किंतु महिलाओं में रजोनिवृत्ति के पश्चात इसके मामले अधिक देखे गए हैं। इस अवस्था में इस बीमारी को रजोनिवृत्ति पश्चात अस्थिसुषुरता (Postmenopausal osteoporosis) कहते हैं, जो कि महिलाओं में होनेवाली हड्डी (Bone) की सामान्य बीमारी है। महिलाओं में रजोनिवृति (Menopause) के दौरान न्यासर्ग (Hormone) के स्राव में गड़बड़ी आती है परन्तु स्त्रीमद कारक (Estrogen) के स्राव में कमी अस्थिसुषुरता के लिए मूलरूप से जिम्मेदार होती है।

**रजोनिवृत्ति पश्चात अस्थिसुषुरता में स्त्रीमद कारक की भूमिका**

स्त्रीमद कारक मुख्यतया अण्डाशय (Ovary) से स्रावित होनेवाला न्यासर्ग है। जब महिलाओं में रजोनिवृत्ति की अवस्था आती है तो स्त्रीमद कारक केवल हड्डी के अधिकतम द्रव्यमापन (Peak bone mass) को प्राप्त करने में ही मदद नहीं करता वरन् उसे बनाये रखने में भी मदद करता है। इसकी कमी से हड्डी के बदलाव की दर (Turn over rate) में वृद्धि हो जाती है। परिणामस्वरूप अस्थि निर्माण (Bone formation) और अस्थिभंग (Bone resorption) का संतुलन खत्म हो जाता है। जिससे हड्डियाँ छिद्रित हो जाती हैं और यही अस्थिसुषुरता होती है।

**कोशकीय (Cellular) एवं आण्विक (Molecular) स्तर पर स्त्रीमद कारक का प्रभाव –**

स्त्रीमद कारक अस्थिपोषक कोशिका (Osteoblast) की संख्या और क्रियाशीलता को बढ़ा कर अस्थि निर्माण को प्रेरित करता है जबकि ओस्टियोप्रोटेजेरीन का स्राव कर अस्थिशोषक कोशिका (Osteoclast) की संख्या पर नियंत्रण रख अस्थिभंग को बढ़ने से रोकता है।

ओस्टियोप्रोटेजेरीन अस्थिशोषक कोशिका के कोशिकीय गतिक (Cytokine) केन्द्रकीय कप्पा बीटा ग्राही उत्प्रेरक (Receptor activator NF κβligand) के लिए ग्राही (Receptor) का कार्य करता है और इस गतिक को अपने सामान्य ग्राही से बँधने से रोकता है। ओस्टियोप्रोटेजेरीन और केन्द्रकीय कप्पा बीटा ग्राही उत्प्रेरक का अनुपात अस्थिशोषक कोशिका की संख्या को नियंत्रित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। स्त्रीमद कारक की कमी से ओस्टियोप्रोटेजेरीन की मात्रा घटती है और इन दोनों का एक निश्चित अनुपात भंग होता है। परिणामस्वरूप अस्थिशोषक कोशिका की संख्या बढ़ जाती है।

**क्या करती है अस्थिशोषक कोशिका?**

अस्थिशोषक कोशिका हड्डी को एक खास आकार देने और उसकी गुणवत्ता बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसके लिए यह खनिज लवण और विभिन्न प्रकार के प्रोटीन को तोड़ कर हड्डी से बाहर निकालती है। परन्तु जब इनकी संख्या जरूरत से ज्यादा हो जाती है तो अस्थिसुषुरता हो जाती है।

अस्थिशोषक कोशिका की सतह पर इन्टेग्रिन नामक प्रोटीन पाया जाता है जो हड्डी में मौजूद आरजीनीन, ग्लाइसीन और एस्पारटिक अम्ल के अनुक्रम वाले प्रोटीन से बँधते हैं। जिससे अस्थिशोषक कोशिका के अंदर आशय (Vesicle) में मौजूद अम्लीय इन्जायम का स्राव होता है और ये इन्जायम हड्डी में मौजूद खनिज लवण और प्रोटीन को घुला देते हैं। इस तरह अस्थिशोषक कोशिका अपने कार्य को सम्पादित करती है। इनकी अधिक संख्या या अधिक क्रियाशीलता ही रजोनिवृत्ति पश्चात अस्थिसुषुरता का मूल कारण होता है।

**निदान–** ऑस्टियोपोरोसिस का निदान अस्थि खनिज घनत्व (BMD) को मापने पर किया जाता है। दोहरी ऊर्जा एक्स–रे अवशोषणमापी (DXA या DEXA) सर्वाधिक प्रचलित विधि है। असामान्य BMD का पता लगाने के अलावा, हड्डियों की कमजोरी के निदान के लिए संभावित परिवर्तनीय अंतर्निहित कारणों की जांच अपेक्षित है; यह रक्त–परीक्षण और एक्स–रे के साथ किया जा सकता है।

---

हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है। **– श्री बाबूराम सक्सेना**

# सेलोफेन : एक विचित्र रसायन

**डॉ. अनिल लचके,** वरिष्ठ वैज्ञानिक (सेवा.) सी.एस.आई.आर–एन.सी.एल, पुणे.

पैकैजिंग के लिए सेलोफेन का उपयोग हर देश में पिछले सौ सालों से हो रहा है। सेलोफेन एक शीशे के समान पारदर्शी–पतला कागज या तालिका है। मुलायम, चमकीला और लचीला होने के कारण इन में पैक किया हुआ पदार्थ आकर्षक दिखाई देता है। उस में पैक किया हुआ कोई भी पदार्थ अथवा चीज हम आसानी से देख सकते है। सेलोफेन पैकिंग के अंदर कीड़े–मकोड़े नहीं जा सकते। कार्डबोर्ड के डिब्बे में जो दवाईयाँ मिलती है, उसका आवरण सेलोफेन का होता है। इससे दवा लंबे समय तक सुरक्षित रह सकती है। मिठाई, टॉफी, बिस्किट, गोलियां, मसाले, स्टेशनरी, दवाईंयाँ सेलोफेन के पैक में सुरक्षित और साफ रहते है। खाद्य–पदार्थों से भरी हुई कटोरी पर महिलाएँ सेलोफेन का आवरण लगाकर रेफ्रिजिरेटर में रखती हैं। आजकल सीडी–डीवीडी भी सेलोफेन के डिब्बे में बेचते है।यह पैकिंग पानी, तेल और ग्रीस से खराब नहीं होता।

सेलोफेन की और भी एक खासियत है – इस पर अच्छी तरह से प्रिंटींग की जा सकती हैं। इसी कारण अंदर पैक किये गए उत्पाद या माल की जानकारी हमें मिलती है। जैवविघटनशील होने के कारण इसका उपयोग पर्यावरण अनुकूल माना जाता है। सेलोफेन के पारदर्शी कागज विविध रंग में भी मिलते है। इसी कारण शोभा बढ़ाने के लिए कई जगह इसका उपयोग किया जाता है, हम लोग हमेशा सेलोटेप या स्कौचटेप (प्रेशर सेन्सिटिव टेप) का उपयोग करते है। इस टेप को बनाने के लिए सिर्फ सेलोफेन और किसी रसायन का प्रयोग किया जाता है। वैद्यकीय उपचार पद्धति में ''डायलिसिस मशीन'' का उपयोग किया जाता हैं। इसमें डायलाझिंग बैग (व्हिस्किंग ट्युब) बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है जो सेलोफेन से बनाई जाती है। सेलोफेन से ''सेमी परमिएबल मैंब्रेन (झिल्ली)'' बनती है । इसका उपयोग जैवरसायनविज्ञान के महत्त्वपूर्ण प्रयोग करने के लिए होता है।

सेलोफेन असल में एक साधारण, फिर भी विचित्र वनस्पतिजन्य रसायन है क्योंकि इसे लकड़ी और कपास जैसे स्त्रोतों से हम प्राप्त कर सकते हैं। हर पेड़ मूलतः सेल्युलोज, हेमिसेल्युलोज और लिग्निन इन तीन प्रमुख पदार्थों से बनता है। इस में सेल्युलोज और हेमिसेल्युलोज ये दो अलग प्रकार के पॉलिसैकराईड है। सेल्युलोज पॉलिसैकराईड की चेन (श्रृंखला) में सिर्फ ग्लुकोज मोनोसैकराईड के हजारों मॉलेक्युल जुड़े हुए होते है। रसायनशास्त्र में इस बंध को बीटा 1, 4–ग्लायकोसायडिक–बॉण्ड इस नाम से जाना जाता है। इस विशेष बॉण्ड के कारण सेल्युलोज पानी में अघुलनशील है। सेल्युलोज घुलनशील करने के लिए सोडियम हायड्राक्साईड जैसे अल्कली और कार्बन डायसल्फाईड में डाला जाता है। इस पर सौम्य तेजाब और सोडियम सल्फेट का प्रयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया से द्रावण में अतिरिक्त सल्फर इकट्ठा हो जाता है। ज्यादा सल्फर हटाने के बाद सेलोफेन लचीला, चमकीला और मुलायम बनाने के लिए द्रावण पर ग्लिसरीन का प्रयोग करना आवश्यक है। इस के बाद सेलोफेन की फिल्म बनाई जाती है। इसे सेलोफेन नाम दिया गया क्योंकि यह शब्द सेल्युलोज और डायफेन इन दो शब्दों से बन गया है। डायफेन नामक ग्रीक शब्द का अर्थ है पारदर्शी।

स्विटरजरलैंड के एक वैज्ञानिक डा. जैक्स एडविन बैण्डरबर्गर को जलरोधक कपड़ा बनाना था। इस हेतु करीब दस सालों से डा. जैक्स प्रयोगशाला में काम कर रहे थे। आखिर 1912 में जलरोधक कपड़ा नहीं बना लेकिन अच्छे दर्जे का सेलोफेन तैयार हो गया। उन्होंने इस प्रौद्योगिकी का पैटेंट भी हासिल किया। सेलोफेन बनाने के लिए उन्होंने सौ साल पहले जिस संयंत्र की रचना की थी, उस में अभी तक कुछ खास बदलाव नही हुआ । तब से डा. जैक्स बहुत लोकप्रिय हो गये। उन्हें लोग ''मिस्टर सेलोफेन'' इसी नाम से जानने लगे। वर्तमान में 80% खाद्यान्न का पैकिंग सेलोफेन का होता है क्योंकि यह पूरी तरह से सुरक्षित माना जाता है। आजकल ''सेलफोन' काफी लोकप्रिय हुआ है। उसके बहुत उपयोग है। शायद इससे भी ज्यादा सेलोफेन का उपयोग पिछले सौ साल से लोग कर रहे हैं।

✦ ✦ ✦

कष्ट ही तो वह प्रेरक शक्ति है जो मनुष्य को कसौटी पर परखती है और आगे बढ़ाती है। – **वीर सावरकर**

# *क्लोनिंग - क्या एवं क्यों*

**– डॉ. बी.डी.बुलचंदानी**

क्लोनिंग एक जटिल वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा वैज्ञानिक किसी जीव/पौधे अथवा जंतु के अनुवांशिक गुणों की नकल कर उसके अनेक प्रतिरूप (क्लोन) अथवा प्रतिलिपियां प्राप्त कर सकते हैं। क्लोन शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है, जिसे सर्वप्रथम पादप विज्ञानी सर हर्बर वेबर ने 1903 ईस्वी में पौधों की विभिन्न विस्तारण तकनीकों – जिसमें तना अथवा टहनी काट कर कलम लगाना, पत्तियों के अक्ष में उपस्थित कली का अन्य पौधे पर प्रत्यारोपण शामिल हैं, के लिए किया था। वर्तमान प्रौद्योगिकी संपन्न दौर में क्लोनिंग एक व्यापक शब्द है, जिसके अलग अलग संदर्भों में अलग अलग अर्थ निहित है।

उद्यानिकी व कृषि विज्ञान के संदर्भ में क्लोनिंग से अभिप्राय ऐसी विकसित तकनीक से है जहां आर्थिक महत्व युक्त पौधों के उपयुक्त स्ट्रेन के कायिक प्रजनन द्वारा एक मूल पौधे से प्राप्त किया जाता है तथा जिसे क्लोन न कह कर वैरायटी कहा जाता है। जंतुओं में परिवर्धन जटिलताओं के कारण इस प्रकार के कायिक प्रजनन का लगभग अभाव होता है, केवल कुछ अकशेरूकी प्राणियों के शरीर के छोटे से भाग अथवा अंग से अलग होकर संपूर्ण जीव के पुनर्निमाण के उदाहरण देखने को मिलते हैं, परंतु कशेरूकी प्राणियों में यह प्रक्रिया पूर्णतः अनुपस्थित होती है तथापि कुछ अंग विशेष के नष्ट होने पर उसके पुनः उद्भवन के कुछ उदाहरण अवश्य पाये जाते हैं, लेकिन क्लोनिंग से अभिप्राय इस प्रकार से पुनउर्द्भवन से बिल्कुल अलग एक जीव का प्रतिरूप निर्मित करने से है। जबकि जैव प्रौद्योगिकी के संदर्भ में क्लोनिंग जीवों के अनुवांशिक पदार्थ डीएनए अणु के संक्षिप्त खंड के अनेक प्रतिरूप निर्मित करने की प्रक्रिया को कहा जाता है। अतः साधारण भाषा में क्लोनिंग से तात्पर्य किसी अणु, पौधे अथवा जंतु यहां तक कि मानव का भी अनुवांशिक प्रतिरूप निर्मित करना है जो कि गुणों एवं रचना में अपनी मूल कृति के समान हो।

**क्लोनिंग तकनीक का विकास –** इसका अविष्कार एवं विकास बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देखने को मिला किंतु संपूर्ण विश्व के देशों का इस ओर ध्यान आकर्षित करने का श्रेय डॉ. इयान विलमुट को जाता है, जिन्होंने 1996 में डॉली नामक भेड़ को क्लोनिंग तकनीक द्वारा उत्पन्न कर इसे समस्त विश्व के लिए चर्चा एवं चिंता का विषय बना दिया। डॉ. विलमुट के पश्चात अनेक वैज्ञानिकों ने इसी तकनीक के प्रयोग द्वारा अन्य पालतू जानवरों जैसे घोड़े, गाय, बिल्ली इत्यादि के क्लोन तैयार करने में सफलता प्राप्त की है। इस सफलता के साथ ही एक यक्ष प्रश्न भी सामने आया है कि क्या कभी मानव क्लोन का भी निर्माण किया जा सकता है अथवा क्या मानव क्लोन निर्मित करने की अनुमति प्रदान की जानी चाहिए? इस यक्ष प्रश्न पर दुनिया में घोर चिंतन एवं मंथन निर्बाध रूप से जारी है।

तथ्यात्मक रूप से क्लोनिंग एक ऐसी जनन प्रक्रिया है जिसमें लैंगिक जनन के मूल घटक, जो कि माता एवं पिता से प्राप्त दो अलग–अलग युग्मकों के संयोजन, जिसे युग्मक संयोजक (gamete fertilization) कहा जाता है, का पूर्णतः अभाव होता है । लैंगिक जनन में इसी युग्मक संयोजन के परिणामस्वरूप एक भ्रूण (Embryo) का निर्माण होता है, जिससे माता के गर्भ में परिवर्धन के फलस्वरूप शिशु का जन्म होता है। इसी युग्मक संयोजन की प्रक्रिया के कारण ही उत्पन्न होने वाली संतान अनुवांशिक तथा गुणात्मक रूप से माता एवं पिता दोनों से कुछ समानता रखते हुए भी पूर्णतः भिन्न होती है। परंतु क्लोनिंग से उत्पन्न संतति अनुवांशिक रूप से केवल एक ही अभिभावक यानि माता अथवा पिता, जिसका क्लोन उत्पन्न् कराया गया है, से पूर्ण समानता रखती है। अर्थात क्लोनिंग युग्मक संयोजन का परिणाम न हो कर एक ही कायिक कोशिका के अनुवांशिक पदार्थ अथवा डी.एन.ए., जो कि कोशिका के केंद्रक में उपस्थित होता है, के

---

जैसे सूर्योदय होते ही अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शांत हो जाती हैं।– **श्री अमृतलाल नगर**

सोमेटिक सैल न्युकिलयर ट्रांसफर (SCNT) तकनीक द्वारा विकसित किया जाता है।

SCNT तकनीक में एक वयस्क दाता कोशिका से न्यूक्लियस (केंद्रक) को पृथक कर एक नाभिकाविहीन अंडाणु (मादा से प्राप्त ऐसा अंडाणु, जिसके केंद्रक को नष्ट कर दिया गया हो) में स्थानांतरित किया जाता है फिर इसे प्रयोगशाला में संवर्धन माध्यम (culture medium) में 4-5 दिनों तक संवर्धित किया जाता है। इसमें सामान्य रूप से विभाजन होने पर इस भ्रूण को किसी उपयुक्त मादा, जिसे सरोगेट मदर कहा जाता है, के गर्भाशय में प्रतिरोपित किया जाता है। यदि माता के गर्भाशय में परिवर्धन सामान्य रूप से परिपूर्ण होता है तो इस प्रकार उत्पन्न संतान एक अभिभावक (जिससे दाता कोशिका ली गई है) से पूर्ण अनुवांशिक समानता लिए हुए होती है।

**क्लोनिंग के प्रकार –** क्लोनिंग को उसकी उपयोगिता के अधार पर मुख्यतः दो प्रकारों में विभक्त किया गया है :

1. प्रजनन क्लोनिंग (Reproductive Cloning)
2. उपचारात्मक क्लोनिंग (Therapeutic Cloning)

**1. प्रजनन क्लोनिंग (Reproductive Cloning)**

इसके द्वारा किसी जीव अथवा मानव जो कि वर्तमान या भूतकाल में जीवित किसी पशु/मानव से पूर्ण आनुवांशिक एकरूपता लिए हुए हो, की उत्पत्ति की जाती है। इसका उपयुक्त उदाहरण भेड़ डॉली एवं उसके बाद उत्पन्न हुए अनेक पशु शामिल हैं ।

**2. उपचारात्मक क्लोनिंग (Therapeutic Cloning)**

इस प्रकार की क्लोनिंग में SCNT द्वारा प्राप्त कायिक कोशिका के केंद्रक युक्त अंडाणु के विभाजन से उत्पन्न भ्रूण को सरोगेट माता के गर्भाशय में स्थानांतरित अथवा प्रतिरोपित न कर इसे प्रयोगशाला में ही संवर्धन माध्यम में पोषित एवं विभाजित किया जाता है। इसके अनेक विभाजनों के पश्चात (लगभग पांच दिन बाद) उत्पन्न ब्लास्टुला अवस्था में इसमें उपस्थित लगभग 200 सैल्स को एक दूसरे से पृथक कर भ्रूणीय स्टेम सैल (embryonic stem cell) प्राप्त की जाती है। ये स्टैम सैल्स मानवीय विकास के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन एवं अनेक गंभीर एवं कष्टपूर्ण रोगों तथा जरा अवस्था (Xeriatic) संबंधी रोगों की चिकित्सा एवं इलाज के लिए अत्यंत उपयोगी होते है।

**क्लोनिंग उपयोगिता बनाम नैतिकता :**

क्लोनिंग की तकनीक का उपयोग पशुपालन, मांस उद्योग के अतिरिक्त औषधीय उत्पादन व अनुसंधान एवं लुप्तप्राय पशु पक्षियों के संरक्षण आदि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है किंतु कुछ विस्तृत एवं नए शोध इस बात की ओर भी इशारा करते हैं कि क्लोन पशुओं में अनुवांशिक बीमारियों एवं जन्मजात विकलांगता के केस सामान्य से अधिक पाये गये हैं। क्लोन भेड़ डॉली की असमय मृत्यु एक छोटी आयु में ही जरा अवस्था के रोगों के परिलक्षित होने के अनुमान को पुष्ट करती है। हालांकि डॉ. विलमुट इस बात से इंकार करते हैं और वे डॉली की मृत्यु को समान्य एवं प्राकृतिक मृत्यु करार देते है।

इसके अतिरिक्त क्लोनिंग के द्वारा जेनेटिकली मॉडीफाइड पशुओं का निर्माण भी एक अन्य पहल है, जिसके द्वारा मानव रोगों में काम में आने वाली कुछ महत्वपूर्ण औषधियों जैसे इंसुलिन, ग्रोथ हारमोन, हीमोफीलिया फैक्टर आदि का गाय अथवा अन्य किसी पालतू पशु में उत्पादन संभव हो सकेगा। इन औषधियों को पशुओं से प्राप्त दूध से सुगमता से पृथक कर उपयोग में लाया जा सकेगा। इस तकनीक को ड्रग फार्मिंग नाम दिया गया है। इसके द्वारा दवा कंपनियां आसानी से और कम लागत पर उच्च कोटि की दवाएं निर्मित एवं उपलब्ध करा सकेंगी। किंतु फार्मिंग के लिए क्लोन किए गए पशुओं के मांस व दूध के अनजाने में मानव खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर जाने के खतरे से भी इंकार नहीं किया जा सकता है।

क्लोनिंग द्वारा विलुप्त एवं विलुप्त प्राय प्रजातियों का क्लोन निर्माण कर इन्हें संरक्षित करना अनेक दशकों से वैज्ञानिकों का स्वप्न रहा है। शोधकर्ता विशाल पांडा, ओसीलोट चीता एवं अन्य दुर्लभ एवं विलुप्त पक्षियों के क्लोन निर्माण का प्रयास कर रहे हैं,

केवल कर्महीन ही ऐसे होते हैं, जो सदा भाग्य को कोसते हैं और जिनके पास शिकायतों का अंबार होता है।

**– श्री जवाहर लाल नेहरू**

जिनके जीन एवं उत्तक पूल का भंडारण फ्रोजन अवस्था में संरक्षित है। यह एक वैचारिक मुद्दा है, अनेक जैविक संरक्षणविद् एवं पर्यावरणविद् इसका जोरदार विरोध कर रहे हैं।

पिछले दो दशकों से मानव क्लोनिंग एक विवादास्पद एवं निरंतर चर्चा तथा घोर मतभेद का विषय बना हुआ है। विश्व भर के अनेक वैज्ञानिक, शासकीय व धार्मिक संगठन इस बात पर एकमत है कि मानव क्लोनिंग को केवल उपचारात्मक क्लोनिंग तक ही सीमित रखा जाना चाहिए तथा प्रजनन क्लोनिंग द्वारा मानव क्लोन निर्माण को पूर्णतः प्रतिबंधित रखा जाना चाहिए। इस विषय पर वैज्ञानिकों तथा नीति निर्धारकों के बीच मंथन सतत रूप से जारी है एवं एक सर्वसम्मत निर्णय पर पहुंचने के प्रयास किये जा रहे है।

यद्यपि प्रजनन क्लोनिंग का समर्थन करने वाले वैज्ञानिकों की संख्या कम है किंतु उनका तर्क है कि प्रजनन क्लोनिंग तकनीक के विकास द्वारा सजातीय मानव अंगों को उत्पन्न कर उनकी कमी को हमेशा के लिए दूर किया जा सकता है। प्रजनन क्लोनिंग एवं उपचारात्मक क्लोनिंग के आंशिक मिलन द्वारा ऐसे प्राकृतिक अंगों के उत्पादन की सैद्धांतिक संभावना है, जिसे एक नए प्रकार की क्लोनिंग 'प्रतिस्थापन क्लोनिंग' भी कहा जा सकता है। किंतु इसको लेकर भी अनेक गंभीर नैतिक चिंताएं जाहिर की गई है, अतः कुछ वैज्ञानिक इन्हें मानव शरीर से पृथक किसी अन्य जीव के शरीर में विकसित करने की संभावनाओं को भी तलाश कर रहे हैं। जिसके अंतर्गत मानव शरीर द्वारा स्वीकारणीय अंगों को अन्य जीवों जैसे सुअर अथवा गाय के शरीर में विकसित कराया जा सकें और फिर उन्हें मानव शरीर में प्रत्यारोपित किया जा सकें, जिसे जीनोट्रांसप्लांट कहा गया है।

उपचारात्मक क्लोनिंग का समर्थन करने वाले वैज्ञानिक इस बात को लेकर आशान्वित हैं कि एक दिन इसके द्वारा उत्पन्न एंब्रोयोनिक स्टैम सैल की कोशिकायें (जो कि अनुवांशिक तौर पर किसी रोगी से पूर्णतः मेल खाती होंगी) अनेक रोगों जैसे इंसूलिन डिपेंडेट डायबिटीज, पर्किसन्स एवं अल्जाइमर्स रोग, लिवर व किडनी के साथ ही दुर्घटनाओं में लगने वाली मस्तिष्क एवं स्पाइनल कार्ड की विकलांगता के संपूर्ण इलाज में कारगर भूमिका निभा सकती है। इन कोशिकाओं या इनसे उत्पन्न किसी अंग/उत्तक द्वारा उपचार के दौरान इम्यून रिजेक्शन की संभावना भी नगण्य हो जाएगी । इस इम्यून रिजेक्शन की वजह से ही वयस्क स्टैम सैल द्वारा चिकित्सा तथा अंग प्रत्यारोपण एक जटिल तथा जोखिम से भरपूर प्रक्रिया हो जाती है। इसके अतिरिक्त इस संभावना पूर्ण चिकित्सा के लिए SCNT तकनीक द्वारा मानव भ्रूण का निर्माण करना भी एक जटिल तथा नैतिकता को चुनौती देने वाला कार्य है। उपचारात्मक क्लोनिंग द्वारा प्राप्त स्टैम सैल चिकित्सा की इस पद्धति को अधिक सफलता प्राप्त नहीं हुई है, फिर भी विश्व के अनेक शोध संस्थानों में यह प्रयोगात्मक अवस्था से गुजर रही है।

अतः वर्तमान जैव प्रौद्योगिकी के इस दौर में क्लोनिंग तकनीक में हुए विकास का प्रभाव मुख्य रूप से पशुओं (केवल पालतू उपयोगी पशुओं) तक ही सीमित है। मानव क्लोनिंग की उत्पत्ति के विषय में अनेक सामाजिक एवं कानूनी पहलुओं पर गौर करना होगा और यह बहुत दूर की बात है। साथ ही वैश्विक दवाब के चलते अमेरिकन एसोसिएशन फॉर एडवांसमेंट ऑफ सांइस तथा विश्व के अन्य वैज्ञानिक संगठनों ने सार्वजनिक वक्तव्यों के द्वारा सुझाव दिया है कि प्रजनन क्लोनिंग को तब तक के लिए प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिए जब तक इसके प्रयोग द्वारा उत्पन्न् सामाजिक, आर्थिक, कानूनी तथा सुरक्षा संबंधी मुद्दे सुलझा न लिए जाएं।

✦ ✦ ✦

साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है परंतु एक नया वातावरण देना भी है। – **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

# अनुसंधान विषयक यात्रा - 2

**डॉ. श्रीमती शुचिश्वेता केंदूरकर,** वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

''अनुसंधान एवं विकास विषयक यात्रा–1 नामक लेख एनसीएल आलोक वर्ष 2009 के अंक में प्रकाशित किया गया था, जिसमें साल्वेडोरा परसिका नामक पेड़ से संबंधित अनुसंधान यात्रा और अनुभवों का वर्णन किया गया था। इस अंक में अनुसंधान संबंधी संस्मरणों का भाग 2 प्रस्तुत है, जो नारियल के वृक्ष से संबंधित अनुसंधान कार्यों और इस यात्रा में प्राप्त हुए अनुभवों को अपने आप में समेटे हुए है।

यह घटनाक्रम सन् 1981 - 82 साल का है जब ऊत्तक संवर्धन विभाग में नारियल पर संशोधन किया जा रहा था। ऊत्तक संवर्धन में आमतौर पर शाखा कलिकाओं के द्वारा Multiplication करके एक शाखा कलिका से लाखों पौधें, जो कि मातृरूप होते हैं, बनाये जा सकते है। इस विधि को सूक्ष्म संवर्धन/Micropropagation कहा जाता है। नारियल से पहले सागवान, नीलगिरि वृक्ष, हल्दी, अदरक, इलायची जैसे पौधों पर यह विधि हमारे विभाग में विकसित की गई थी परंतु नारियल के वृक्ष में यह शाखा कलिका विधि उपयोगी नहीं थी क्योंकि नारियल के वृक्ष की संरचना में केवल एक ही growing tip होता है। वैसे जड़ों पर भी tips होते हैं किंतु जड़ों पर यह विधि प्रभावी नहीं रही। विश्व भर में इस कार्य में सफलता नहीं मिली थी अतः यह अत्यंत आवश्यक था कि Apical Meristem Material संशोधन के लिए उपलब्ध हो ।

इस दिशा में हमने कई जगहों पर पत्र व्यवहार किया, आखिरकार हमें पता चला कि नारियल संशोधन संस्था भाटे, रत्नागिरि में इस प्रकार का मटेरियल मिल सकता है। किंतु इसे तुरंत ग्रोथ मिडियम में रखा जाना आवश्यक था अन्यथा यह काला पड़ जाता है। इस तरह इस आवश्यकता के कारण चलित प्रयोगशाला का विचार हम लोगों के मन में आया । उस जमाने में हम लोग एल्युमिनियम के इंसुलेशन हुड का इस्तेमाल करते थे, जिसमें ऊपर से कांच लगी रहती थी और सामने से दोनों हाथों को हुड में जाने के लिए छिद्र बने हुए थे। जंतु विरहित पदार्थ/ germ free material को हुड्स में स्टेराइल ग्रोथ मिडियम में प्रतिरोपित किया जाता था। इस कार्य के लिए की जाने वाली यात्रा के लिए हमने कांच की जगह पर्सपेक्स शीट लगवाई, ताकि टूट–फूट न हो।

इसके साथ ही मीडियम तैयार करके 10-10 के बंडलों में पैक किया गया । बाकी अन्य आवश्यक सामान भी साथ में लिया गया। उस समय में हमारे यहां हरे रंग की मेटाडोर हुआ करती थी। उसके पिछले हिस्से में एक छोटी प्रयोगशाला सजाई जाती थी और हम तीन–चार संशोधक अपना थोड़ा–थोड़ा सामान लेकर सफर करते थे। पुणे से सुबह जल्दी रवाना होते थे, दोपहर में कोल्हापुर में खाना खाते थे और शाम ढलने पर हम रत्नागिरि पहुंचते थे। वहां पीडबल्यूडी के एक अतिथिगृह में हम रूकते थे, जिसके एक कक्ष में हमारी प्रयोगशाला सजती थी।

हम अपने संशोधन कार्य के लिए 20 लीटर के कैन में डिस्टिल्ड वाटर लेकर जाते थे। एक बार पुणे से रत्नागिरि जाते समय रास्ते में एक कैन लीक होने लगी। हमने गाड़ी रोकी तो पता चला कि उस कैन में नीचे की ओर एक छोटा सा छिद्र हो गया है, जिससे डिस्टिल्ड वाटर बह रहा था। हमें अंदाजा हो गया कि रत्नागिरि पहुंचने तक तो शायद पूरी कैन ही खाली हो जाएगी । उस दौर में डिस्टिल्ड वाटर हर जगह मिलना बड़ा मुश्किल था। अब हम लोगों को बड़ी चिंता होने लगी कि क्या किया जाए। फिर हम सबने विचार किया कि अगर कहीं इस प्रकार की एक कैन मिल जाए तो डिस्टिल्ड वाटर उसमें डाल कर ले जाया सकता है। यह विचार मन में आते ही हम सबने रास्ते में नजर दौड़ाना आरंभ किया । तभी रास्ते पर हमें एक किसान जाता हुआ दिखाई दिया। हमने उसे अपनी समस्या बताई तथा उससे पूछा कि क्या यहां आस–पास कोई दूकान है, जिसमें ऐसी कैन मिल सकें । उसने हमारी समस्या को अच्छी तरह से सुनकर कुछ विचार किया, फिर बोला कि इस कैन का ढक्कन तो अच्छी तरह से बैठता है ना। हमने हां में जवाब दिया तो वह बोला– 'फिर क्या समस्या है। इस कैन को उल्टा कर दो और छेद में ऊपर की ओर से सैलोटैप लगा दो। नई कैन खरीदने की क्या जरूरत है'। हम सब उसका उत्तर सुनकर हक्के बक्के होकर उस आदमी को देखते रहे कि अरे! यह तो ऐसे ही किस्सा हो गया जैसे कि एक वैज्ञानिक के साथ हुआ था

बुद्धिमान व्यक्ति को जितने अवसर मिलते हैं उससे अधिक वह स्वयं बनाता है''। – **फ्रांसिस बेकन**

कि एक छेद में से बिल्ली और उसका बच्चा कैसे जा सकता है, उन्हें यह समझ नहीं आया था। खैर, उस किसान को बहुत धन्यवाद देकर हमने उस तरकीब से डिस्टिल्ड वाटर सुरक्षित किया और आगे बढ़े।

उन दिनों हमें नारियल संशोधन केंद्र भाटे, रत्नागिरि जाने के लिए नाव में सवार होकर जाना पड़ता था, क्योंकि यह केंद्र समुद्र के बीच में एक टापू पर स्थित था। अभी वहां पर आने –जाने के लिये पुल बन गया है। हम लोग उस केंद्र में सुबह–सुबह जाकर दोपहर तक मटेरियल लेकर अतिथि गृह पहुंच जाते थे और दोपहर के भोजन के पश्चात बारी–बारी से परखनलियों में प्रतिरोपण करते थे। कभी कभी देर रात तक यह काम चलता रहता था। हम सब के लिए वह मटेरियल अत्यंत मूल्यवान था और उसका कोई भाग हम गँवाना नहीं चाहते थे। बाद में हम सब लोग मिल कर पैकिंग करते थे। कभी कभी देर रात तक यह काम चलता रहता था और दूसरे दिन वहां से आने के बाद अगले हफ्ते तक उस मटेरियल को ताजे ग्रोथ मिडियम पर स्थानांतरित करना, उसकी देखभाल करना इत्यादि कार्य जारी रहते थे।

इस तरह हमारी पहली विजिट में हमने जो मटेरियल लाया था उसमें से हमें mature leaf tissue और inflorescence से somatic emlyogenesis मिला, जो कि एक विश्व स्तरीय उपलब्धि थी। इसके बाद की अगली विजिट्स में हमने इस संशोधन को प्रस्थापित किया । इन परिणामों पर आगे शोध पत्र एवं डीबीटी के कई प्रोजेक्टस प्राप्त हुए। डीबीटी द्वारा एनसीएल पीटीसी ग्रुप को मिला यह सर्वप्रथम प्रोजेक्ट था। इस विषय पर आगे डॉ. जेनेट ब्लेक (Dr. Jennet Blak, wye college, uk) के साथ भी ALIS LINK PROGRAMME के तहत Collaborative project भी लिया गया । बाद में हमने नारियल के पेड़ से मटेरियल एकत्र करने के लिए नॉन–डिस्ट्रक्टिव विधि विकसित की जिसमें पेड़ को नुकसान पहुंचाए बिना हमें मटेरियल मिल सकता था।

इस तरह से हमारा रत्नागिरि यात्रा सत्र समाप्त हो गया, पर आज भी उस परियोजना से जुड़ी सुनहरी यादें मनःपटल में ताजा है और हमें सुखद एहसास दिलाती है।

✦ ✦ ✦

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के निधन के बाद उनके शिष्य स्वामी विवेकानंद तीर्थयात्रा के लिए निकले। कई दिन तक दर्शन करते हुए काशी आए और विश्वनाथ के मंदिर में पहुंचे । दर्शन करके बाहर आए तो देखते हैं कि कुछ बंदर इधर से उधर चक्कर लगा रहे हैं । स्वामीजी जैसे ही आगे बढ़े कि बंदर उनके पीछे पड़ गए। उन दिनों स्वामीजी लंबा अंगरखा पहना करते थे और सिर पर साफा बांधते थे। विद्या प्रेमी होने के कारण उनकी जेबें किताबों और कागजों से भरी रहती थीं। बंदरो को भ्रम हुआ कि उनके जेबों में खाने की चीजें हैं। अपने पीछे बंदरो को आते देखकर स्वामीजी डर गए और तेज चलने लगे । बंदर भी तेजी से पीछा करने लगे। स्वामीजी ने दौड़ना शुरू किया । बंदर भी दौड़ने लगे । स्वामीजी अब क्या करें? बंदर उन्हें छोड़ने को तैयार ही नहीं थे। स्वामीजी का बदन थर–थर कांपने लगा। वे पसीने से नहा गए। लोग तमाशा देख रहे थे, पर कोई भी उनकी सहायता नहीं कर रहा था। तभी एक ओर से बड़े जोर की आवाज आई– 'भागो मत!' ज्यों ही ये शब्द स्वामीजी के कानों में पड़े, उन्हें बोध हुआ कि विपत्ति से डरकर जब हम भागते हैं तो वह और तेजी से हमारा पीछा करती है। अगर हम हिम्मत से उसका सामना करें तो वह मुंह छिपाकर भाग जाती है। फिर क्या था, स्वामीजी निर्भीकता से खड़े हो गए, बंदर भी खड़े हो गए। थोड़ी देर खड़े रहकर वे लौट गए। उस दिन से स्वामीजी के जीवन में नया मोड़ आ गया। उन्होंने समाज में जहां कहीं बुराई देखी उससे कतराए नहीं, हौसले से उसका मुकाबला किया।

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिये ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है।

**– महात्मा गांधी**

# ''हमारा गौरवशाली प्राचीन वैमानिक शास्त्र'' - गहन शोध का मोहताज़

**श्री. सुरेश चिपलुनकर**

सभी विद्वानों में कम से कम इस बात को लेकर दो राय नहीं हैं कि महर्षि भारद्वाज द्वारा वैमानिकी शास्त्र लिखा गया था। इस शास्त्र की रचना के कालखंड को लेकर विवाद किया जा सकता है, लेकिन इतना तो निश्चित है कि जब भी यह लिखा गया होगा, उस समय तक हवाई जहाज़ के अविष्कार करने का दम भरने वाले ''राईट ब्रदर्स'' की पिछली दस-बीस पीढ़ियाँ पैदा भी नहीं हुई होंगी। यहां पर हम संक्षिप्त में देखेंगे कि महर्षि भारद्वाज लिखित ''वैमानिकी शास्त्र'' पर विचार किया जाना आवश्यक क्यों है.... इसको सिरे से खारिज क्यों नहीं किया जा सकता।

**प्राचीन ग्रंथों से प्राप्त विमान आकृति का चित्र**

जब भी कोई नया शोध या खोज होती है, तो उस अविष्कार का श्रेय सबसे पहले उस ''विचार'' को दिया जाना चाहिए, उसके बाद उस विचार से उत्पन्न हुए अविष्कार के सबसे पहले उस ''प्रोटोटाइप'' को महत्त्व दिया जाना चाहिए। लेकिन राईट बंधुओं के मामले में ऐसा नहीं किया गया। हमारे भारत के शिवकर बापूजी तलपदे ने इसी वैमानिकी शास्त्र का अध्ययन करके सबसे पहले विमान बनाया था, जिसे वे सफलतापूर्वक 1500 फुट की ऊँचाई तक भी ले गए थे, हाल ही में इस विषय पर एक फिल्म भी आई है। फिर जिस ''आधुनिक विमान'' की बात की जाती है, उसमें महर्षि भारद्वाज न सही शिवकर तलपदे को सम्मानजनक स्थान हासिल क्यों नहीं है? क्या सबसे पहले विमान की अवधारणा सोचना और उस पर काम करना अद्भुत उपलब्धि नहीं है? क्या इस पर गर्व नहीं होना चाहिए? क्या इसके श्रेय हेतु दावा नहीं करना चाहिए?

अंग्रेज शोधकर्ता डेविड हैचर चिल्ड्रेस अपने लेख Technology of the Gods - The Incredible Sciences of the Ancients (Page 147-209) में लिखते हैं कि 'हिन्दू एवं बौद्ध सभ्यताओं में हजारों वर्ष से लोगों ने प्राचीन विमानों के बारे सुना और पढ़ा है। महर्षि भारद्वाज द्वारा लिखित ''यन्त्र-सर्वस्व'' में इसे बनाने की विधियों के बारे में विस्तार से लिखा गया है। इस ग्रन्थ को चालीस उप-भागों में बाँटा गया है, जिसमें से एक है ''वैमानिक प्रकरण'', जिसमें आठ अध्याय एवं पाँच सौ सूत्र वाक्य हैं। महर्षि भारद्वाज लिखित ''वैमानिक शास्त्र'' की मूल प्रतियाँ मिलना तो अब लगभग असंभव है, परन्तु सन् 1952 में महर्षि दयानंद के शिष्य स्वामी ब्रह्ममुनी परिव्राजक द्वारा इस मूल ग्रन्थ के लगभग पाँच सौ पृष्ठों को संकलित एवं अनुवादित किया गया था, जिसकी पहली आवृत्ति फरवरी 1959 में गुरूकुल कांगड़ी से प्रकाशित हुई थी। इस आधी-अधूरी पुस्तक में भी कई ऐसी जानकारियाँ दी गई हैं, जो आश्चर्यचकित करने वाली हैं।

इसी लेख में डेविड हैचर लिखते हैं कि 'प्राचीन भारतीय विद्वानों ने विभिन्न विमानों के प्रकार, उन्हें उड़ाने सबंधी ''मैनुअल'', विमान प्रवास की प्रत्येक संभावित बात एवं देखभाल आदि के बारे में जानकारियां विस्तार से ''समर सूत्रधार'' नामक ग्रन्थ में लिखी हैं। इस ग्रन्थ में लगभग 230 सूत्रों एवं पैराग्राफ की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ हैं।' डेविड आगे कहते हैं कि 'यदि यह सारी बातें उस कालखंड में लिखित एवं विस्तृत

जीवन लम्बा होने की बजाय महान होना चाहिए – **डॉ. बी. आर. अम्बेडकर**

स्वरूप में मौजूद थीं तो क्या ये कोरी गल्प थीं? क्या किसी ऐसी ''विशालकाय वस्तु'' की भौतिक मौजूदगी के बिना यह सिर्फ कपोल कल्पना हो सकती है?' परन्तु भारत के परम्परागत इतिहासकारों तथा पुरातत्ववेत्ताओं ने इस ''कल्पना'' (?) को भी सिरे से खारिज करने में कोई कसर बाकी न रखी । एक और अंग्रेज लेखक एंड्रयू टॉमस लिखते हैं कि 'यदि ''समर सूत्रधार'' जैसे वृहद एवं विस्तारित ग्रन्थ को सिर्फ कल्पना भी मान लिया जाए, तो यह निश्चित रूप से अब तक की सर्वोत्तम कल्पना या ''फिक्शन उपन्यास'' माना जा सकता है।' टॉमस सवाल उठाते हैं कि रामायण एवं महाभारत में भी कई बार ''विमानों'' से आवागमन एवं विमानों के बीच पीछा अथवा उनके आपसी युद्ध का वर्णन आता है। इसके आगे मोहन जोदड़ों एवं हडप्पा के अवशेषों में भी विमानों के भित्तिचित्र उपलब्ध है। इसे सिर्फ काल्पनिक कहकर खारिज नहीं किया जाना चाहिए था।

इन लुप्त हो चुके शास्त्रों, ग्रंथों एवं अभिलेखों की पुष्टि विभिन्न शोधों द्वारा की जानी चाहिए थी कि आखिर यह तमाम ग्रन्थ और संस्कृत की विशाल बौद्धिक सामग्री कहाँ गायब हो गई? ऐसा क्या हुआ था कि एक बड़े कालखण्ड के कई प्रमुख सबूत गायब हैं? क्या इनके बारे में शोध करना, तथा तत्कालीन ऋषि–मुनियों एवं प्रकाण्ड विद्वानों ने यह ''कथित कल्पनाएँ'' क्यों की होंगी? कैसे की होंगी ? उन कल्पनाओं में विभिन्न धातुओं के मिश्रण अथवा अंतरिक्ष यात्रियों के खान–पान सम्बन्धी जो नियम बनाए हैं वह किस आधार पर बनाए होंगे, यह सब जानना जरूरी नहीं था?

ऑक्सफोर्ड वि.वि. के ही एक संस्कृत प्रोफेसर वीआर रामचंद्र दीक्षितार अपनी पुस्तक ''वार इन द एन्शियेंट इण्डिया इन 1944" में लिखते हैं कि आधुनिक वैमानिकी विज्ञान में भारतीय ग्रंथों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने बताया कि सैकड़ों गूढ चित्रों द्वारा प्राचीन भारतीय ऋषियों ने पौराणिक विमानों के बारे में लिखा हुआ है? दीक्षितार आगे लिखते हैं कि राम–रावण के युद्ध में जिस ''सम्मोहनास्त्र'' के बारे में लिखा हुआ है, पहले उसे भी सिर्फ कल्पना ही माना गया, लेकिन आज की तारीख में जहरीली गैस छोड़ने वाले विशाल बम हकीकत बन चुके है। पश्चिम के कई वैज्ञानिकों ने प्राचीन संस्कृत एवं मोड़ी लिपि के ग्रंथों का अनुवाद एवं गहन अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि निश्चित रूप से भारतीय मनीषियों/ऋषियों को वैमानिकी का वृहद ज्ञान था।

इसी प्रकार कलकत्ता संस्कृत कॉलेज के संस्कृत प्रोफेसर दिलीप कुमार कांजीलाल ने 1979 में Ancient Astronaut Society की म्यूनिख (जर्मनी) में सम्पन्न छठवीं काँग्रेस के दौरान उड़ सकने वाले प्राचीन भारतीय विमानों के बारे में एक उद्बोधन दिया एवं शोधपत्र प्रस्तुत किया था। प्रोफेसर कांजीलाल के अनुसार ईसा पूर्व 500 में ''कौसितकी'' एवं ''शतपथ ब्रह्मण'' नामक कम से कम दो और ग्रन्थ थे, जिसमें अंतरिक्ष से धरती पर देवताओं के उतरने का उल्लेख है। यजुर्वेद में उड़ने वाले यंत्रों को ''विमान''नाम दिया गया, जो ''अश्विन'' उपयोग किया करते थे। इसके अलावा भागवत पुराण में भी ''विमान'' शब्द का कई बार उल्लेख हुआ हैं, ऋग्वेद में ''अश्विन देवताओं'' के विमान संबंधी विवरण बीस अध्यायों (1028 श्लोकों) में समाया हुआ है, जिसके अनुसार अश्विन जिस विमान से आते थे, वह तीन मंजिला, त्रिकोणीय एवं तीन पहियों वाला था एवं यह तीन यात्रियों को अंतरिक्ष में ले जाने में सक्षम था। प्रो. कांजीलाल के अनुसार, आधे–अधूरे स्वरूप में हासिल हुए वैमानिकी संबंधी इन संस्कृत ग्रंथों में उल्लिखित धातुओं एवं मिश्रणों का सही एवं सटीक अनुमान तथा अनुवाद करना बेहद कठिन है, इसलिए इन पर कोई विशेष शोध भी नहीं हुआ। ''अमरांगण–सूत्रधार'' ग्रन्थ के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, यम, कुबेर एवं इंद्र के अलग – अलग पाँच विमान थे। आगे चलकर अन्य ग्रंथों में इन विमानों के चार प्रकार रुक्म, सुंदरा, त्रिपुर एवं शकुन के बारे में भी वर्णन किया गया है, जैसे कि ''रुक्म'' शंक्वाकार विमान था जो स्वर्ण जड़ित था, जबकि ''त्रिपुर विमान'' तीन मंजिला था। महर्षि भारद्वाज रचित ''वैमानिकी शास्त्र'' में यात्रियों के लिए ''अभ्रक युक्त'' (माईका) कपड़ों के बारे में बताया गया है, और जैसा कि हम जानते हैं आज भी अग्निरोधक सूट में माईका अथवा सीसे का उपयोग होता है, क्योंकि यह ऊष्मारोधी है।

भारत के मौजूदा मानस पर पश्चिम का रंग कुछ इस कदर चढ़ा है कि हममें से अधिकांश अपनी खोज या किसी रचनात्मक उपलब्धि पर विदेशी ठप्पा लगते देखना चाहते हैं। इसके बाद हम एक विशेष गर्व अनुभव करते हैं। ऐसे लोगों के लिए मैं प्राचीन भारतीय विमान के सन्दर्भ में एरिक वॉन डेनिकेन की खोज के बारे में बता रहा हूँ, उससे पहले एरिक वॉन डेनिकेन का परिचय जरुरी

है। 79 वर्षीय डेनिकेन एक खोजी और बहुत प्रसिद्ध लेखक हैं। उनकी लिखी किताब 'चेरिएट्स ऑफ द गॉड्स' बेस्ट सेलर रही हैं। डेनिकेन की खूबी हैं कि उन्होंने प्राचीन इमारतों और स्थापत्य कलाओं का गहन अध्ययन किया और अपनी थ्योरी से साबित किया है कि पूरे विश्व में प्राचीन काल में एलियंस (परग्रही) पृथ्वी पर आते–जाते रहे हैं। एरिक वॉन डेनिकेन 1971 में भारत में कोलकाता गए थे। वे अपनी 'एशिएंट एलियंस थ्योरी' के लिए वैदिक संस्कृत में कुछ तलाशना चाहते थे। डेनिकेन यहाँ के एक संस्कृत कालेज में गए। यहाँ उनकी मुलाकात इन्हीं प्रोफेसर दिलीप कांजीलाल से हुई थी। प्रोफेसर कांजीलाल ने प्राचीन भारतीय ग्रंथों का आधुनिकीकरण किया है। देवताओं के विमान यात्रा वृत्तांत ने वॉन को खासा आकर्षित किया। वॉन ने माना कि ये वैदिक विमान वाकई में नटबोल्ट से बने असली एयर क्राफ्ट थे। उन्हें हमारे मंदिरों के आकार में भी विमान दिखाई दिए। उन्होंने जानने के लिए लम्बे समय तक शोध किया कि भारत में मंदिरों का आकार विमान से क्यों मेल खाता है? उनके मुताबिक भारत के पूर्व में कई ऐसे मंदिर हैं जिनमें आकाश में घटी खगोलीय घटनाओं का प्रभाव साफ दिखाई देता है। वॉन के मुताबिक ये खोज का विषय है कि आखिरकार मंदिर के आकार की कल्पना आई कहाँ से? इसके लिए विश्व के पहले मंदिर की खोज जरूरी हो जाती है और उसके बाद ही पता चल पायेगा कि विमान के आकार की तरह मंदिरों के स्तूप या शिखर क्यों बनाये गए थे? हम आज उसी उन्नत तकनीक की तलाश में जुटे हैं जो कभी भारत के पास हुआ करती थी। अमरांगण–सूत्रधार में 113 उपखंडों में इन चारों विमान प्रकारों के बारे में पायलट ट्रेनिंग, विमान की उड़ान का मार्ग तथा इन विशाल यंत्रों के भिन्न–भिन्न भागों का विवरण आदि बारीक से बारीक जानकारी दी गई है। भीषण तापमान सहन कर सकने वाली सोलह प्रकार की धातुओं के बारे में भी इसमें बताया गया है, जिसे चाँदी के साथ ही अनुपात में ''रस'' मिलाकर बनाया जाता है (इस ''रस'' शब्द के बारे में किसी को पता नहीं है कि आखिर यह रस क्या है? कहाँ मिलता है या कैसे बनाया जाता है)। ग्रन्थ में इन धातुओं का नाम ऊष्णन्भरा, ऊश्नप्पा, राज्मालात्रित जैसे कठिन नाम है, जिनका अंग्रेजी में अनुवाद अथवा इन शब्दों के अर्थ अभी तक किसी को समझ में नहीं आए हैं। पश्चिम प्रेरित जो कथित बुद्धिजीवी बिना सोचे–समझे भारतीय संस्कृति एवं ग्रंथों की आलोचना करते एवं मजाक उड़ाते हैं, उन्होंने कभी भी इसका जवाब देने अथवा शब्दों के अर्थ में खोजने की कोशिश नहीं की, कि आखिर विमान शास्त्र के बारे में जो इतना कुछ लिखा है क्या उसे सिर्फ काल्पनिकता कहकर खारिज करना चाहिए?

एक और पश्चिमी लेखक जीआर जोसियर ने अपने एक लेख (The Pilot is one who knows the secrets) में वैमानिकी शास्त्र से संबद्ध एक अन्य ग्रन्थ ''रहस्य लहरी'' से उद्धृत किया है कि प्राचीन भारतीय वैमानिकी शास्त्र में पायलटों को बत्तीस प्रकार के रहस्य ज्ञात होना आवश्यक था। इन रहस्यों में से कुछ का नाम इस प्रकार है – गूढ़, दृश्य, विमुख, रूपार्कषण, स्तब्धक, चपल, पराशब्द ग्राहक आदि। जैसा कि इन सरल संस्कृत शब्दों से ही स्पष्ट हो रहा है कि यह तमाम रहस्य या ज्ञान पायलटों को शत्रु विमानों से सावधान रहने तथा उन्हें मार गिराने के लिए दिए जाते थे। ''शौनक'' ग्रन्थ के अनुसार अंतरिक्ष को पाँच क्षेत्रों में बाँटा गया था – रेखापथ, मंडल, कक्षाय, शक्ति एवं केन्द्र। इसी प्रकार इन पाँच क्षेत्रों में विमानों की उड़ान हेतु 5,19,800 मार्ग निर्धारित किए गए थे। यह विमान सात लोकों में जाते थे जिनके नाम हैं– भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महालोक, जनोलोक, तपोलोक एवं सत्यलोक। जबकि ''धुंडीनाथ एवं वाल्मीकी गणित'' के अनुसार विमानों के उड़ान मार्ग 7,03,00,800 निर्धारित किए गए थे, जिसमें से ''मंडल'' में 20,08,00,200 मार्ग, कक्षाय में 2,09,00,300 मार्ग, शक्ति में 10,01,300 मार्ग तथा केन्द्र 30,08, 200 में मार्ग निर्धारित किए गये थे।

कहने का तात्पर्य सिर्फ इतना है कि ''वैमानिकी शास्त्र'' एवं प्राचीन ग्रंथों में भारतीय विमान विज्ञान की हँसी उड़ाने, खारिज करने एवं सत्य को षड्यंत्रपूर्वक दबाने की कोशिशें बन्द होनी चाहिए एवं इस दिशा में गंभीर शोध प्रयास किए जाने चाहिए।

✦ ✦ ✦

दुनिया वैसी ही है जैसा हम इसके बारे में सोचते हैं। यदि हम अपने विचारों को बदल सकें, तो हम दुनिया को बदल सकते हैं।''

**–एच. एम. टोमलिंसन**

# राजभाषा आलोक

# दिग्विजय के लिए संकल्पों के पंखों पर आरुढ़ हिन्दी

**डॉ. केशव फालके**

विगत अनेक दशकों की बीहड़ यात्रा पार करते हुए हिन्दी ने आज विश्व के शताधिक देशों में अपना पुख्ता अस्तित्व दर्ज कराया है। अध्ययन–अध्यापन, लेखन, अनुसंधान, पत्र–पत्रिकादि प्रकाशन इत्यादि क्षेत्रों में आशातीत सफलता का परिचय देते हुए हिन्दी आज विश्व भाषा के पद पर आरूढ़ होने की प्रबलतम दावेदार है, संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टियों से । हिन्दी की इसी लोकप्रियता के मद्देनजर ''राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' वर्धा की कार्यकारिणी ने हिन्दी को दैदिप्यमान समृद्धि के अवसर उपलब्ध करा देने के उद्देश्य से 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' का महत्वाकांक्षी निर्णय लिया। समिति के तत्कालीन अध्यक्ष श्री मधुकरराव चौधरी और गांधीवादी चिंतक और हिन्दी के प्रख्यात लेखक पद्मश्री अनंत गोपाल शेवड़े ने तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और भूदान महर्षि आचार्य बिनोबा भावे से आर्शीवाद और सक्रिय सहयोग का आश्वासन प्राप्त करके 1975 में नागपुर में **''प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन''** का सफल आयोजन किया। अब तक विश्व के विभिन्न देशों में नौ सम्मेलनों के आयोजन हो चुके हैं। इसी क्रम में सितम्बर 2015 में दसवें सम्मेलन की घोषणा हो चुकी है। गत नौ सम्मेलनों की सम्पन्नता के वर्ष और स्थान अग्रांकित स्वरूप में हैं। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 1975 (नागपुर), द्वितीय 1976 (मॉरीशस),तृतीय 1983 (नई दिल्ली), चतुर्थ 1993 (मॉरीशस), पंचम 1996 (त्रिनिदाद), षष्ठम 1999 (लंदन),सप्तम् 2003 (सूरीनाम),अष्ठम् 2007 (न्यूयार्क), नवम् 2012 (जोहाँसबर्ग–दक्षिण अफ्रिका), दशम् 2015 (भोपाल–मध्यप्रदेश, प्रस्तावित–घोषित)

नागपुर में सम्पन्न 'प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन' में प्रमुख अतिथि मॉरीशस के तत्कालीन प्रधान मंत्री सर शिवसागर रामगुलाम और भारत की तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में हिन्दी के विकास के लिए अग्रांकित तीन संकल्प पारित किए गए– 1) एक अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना 2) सम्मेलनों में पारित मन्तव्यों के कार्यान्वयन के लिए एक विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना और 3) संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को आधिकारिक स्थायी भाषा का स्थान उपलब्ध करा देने के प्रयास।

**संकल्प – 1**

**महात्मा गांधी अंन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय** :

प्रथम संकल्प के अनुसार भारत की संसद में पारित अधिनियम के अधीन 1997 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कर्मभूमि वर्धा में गांधी हिल्स पर महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। 212 एकड़ भूमि पर अवस्थित इस विश्व विद्यालय में हिन्दी के चतुर्दिक और बहु आयामी विकास और समृद्धि के लिए सभी अपेक्षित सुविधाएँ उपलब्ध करायी गयी हैं जो भविष्य में हिन्दी की अन्तरराष्ट्रीय पहचान स्थापित करायेगी। विश्व विद्यालय में क्रमशः 1 भाषा, 2 साहित्य विद्यापीठ 3. संस्कृति विद्यापीठ, 4. अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ, 5. मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ 6. सृजन विद्यापीठ 7. शिक्षा विद्यापीठ 8. प्रबंधन विद्यापीठ है ।

उक्त विद्यापीठों में स्नातक, स्नातकोत्तर, शोध, पदविका और प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम चलाए जा रहें हैं। विद्यापीठ निहाय पाठ्यक्रमों का ब्योरा निम्न प्रकार से हैं –

1. **भाषा विद्यापीठ**
   1) भाषा अध्ययन 2) कम्प्यूटेशन भाषाविज्ञान
   3) भारतीय एवं विदेशी भाषा अध्ययन 4) भाषा विज्ञान
2. **साहित्य विद्यापीठ**
   1) हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य
3. **संस्कृति विद्यापीठ**
   1) विकास एवं शांति अध्ययन 2) स्त्री अध्ययन
   3) डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर – सिदो कान्हू मुर्म दलित एवं जनजातीय अध्ययन .
   4) डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन

बच्चों को विदेशी लिपि की शिक्षा देना उनको राष्ट्र के सच्चे प्रेम से वंचित करना है। – **श्री भवानीदयाल संन्यासी**

**4. अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ**

1) अनुवाद अध्ययन 2) डायस्पोरा अध्ययन

**5. मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान**

1) संचार एवं मीडिया अध्ययन 2) मानव विज्ञान

3) महात्मा गांधी फ्यूजीई गुरूजी सामाजिक कार्य अध्ययन

**6. सृजन विद्यापीठ**

1) नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन

**7. शिक्षा विद्यापीठ**

1) शिक्षा 2) मनोविज्ञान

**8. प्रबंधन विद्यापीठ**

1) प्रबंधन एवं वाणिज्य

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के दो क्षेत्रीय केन्द्र है –

**1. कोलकाता क्षेत्रीय केन्द्र** :

इस केन्द्र में स्नातकोत्तर, शोध और पदविका पाठ्यक्रमों एवं विशेष परियोजनाओं का संचालन–संयोजन किया जा रहा है। यही पर दक्षिण एशिया अध्ययन तथा पूर्वोत्तर सांस्कृतिक अध्ययन विभाग विकसित किए जा रहे हैं।

**2. इलाहाबाद क्षेत्रीय केन्द्र** :

इस केन्द्र द्वारा विभिन्न स्नातकोत्तर और पदविका पाठ्यक्रमों तथा विशेष परियोजनाओं का संचालन/संयोजन किया जा रहा है। यहाँ पर हिन्दी की जनपदीय भाषाओं से जुड़े कार्यो पर बल दिया जा रहा है।

**दूर शिक्षा निदेशालय** :

विश्व विद्यालय के दूर शिक्षा निदेशालय का उद्देश्य हिन्दी भाषा के माध्यम से ज्ञान के नवीनतम अनुशासनों की शिक्षा समाज के हर तबके–विशेष तौर पर हाशिये पर शिक्षा से वंचित लोगों तक पहुँचाना है। यह निदेशालय हिन्दी भाषा को आधार बनाकर प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुवाद आदि अनुशासनों में शिक्षण, मौलिक सोच एवं लेखन को प्रोत्साहित करने हेतु प्रतिबद्ध है। यह निदेशालय स्त्री अध्ययन, अहिंसा एवं शांति अध्ययन जैसे नवीनतम अनुशासनों को समाज के व्यापक हिस्से तक पहुँचाने का प्रयास करेगा ताकि विश्वशांति एवं समता जैसे मूल्यों को व्यावहारिक तौर पर सिद्ध किया जा सके। हिन्दी में मौलिक–वैकल्पिक सोच एवं शोध के लिए प्रतिबद्ध दूर शिक्षा निदेशालय यह प्रयास करेगा कि एक ओर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम शोध–अनुसंधान द्वारा हिन्दी एवं ज्ञान के अन्य अनुशासनों में मौलिक सृजन करें साथ ही दूसरी ओर हिन्दी भाषा के माध्यम से रोज़गारोन्मुख पाठ्यक्रमों द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। देश में उच्च शिक्षा के लगातार महँगे एवं आम जन की पहुँच से दूर होने के इस दौर में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका निर्विवाद एवं महत्त्वपूर्ण है।

**दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रम** :

1. एम.एस.डब्ल्यू.
2. एम. ए. (जर्नलिज़्म एण्ड मास कम्यूनिरेशन)
3. मास्टर इन लाइब्रेरी एण्ड इनफॉर्मेशन साइंस
4. बैचलर इन लाइब्रेरी एण्ड इनफॉर्मेशन साइंस
5. बी.ए. (जर्नलिज़्म मास कम्यूनिकेशन)
6. P.G.D.E.M. & F.P
7. P.G.D.J.M.C
8. M.B.A

**विदेशियों के लिए हिंदी पाठ्यक्रम**

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रमुख दायित्वों में से एक हिंदी को विश्वभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना भी है। अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के विकास के लिए केंद्रीय और समन्वयक अभिकरण के रूप में कार्य करने के लिए भी विश्वविद्यालय निरंतर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय ने सौंपे गए और अपेक्षित दायित्वों को पूरा करने के लिए विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ की स्थापना की है। यह प्रकोष्ठ विदेशी विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों का संचालन, प्रबंधन, नियमन और शिक्षण करता है। अब तक इन पाठ्यक्रमों में यूरोप, अमेरिका और एशिया के विभिन्न देशों–जर्मनी, पोलैंड, बेल्जियम, क्रोएशिया, हंगरी, श्रीलंका, थाईलैंड, मॉरिशस, चीन, मलेशिया, जापान, सिंगापुर, नेपाल, कोरिया, यू.एस.ए. आदि के विद्यार्थी विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययन कर चुके हैं। विश्वविद्यालय ने विभिन्न महाद्वीपों के 11 देशों के विश्वविद्यालयों के साथ शैक्षणिक अनुबंध किया है। ये देश हैं – श्रीलंका, हंगरी, मॉरिशस, जापान, बेल्जियम, इटली, जर्मनी, रूस, चीन।

---

कामयाबी के दरवाजे उन्हीं के लिए खुला करते हैं, जो उन्हें खोलने के लिए खटखटाते हैं।

**संचालित पाठ्यक्रम** :

| क्रम | पाठ्यक्रम का नाम | अवधि | लक्ष्य/पात्रता |
|---|---|---|---|
| 1 | आधार पाठ्यक्रम | 1 सप्ताह | ऐसे विदेशी विद्यार्थी जिनका हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि से कोई परिचय नहीं है। |
| 2 | अल्पावधि गहन प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम | 4 सप्ताह | ऐसे विदेशी विद्यार्थी जिन्होंने कम–से–कम एक सेमेस्टर का हिंदी पाठ्यक्रम पूरा किया है। |
| 3 | प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम | 2 सप्ताह (3 सप्ताह) | उन विदेशी विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम का शिक्षण, जिनके साथ विश्वविद्यालय का अनुबंध है। |
| 4 | डिप्लोमा पाठ्यक्रम | 2 सेमेस्टर (कोई विद्यार्थी एक सेमेस्टर की पढ़ाई के बाद प्रमाणपत्र लेकर पाठ्यक्रम छोड़ सकता है।) | हिंदी भाषा से सामान्य परिचय अथवा 4 सप्ताह का आधार पाठ्यक्रम |
| 5 | बी.ए.हिंदी : भाषा,साहित्य और संस्कृति | 6 सेमेस्टर | 10+2 और/डिप्लोमा पाठ्क्रम |
| 6 | एम.ए.हिंदी | 4 सेमेस्टर | बी.ए.हिंदी : भाषा, साहित्य और संस्कृति |
| 7 | पी–एच.डी. | 4-10 सेमेस्टर | संबद्ध विषय में 55% अंकों के साथ स्नातकोत्तर अथवा समतुल्य उपाधि। |

**शुल्क** : US $300 प्रतिमाह (शिक्षण शुल्क, छात्रावास, भोजन, बिजली, इंटरनेट और व्यायामशालां/जिम की सुविधायें सम्मिलित) ।

**सुविधाएँ** : फादर कामिल बुल्के अंतरराष्ट्रीय छात्रावास (वातानुकूलित) में आवासीय सुविधा, वातानुकूलित व्याख्यान कक्ष, कंम्पूटर प्रयोगशाला, आइसीटी कक्ष एवं भाषा प्रयोगशाला, इंटरनेट (वाई–फाई), व्यायामशाला एवं क्रीड़ा स्थल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, छात्र–मित्र।

**प्रवेश–प्रक्रिया** : विदेशी विद्यार्थियों को प्रवेश–परीक्षा से छूट दी गयी है। यद्यपि प्रवेश होने की स्थिति में उनकी योग्यता की तुल्यता के आधार पर उनके प्रवेश पर विचार किया जाएगा और उन्हें निम्नलिखित दस्तावेज प्रस्तुत करने होंगे–

1. छात्र वीज़ा 2. चिकित्सा प्रमाणपत्र (यदि भारत सरकार द्वारा निर्धारित हो।)

विश्व विद्यालय की ओर से अग्रांकित तीन पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन किया जाता है।–

1. त्रैमासिक पत्रिका 'बहुवचन'
2. द्वैमासिक समीक्षात्मक पत्रिका 'पुस्तक वार्ता' और
3. द्वैमासिक समाचार पत्रिका 'हिन्दी विश्व'

**आवास सुविधाएँ :**

1. नागार्जुन सराय अतिथिगृह 2. बिरसा मुंडा छात्रावास
3. सावित्रीबाई फुले छात्रावास 4. गोरख पाण्डेय छात्रावास
5. फादर कामिल बुल्के अंतरराष्ट्रीय छात्रावास
6. भगतसिंह छात्रावास

**प्रशासकीय व्यवस्था** :

प्रशासकीय संचलन के लिए यहाँ निम्नलिखित पदाधिकारियों की नियुक्तियाँ की गई हैं : –

समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है। – **सर जार्ज ग्रियर्सन**

1. **कुलाध्यक्ष** : यह विश्वविद्यालय का सर्वोच्च पद है जिसपर पदेन नियुक्ति होती है। संसद द्वारा पारित अधिनियम के अधीन इस पद पर सदा राष्ट्रपति विराजमान होते है।
2. **कुलाधिपति** : इस पद पर अधिनियम में निर्धारित प्रक्रिया के तहत हिन्दी भाषा और साहित्य में लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्ति की नियुक्ति माननीय राष्ट्रपति महोदय करते है ।
3. **कुलपति** : यह विश्वविद्यालय के मुख्यालय में दैनंदिन प्रशासन के लिए उत्तरदायी पद है। विश्वविद्यालय कानून के अंतर्गत निर्धारित चयन–प्रक्रिया द्वारा इस पद पर नियुक्ति की जाती है।
4. **प्रतिकुलपति** : विश्वविद्यालय कानून के अंतर्गत निर्धारित प्रक्रिया द्वारा कुलपति स्वयं इस पद पर नियुक्ति करते है। यह कुलपति का सहयोगी पद होता है।
5. **कुलसचिव** : विश्वविद्यालय कानून के अंतर्गत निर्धारित प्रक्रिया द्वारा इस पद पर नियुक्ति की जाती है। यह पद दैनंदिन कार्यालयीन प्रशासन के लिए उत्तरदायी है। उपर्युक्त पदों के अतिरिक्त विभिन्न विद्यापीठों के संकायाध्यक्ष, अधिष्ठाता कल्याण, पुस्तकालयाध्यक्ष, अकादमिक संयोजक, विशेष कर्तव्य अधिकारी, हिन्दी अधिकारी एवं जन सम्पर्क अधिकारी के पद हैं जो सीधे विश्व विद्यालय के सुचारु संचालन में सहयोगी हैं। इन पदों के साथ ही द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के कर्मचारी हैं जो अंतरराष्ट्रीय विश्व विद्यालय की प्रबंधन प्रक्रिया में मूल्यवान सहयोगी हैं।

**संकल्प – 2 :**

**विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना एवं उसके उद्देश्य** :

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दी (हिन्दुस्तानी) को स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रनिर्माण के कार्यो से जोड़कर उसे जिस सेवा भावना से अभिमंडित किया था उसी के कारण भारत के विभिन्न अहिन्दी भाषी प्रदेशों में तथा विदेशों में भी हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में श्रद्धा और प्रेम से अपनाया गया । फलस्वरूप भारतीय संविधान के निर्माताओं ने हिन्दी को संघ की राजभाषा और भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति की भाषा के रुप में मान्यता देने की दिशा में पहल करने का संकल्प किया। संघ की भाषा और शिक्षा का माध्यम होने से हिन्दी में शब्द और साहित्य का विशाल भंडार निर्माण हुआ जिसने विश्व के ज्ञान–विज्ञान को आत्मसात करने की सामर्थ्य हिन्दी को दी। भारत सहित अनेक देशों में हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन का अभूतपूर्व सिलसिला आरंम्भ हुआ। भारत और भारत के बाहर विदेशों में कार्यरत स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं और धार्मिक–सामाजिक संस्थाओं द्वारा हिन्दी के प्रचार–प्रसार का काम बड़े पैमाने पर होने लगा। इन समन्वित प्रयासों ने हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा (जनभाषा) से अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाए जाने की भावना को जन्म दिया । हिन्दी की इसी वैश्विक लोकप्रियता को देखकर मॉरीशस में विश्वहिन्दी केंद्र (सचिवालय) की स्थापना का विचार सन् 1975 में प्रथम विश्व सम्मेलन में मॉरीशस के तत्कालीन प्रधान मंत्री एवं सम्मेलन के प्रमुख अतिथि सर शिवसागर रामगुलाम ने प्रकट किया था। 1976 में मॉरीशस में आयोजित द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में इस प्रस्ताव को मन्तव्य के रूप में स्वीकार किया गया। तदुपरांत 1983 नई दिल्ली, 1993 मॉरीशस, 1996 ट्रिनिडाड, टोबेगो तथा 1999 लंदन के विश्व सम्मेलनों में इस मंतव्य का पुरजोर समर्थन किया गया। सन् 1996 में मॉरीशस की सरकार ने श्रीमती सरिता बुद्ध की सलाह को मानकर विश्वहिन्दी सचिवालय को तत्वतः मान्यता दी और अगस्त 1999 में मॉरीशस के शिक्षा मंत्री तथा भारतीय उच्चायुक्त ने सर्वप्रथम ज्ञापन–पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस ज्ञापन–पत्र के आधार पर विधेयक तैयार किया गया और 2 अप्रैल 2002 को भारत के विदेश मंत्रालय ने उसे स्वीकृति दी । इसके पश्चात 16 नवम्बर 2002 को मॉरीशस की संसद में शिक्षा मंत्री ने विश्व हिन्दी सचिवालय विधेयक प्रस्तुत किया और यह विधेयक सर्वमत से पारित किया गया। इस प्रकार अंतिम रुप से विश्व हिन्दी सचिवालय की विधिवत स्थापना हुई।

**विश्व हिन्दी सचिवालय के उद्देश्य** :

पारित विधेयक के अनुसार विश्व हिन्दी सचिवालय के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. हिन्दी का एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रुप में प्रचार करना तथा राष्ट्र संघ की एक औपचारिक भाषा का दर्जा दिलाना ।
2. हिन्दी के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, गोष्ठियों, कार्यशालाओं, कवि सम्मेलनों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
3. विश्व में हिन्दी के प्रचार–प्रसार में योगदान के लिए विद्वानों को अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्रदान करना।

अपनी शक्ति को छोटा न समझें, एक छोटी सी चिंगारी भी विशाल वन को जला कर राख कर सकती हैं। – **स्वेट मार्डन**

4. विश्व के उन विश्वविद्यालयों में हिन्दी पीठ की स्थापना करवाना जहाँ अभी तक ऐसी व्यवस्था नहीं है।
5. हिन्दी सम्बंधी अनुसंधान कार्य के लिए एक 'डाटा बैंक' तथा सूचना–विज्ञान का केंद्र स्थापित करना जहाँ विश्वभर की संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, साहित्यकारों, विद्वानों से सम्बंधित जानकारी उपलब्ध हो।
6. एक अंतरराष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना करना।
7. हिन्दी पुस्तकों व कम्प्यूटर की अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का आयोजन करना।

**सचिवालय संगठन** :

1. विश्व हिन्दी सचिवालय की एक शासी परिषद और एक कार्यकारी मंडल है।
2. विश्व हिन्दी सचिवालय के महासचिव इसके मुख्य कार्यकारी अधिकारी है।
3. इनका कार्यकाल तीन वर्षों का है। इनका उत्तरदायित्व सचिवालय के दैनंदिन संचालन का है।

**शासी परिषद** :

सचिवालय के उद्देश्यों की पूर्ति का दायित्व इस उच्च स्तरीय परिषद का है। भारत और मॉरीशस के शिक्षा मंत्री, संस्कृति मंत्री तथा विदेश मंत्री इस परिषद के पदेन सदस्य होंगे । इनके अतिरिक्त दोनों सरकारें अपने–अपने देशों के दो–दो विद्वानों का सदस्य के रूप में मनोनयन करेंगी।

**कार्यकारी मंडल अथवा कार्यकारिणी समिति** :

शासी परिषद के निर्णयों पर कार्यवाही के लिए कार्यकारणी समिति होगी। इसके सदस्य दोनों देशों के 4-4 व्यक्ति होंगे । यथा भारत की ओर से– 1. विदेश मंत्रालय के सचिव 2. मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सचिव 3. संस्कृति मंत्रालय के सचिव और 4. मॉरीशस में भारत का उच्चायुक्त

**मॉरीशस की ओर से–**

1. विदेश कार्य, अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं सहयोग मंत्रालय के स्थायी सचिव
2. शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय के स्थायी सचिव
3. कला एवं संस्कृति मंत्रालय के स्थायी सचिव और
4. प्रधान मंत्री कार्यालय, मॉरीशस के स्थायी सचिव

**अर्थव्यवस्था** :

सचिवालय के संचलन के लिए अर्थव्यवस्था का भार दोनों देशों की सरकारों के बीच हुए समझौते के अनुसार पचास–पचास प्रतिशत होगा। अतिरिक्त खर्चों के लिए सचिवालय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों द्वारा इकट्ठा कर सकेगा।

**अन्य देशों का सहयोग** :

यद्यपि विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना भारत और मॉरीशस के सद्प्रयासों से हुई है तथापि विश्व हिन्दी सचिवालय की सार्थकता विश्व के अन्योन्य देशों के समर्थन एवं सक्रिय सहयोग पर भी निर्भर करती है। विश्व के वे सभी देश जहाँ हिन्दी का उल्लेखनीय अस्तित्व है इस सचिवालय के सुचारु एवं सफल संचालन में सहयोग देंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को औपचारिक स्थायी भाषा के रूप में स्थान प्राप्त करा देने की दृष्टि से अपेक्षित बहुमत के समर्थन के लिए आवश्यक है।

इस महत्प्रयोजन हेतु सचिवालय द्वारा डॉ. गंगाधर सिंह सुखलाल के संपादकत्व में ''विश्व हिन्दी समाचार'' पत्रिका का प्रकाशन होता है।

**संकल्प – 3**

**संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा का स्थान**

इस संकल्प की पूर्ति अभी बाकी है। सम्प्रति संयुक्त राष्ट्र में विश्व की छह भाषाओं को आधिकारिक भाषाओं को मान्यता मिल हुई है। वे हैं। 1. चीनी, 2. स्पेनिश, 3. अंग्रेजी, 4. अरबी, 5. रुसी और 6. फ्रेंच। विश्व में इन भाषाओं के बोलने वालों की संख्या अग्रांकित मानी गई है– चीनी – 80 करोड़, स्पेनिश – 40 करोड़, अंग्रेजी 40 करोड़, अरबी–20 करोड़, रुसी–17 करोड़ और फ्रेंच मात्र 09 करोड़ परंन्तु शासकीय सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में 55 करोड़ बोलने वालों की संख्या होने के बावजूद संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को आधिकारिक भाषा का स्थान नहीं दिया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ में यही स्थान प्राप्त करा देने का गुरूतर दायित्व विश्व हिन्दी सचिवालय के कंधों पर दिया गया है। इधर डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल के भाषा शोध अध्ययन ने विश्व में हिन्दी बोलनेवालों की संख्या एक अरब 30 करोड़ बताकर विश्व को चौंका ही दिया है। यदि हम डॉ. नौटियाल के आंकड़ों को

''यदि हम असफलता से शिक्षा प्राप्त करते हैं तो वह सफलता ही है'' – **मैल्कम फोर्ब्स**

न भी माने और सरकारी सर्वेक्षण की माने तो भी 55 करोड़ की बोलनेवालो की संख्या वाली हिन्दी को दूसरे स्थान का अधिकारी मानने में किसी को एतराज नहीं होना चाहिए।

एक अन्य वास्तविकता को जानना भी अत्यंत आवश्यक है वह यह कि संयुक्त राष्ट्र संघ के महासभा भवन में आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिये विशेषज्ञों के अनुसार डेढ़ अरब रुपये से अधिक का खर्च होगा। सभा भवन में ध्वनि–व्यवस्था सम्बंधी उपकरण, कुशल अधिकारी–कर्मचारी, इनके वेतन, आवास व्यवस्था के लिए भारत सरकार को आवश्यक आर्थिक प्रबंधन करना होगा। इसके बाद भी रखरखाव इत्यादि के लिए प्रावधान करना होगा। देश की अस्मिता और आवश्यकता के लिए भारत सरकार को यह आर्थिक प्रावधान यथाशीघ्र करना होगा जो हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में आधिकारिक भाषा के रूप में विराजमान करने का मार्ग प्रशस्त करेगा । उपर्युक्त दोनों, बोलनेवालों की संख्या और आवश्यक खर्च, का प्रावधान होने पर विश्वमत भी भारत के पक्ष में समर्थन देगा। परिणाम स्वरूप निश्चित ही हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ में आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित होगी।

✦ ✦ ✦

## प्रेरक प्रसंग

एक छोटा गरीब लड़का अपनी पढ़ाई के पैसों के लिए घर–घर जाकर सामान बेचता था। वह रोज मेहनत करता था और पढ़ाई भी लगन से करता था। जब भी वह विद्यालय के बाद सामान बेचने निकलता तो उसकी माँ उसे कुछ रोटी बाँध कर देती। एक दिन ऐसे ही जब वह काम पर निकला, तो बहुत देर तक घूमते–घूमते उसे भूख लगने लगी। आज जब उसने अपनी पोटली देखी तो उसमें कुछ भी नहीं था । शायद माँ भूल गयी थी या अपनी गरीबी के कारण आज कुछ दे नहीं पाई। पर आज वह भूख और थकान से जकड़ गया था। वह जिस घर में सामान बेचने जाता, सोचता कि यहाँ कुछ मांग लू, पर उससे ये नहीं होता। दूसरे घर में जाकर भी वह कोशिश करता पर कुछ कह नहीं पाता और न ही उन घरों के मालिक, कड़ी धूप गर्मी में बेहाल बच्चे से पानी तक के लिए पूछना मुनासिब समझते।

अंततः लड़के ने फैसला किया कि अगले घर में जाकर कुछ खाने को पूछेगा । जैसे ही अगले घर का दरवाजा उसने खटखटाया, एक महिला बाहर आई। उसने लड़के को देख उसकी हालत जान ली। बहरहाल, लड़के ने विन्रमता से उसे सामान दिखाए, वहां उसकी कोई कमाई तो नहीं हुई, क्योंकि उस महिला के घर की हालत भी खस्ता ही थी। लड़के ने बड़े अदब से पानी पीने की इच्छा जताई, उसे बहुत प्यास लगी थी। भोजन के लिए कुछ मांगने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। महिला अंदर गयी, उसके लिए एक गिलास दूध लेके आई और प्यार से बच्चे को उसने पीने के लिए दूध दिया । लड़के को वो महिला बड़ी दयावान लगी। उसने दूध पीकर कहा कि मैं आपके इस एक गिलास दूध की कीमत कैसे चुकाऊंगा ? यह कहते हुए उसने उस महिला को धन्यवाद दिया और निकल चला।

बहुत साल बीत गए, अब वह छोटा लड़का एक बड़ा डॉक्टर बन गया था और अपने पेशे को बड़ी ही सहजता से निभा रहा था। एक दिन उसके अस्पताल में एक महिला को लाया गया था, उसकी हालत बहुत ही गंभीर थी। जब उस डॉक्टर को पता चला कि ये महिला उसके पुराने शहर की है, तो वह उसे देखने तुरंत गया । डॉक्टर ने जब उसे देखा तो वह उन्हें पहचान गया। वे वही महिला थी, जिसने उसकी मदद की थी, और एक गिलास दूध दिया था। डॉक्टर ने पूरी जी जान से मेहनत की और उसके गंभीर स्वास्थ्य को भी ठीक कर दिया। उनका बहुत ख्याल रखा और अंत में एक दिन जब वो पूरी तरह से ठीक हो गयी, तो उन्हें छुट्टी दे दी गयी, पर अब उस महिला को सबसे ज्यादा डर इस बात का लग रहा था कि उसके इलाज का खर्चा बहुत हो गया होगा। वो इतने पैसे नही दे सकती थी।

बिल थामते ही उसने जब पढ़ा, तो उसके चेहरे पर आश्चर्य व अद्‌भुत खुशी के भाव थे, बिल पर लिखा था,

''फीस का भुगतान बहुत पहले ही कर दिया था, एक गिलास दूध से।''

वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं । – **श्री मैथिलीशरण गुप्त**

# भूमंडलीकरण, हम और हमारी हिन्दी

डॉ. किशोर वासवानी

**भूमंडलीकरण एक हौआ और हमारी हिन्दी –** आपको क्या लगता है? .... क्या वास्तव में भूमंडलीकरण (Globalisation) एक नागपाश है, जिसकी गिरफ्त में जो भी आएगा उसका वजूद खत्म हो जाएगा? क्या यह एक वास्तविक सत्य है? ... या एक भ्रामक सत्य है? अथवा एक ऐसा ब्लैक–होल है, जिसकी चपेट में आकर हिन्दी–तारा खो जाएगा? ... पूरी क्षमा–याचना के साथ, काफी हद तक लगता है यह एक खौफजदा सत्य है : जिसे अधिकतर, उन अतिरेकी–निष्ठावान–निस्वार्थी हिन्दी प्रेमी / विद्वानों ने फैलाया है जो हिन्दी को, साहित्यिक भाषा के साथ–साथ हिन्दी (भाषा) के व्याकरणिक नियमों/सिद्धांतों के साथ, जोड़कर देखते है और : भाषाविज्ञान के अनुसार, भाषा और साहित्य, भाषा और लिपि तथा भाषिक–प्रयोजनमूलकता (Linguistic-Funtionality) के आधार पर भाषिक–प्रयुक्ति के अंतर को या तो नजर अंदाज कर देते हैं या उनकी भाषिक–तकनीकी गहराइयों तक नहीं जाना चाहते । 21वीं सदी में हिन्दी और भूमंडलीकरण की स्थिति क्या है? ... आइए इस पर तटस्थ और व्यावहारिक होकर कुछ विमर्श कर लें....

**भूमंडलीकरण के समावेशी–आधारस्तम्भ और हिन्दी –** सामान्य रूप से भूमंडलीकरण में यहाँ उल्लिखित आधारस्तम्भों/ तत्वों का समावेश दिखाई देता है । आइये देखें, हिन्दी को किस तरह इनके साथ तालमेल बिठाकर, एक भाषाई रूप में, तटस्थ और व्यावहारिक होकर आगे बढ़ाना है : –

**क) वैश्विकीकरण/सार्वभौमिकीकरण (Universalization)**

● आज विश्व के लगभग सभी देश, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने–अपने उत्पादों की खरीद– फ़रोख्त के लिए, अपने बाज़ार एक–दूसरे के लिए खोल रहे हैं। ज़ाहिर है किसी भी जिंस (उत्पाद) का **विपणन (Marketing)** बिना भाषिक सम्प्रेषण के नहीं हो सकता । उदाहरणार्थ, आज चीन की नज़र हमारे अरबों की जनसंख्या वाले बाज़ार पर है। यह खुला सत्य है कि हमारे बाज़ार चीन के उत्पादों (विशेषकर, बच्चों से संबन्धित वस्तुओं) से अटे पड़े हैं। वे **विपणन** के लिए यहाँ आने से पहले हिन्दी का प्रयोजनमूलक ज्ञान लेकर आते हैं। इसी प्रकार जब हमारे भारतीय विदेशी में किसी बड़े स्टोर में खरीद–फ़रोख़्त के लिए जाते हैं तो वहाँ कोई न कोई सेल्स–वर्कर ऐसा मिल जाता है जो इन (हिन्दी और हिन्दीतर) भारतीय ग्राहकों के साथ हिन्दी में बात करता है। इस लेख के लेखक को स्वयं ऐसा अनुभव स्विट्जरलैंड के बाज़ार में हुआ । भारत के विशाल मार्केट को देखते हुए, आज कई विदेशी छात्र हिन्दी पढ़ने के लिए यहाँ के विश्वविद्यालयों में या अपने देश के शैक्षणिक संस्थानों में हिन्दी का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। आज भारत के लगभग 650 विश्वविद्यालयों के साथ–साथ, हिन्दी विश्व के लगभग 150 विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है।

● अमरीका ने, वाणिज्य और अन्य विभिन्न क्षेत्रों में अपने लाभ को ध्यान में रखते हुए, हिन्दी को बढ़ावा देने के ख्याल से, अपने यहाँ एक "International Hindi Centre" की स्थापना की घोषणा की है (DNA; 13.4.15) जो शैक्षणिक केंद्र होने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति का भी केंद्र होगा। ध्यान देने की बात यह है कि अमरीका जानता है कि **हिन्दी भारत की सामाजिक संस्कृति (Composite - Culture) का प्रतिनिधित्व** करती है। ज्ञातव्य है, भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 में इसका उल्लेख किया गया है, जो भारतीय–संविधान के 17 वें भाग में उल्लिखित है, जिस पर भारत–सरकार की राजभाषा–नीति टिकी हुई है।

● 21 वीं सदी के अमरीकी राष्ट्रपतियों ने हिन्दी की वैश्विक शक्ति को पहचाना। तत्कालीन राष्ट्रपतियों, चाहे वे डेमोक्रेटिक हों अथवा रिपब्लिकन हों अर्थात, बिल क्लिंटन हों या जॉर्ज बुश हों, ने हिन्दी की प्राचीन तथा आधुनिक भूमंडलीय शक्ति को पहचान कर अमेरीकियों को हिन्दी पढ़ने की व्यावहारिक सलाह दी। यह सुखद आश्चर्य है कि हिन्दी की 6500 वर्ष की प्राचीनता को सिद्ध करते हुए, हाल ही में, अमरीका से आए एक शोध ने तो जैसे पूरी दुनिया को चौंका दिया; यथाः शीर्षक "Hindi language 1st emerged 6,500 yrs ago" इस समाचार में काफ़ी शोधात्मक तथ्य दिये गये हैं । इन पर गहराई से विचार करके हिन्दी की व्यावहारिक एवं भाषिक शक्ति को, आज के विश्व की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, आगे बढ़ाना होगा।

''पूरा जीवन एक अनुभव है, आप जितने अधिक प्रयोग करते हैं, उतना ही इसे बेहतर बनाते हैं.''– **राल्फ वाल्डो एमर्सन**

● अपने व्यापार को बढ़ावा देने के लिए आज वैश्विक–उद्योग एक दूसरे के साथ समन्वय (co-ordination) की नीति पर काम कर रहे हैं और वैश्विक–ग्राम में अपेक्षित समन्वय के लिए वे केवल वाणिज्यिक सिद्धांतों को लेकर काम नहीं कर सकते। इसके लिए उन्हें विशेषकर, एक–दूसरे की भाषा–संस्कृति, सामाजिक–धार्मिक और आर्थिक व्यवस्था को मानव–व्यवहार (मनोवैज्ञानिक) के परिप्रेक्ष्य में समझना होता है। इन्हीं के आधार पर वे मार्केटिंग हेतु अपनी–अपनी जिंसों को विज्ञापनों आदि के माध्यम से उतारते हैं। भारत के मार्केट में अपना उत्पाद उतारने के लिए उन्हें अधिकतर हिन्दी का ही सहारा लेना पड़ता है। वे जानते हैं भारत के 70-75 करोड़ से भी ज़्यादा लोग आसानी से हिन्दी समझ लेते हैं।

आइये देखें, वैश्विक फ़लक पर हिन्दी किस प्रकार अलग–अलग क्षेत्रों में उद्योग बनकर करोड़ों–अरबों रुपयों का व्यापार कर रही है।

**मनोरंजन–उद्योग और हिन्दी** – भारत के **एफ.एम. रेडियो** और अधिकांश **टी.वी.चैनल रात–दिन हिन्दी में** चलते हैं; जो विदेशों में, विशेषकर खाड़ी के देशों में, सुने और देखे जाते हैं। इन्हीं चैनलों पर चौबीस घंटे हिन्दी में विज्ञापन आते हैं। हिन्दीतर कार्यक्रमों के साथ हिन्दी के विज्ञापन संबन्धित स्थानीय भाषा में भी डब होकर आते हैं। इनसे करोड़ों रुपयों का राजस्व सरकार को मिलता है। ज्ञातव्य है, खाड़ी के देशों में कई भारतीय ख़ासकर, केरल प्रांत से, रहते हैं, कई गुजराती भाई दक्षिण–अफ्रीका और अमरीका में रहते हैं; उसी प्रकार कई पंजाबी भाई कनाडा और यूरोप के देशों में रहते हैं, वहाँ वे भावनात्मक स्तर पर अपने देश से हिन्दी फिल्मों के माध्यम से ही जुड़ते हैं। इस तथ्य को यश चोपड़ा, सुभाष घई जैसे अनेक फ़िल्मकारों ने माना है। उन्होंने इस बात का भी खुलासा किया कि इनसे **करोड़ों रुपयों का राजस्व देश को मिलता है।** जुलाई 2007 में न्यूयार्क में हुए आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रदर्शित भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा निर्मित वृत्तचित्र **''बॉलीवुड में हिन्दी''** (निर्देशक मनोज रघुवंशी) में इन तथ्यों को रेखांकित किया गया है। मज़ेदार बात है कि हिन्दी सिनेमा विदेशियों को भी लुभा रहा है। इस प्रकार **बॉलीवुड का फिल्म उद्योग पूरे विश्व में अपनी पहचान बना रहा है।**

**पर्यटन–उद्योग और हिन्दी** – भारत प्राचीन काल से ही पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा हैं। दुनिया के अजूबों में एक अजूबा **ताजमहल** हमारे देश में हैं; उसके, और यहाँ की प्राचीन संस्कृति, यहाँ की प्राचीन ऐतिहासिक धरोहरों (अजंता–एलोरा, खजुराहो, राजस्थान के किले आदि), कश्मीर, केरल, पूर्वांचल, उत्तरांचल, हिमालय जैसे बेमिसाल प्राकृतिक सौंदर्य से ओतप्रोत स्थलों अथवा हरिद्वार, काशी जैसे धार्मिक स्थलों के आकर्षण से दुनिया भर के कई पर्यटक प्रति वर्ष भारत की यात्रा करते हैं। यहाँ आने से पहले इंटरनेट के माध्यम से वे जान लेते हैं कि भारत एक बहुभाषी देश है, परंतु हिन्दी पूरे भारत में, किसी न किसी रूप में समझी और बोली जाती है। अतः वे यहाँ की हिन्दी संस्थाओं (केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, केंद्रीय हिन्दी संस्थान आदि) से संपर्क स्थापित कर, बोलचाल के रूप में संपर्क भाषा – हिन्दी सीखने हेतु जानकारी प्राप्त करते हैं और हिन्दी के इस प्रयोजनमूलक रूप को सीखने के लिए प्रेरित होते हैं।

**चिकित्सा/प्राकृतिक–चिकित्सा, योग और हिन्दी** – जहां, भारत के चिकित्सक विदेशों में अपनी मेधा का झण्डा गाड़ रहे हैं, वहीं भारत में अपोलो, जसलोक, एम्स, स्टर्लिंग आदि 5-7 सितारा–अस्पताल, अपनी उत्कृष्ट–गुणवत्ता एवं चिकित्सा के लिये माने जाते है। विकसित देशों में होने वाले चिकित्सा खर्च की तुलना में भारत में होने वाले वाजिब–खर्च को ध्यान में रखते हुए, बड़ी संख्या में विदेशी मरीज भारत आते हैं। इन अस्पतालों में, चिकित्सकों के साथ तो इनका काम अँग्रेजी में चल जाता है, परंतु तृतीय/चतुर्थ वर्ग के कर्मियों, बाज़ार में दवाइयाँ/फल आदि खरीदने के लिए दूकानदारों के साथ संप्रेषण हेतु इनका काम हिन्दी में ही चलता है। उसी प्रकार आज, **प्राकृतिक–चिकित्सा** उपयोगी सिद्ध होने पर, इस क्षेत्र में अग्रणी कार्य करने वाला भारत का केरल प्रदेश पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर खींच रहा है। हमारे देश के योग–गुरुओं ने, निरोगी काया बनाने एवं दैनिक जीवन में **योग का प्रयोग** करने तथा **आयुर्वेदिक–चिकित्सा** पद्धति को आगे बढ़ाने की दिशा में, उल्लेखनीय कार्य किया है। इन सब कारणों से बड़ी संख्या में विदेशी इलाज हेतु भारत आ रहे हैं और अपने दैनिक कार्यों को हिन्दी के माध्यम से निबटा रहे हैं। इस प्रकार, संपर्क हेतु हिन्दी उनके लिए बहुत बड़े उपयोगी औज़ार का काम कर रही है।

**खेल–जगत और हिन्दी उद्योग–** आज खेल केवल मोहल्लों में खेले जाने वाले ''बच्चों के खेल ''नहीं हैं। वे अपने मोहल्ले,

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है । **– श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन**

गाँव/कस्बे/शहर/राज्य–प्रदेश और देश की सीमा लांघते हुए, अपने–अपने उप–महाद्वीप/महाद्वीप से होते हुए पूरे विश्व–मैदानों में अपना–अपना तम्बू तान चुके हैं । वैसे तो खेल आनंद और मैत्री को बढ़ावा देने के लिए खेले जाते हैं; परंतु आज प्रतियोगिता और वर्चस्व स्थापित करने के लिए खेले जा रहे हैं और इन प्रतियोगिताओं का क्षेत्र मोहल्ले से होता हुआ पूरे विश्व में फैल गया है। आज जन–संचार माध्यमों के ज़रिये पूरा विश्व इन खेलों का आनंद अपने घर में सुन–देख कर उठाता है। मैदान में इन खेलों को जीवंत रूप में देखने के लिए हज़ारों रुपए खर्च करने पड़ते हैं, इन खेलों के नियम/दाँव–पेंच आदि को बारीकी से समझने के लिए इन प्रतियोगिताओं का आँखों देखा हाल सुना और देखा जाता है और यह आँखों देखा हाल अधिकतर उस भाषा में देने की कोशिश की जाती है जिसे ज़्यादा–से–ज़्यादा लोग समझते हों। इस आनंद का पूरा मनोवैज्ञानिक फायदा उठाते हुए जन–संचार माध्यम खेल के साथ–साथ कई उत्पादों के विज्ञापन भी दिखाते हैं, जिनसे एक ओर जहां इन माध्यमों को करोड़ो रुपयों का शुल्क मिलता है, वहीं विज्ञापन दाता को अपने उत्पादों की बिक्री से अरबों रुपयों का मुनाफा होता है। ज़ाहिर है खेलों का आँखो देखा हाल और विज्ञापन उन भाषाओं में आते हैं जिन्हें विश्व की अधिकांश जनसंख्या समझती है । चूंकि अंग्रेजी–उर्दू मिश्रित हिन्दी विश्व की सबसे बड़ी समझी जाने वाली भाषा है, अतः लगभग सभी राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं का आँखों देखा हाल और विज्ञापन इस भाषा (मिश्रित–हिन्दी) में प्रस्तुत किया जाता है। इस खेल में, हिन्दी उद्योग भी करोड़ों रुपयों में खेल रहा है।

**बैंकिंग–बीमा, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और हिन्दी उद्योग** : भूमंडलीकरण के चलते अब कई बैंक और बीमा कंपनियाँ अपना व्यवसाय वैश्विक स्तर पर कर रही हैं। विशाल जनसंख्या वाले देश भारत का व्यावसायिक बाज़ार भी काफ़ी बड़ा है। परिणामस्वरूप विदेशों की कई बीमा कंपनियाँ और बैंक भारत में अपना व्यवसाय करने के लिए लालायित हुए, ईस्ट इंडिया कंपनी का इतिहास 21 वीं सदी में नए रूप में सामने आया। पर इस बार नज़र केवल बाज़ार और व्यवसाय पर थी। अरबों रुपये लगाने वाली कंपनियाँ अपने ग्राहकों की आर्थिक, सामाजिक, भाषिक, धार्मिक आदि स्थितियों का उनके मनोव्यवहार के आधार पर पूरा अध्ययन (होमवर्क) करके बाज़ार में उतरती हैं। भारत का सामान्य–जन इनके बाज़ार का बहुत बड़ा ग्राहक–वर्ग है। अतः इनके अनुसार ही वस्तुओं की मार्केटिंग हेतु इनकी (ग्राहकों की) संपर्क–भाषा को बाज़ार में उतरना पड़ता है। इस दिशा में चीन का उदाहरण हमारे सामने है। बैंकिंग, बीमा, बहुराष्ट्रीय–कंपनियों के मार्केटिंग कर्मी अपनी योजनाओं की जानकारी हिंदी में देते दिखाई देते हैं और आवश्यकतानुसार सामग्री भी हिन्दी में मुहैया करवाते हैं।

**अनुवाद, द्विभाषिकता और हिंदी–उद्योग** : सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत में लगभग 179 भाषाएँ, 544 बोलियाँ और 1652 मातृ–भाषाएँ हैं वहीं विश्व में लगभग 6000 भाषाएँ हैं। भारत में जहां हिन्दी, वहीं वैश्विक स्तर पर, चीनी (मंदारिन), अंग्रेज़ी, स्पेनिश, फ्रेंच, अरबी, रूसी जैसी भाषाएँ अधिकांश रूप से समझी एवं बोली जाती हैं। विश्वग्राम में विचारों के आदान–प्रदान हेतु संपर्क करने के लिए इन भाषाओं का प्रयोग न केवल व्यापार हेतु परंतु, अपनी राष्ट्रीय–अस्मिता बनाए रखने के लिए, विभिन्न देशों के राजनयिकों के बीच संवाद/विमर्श हेतु अपनी–अपनी भाषाओं का प्रयोग द्विभाषियों की मदद से किया जाता है। अभी हाल ही के वर्षों में भारत की ओर से इस दिशा में उत्साहवर्धक कदम उठाए गए हैं। चाहे वह यू.एन.ओ. का मंच हो या विदेशियों के साथ राजनयिकों–विमर्श हों, हिन्दी ने अपनी उपस्थिति प्रभावशाली ढंग से दर्ज़ कारवाई है। इससे हिन्दी को केंद्र में रखकर अनुवादकों एवं द्विभाषिकों की मांग बढ़ी है।

प्रधान राजनयिकों को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी बात प्रभावशाली ढंग से हिन्दी में रखते देख, अन्य राजनयिक भी इस ओर आकर्षित होते हैं तथा हिन्दी में अपनी बात रखने के लिए प्रेरित होते हैं। इस प्रकार हिन्दी का फैलाव वैश्विक मंचों पर अपनी जगह बना रहा है।

**दृश्य–श्रव्य हिन्दी शिक्षण/संदेश–सामग्री निर्माण उद्योग** : 21 वीं सदी दृश्य–श्रव्य माध्यमों की सदी है। चाहे वह बाज़ार हो अथवा कक्षा, अगर हम अपने संदेश/मंतव्य को, अपने श्रोता के सामने,दृश्य–श्रव्य माध्यमों द्वारा संप्रेषित नहीं करते तो हमारे मन की बात हमारे लक्षित श्रोता तक प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित नहीं होगी और हम अपने अपेक्षित लक्ष्य/उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पाएंगे । किसी भी बहुराष्ट्रीय कंपनी/बैंक/कार्यालय आदि में यह एक आम परिदृश्य है जहां, उनकी योजनाओं/प्रकार्यों आदि को, दृश्य–श्रव्य माध्यमों द्वारा लगातार दिखाया जाता रहता है। आज दृश्य–श्रव्य–संदेश–सम्प्रेषण अपने आप में एक अलग भाषा का रूप ले चुका है। अब हमारा प्रयोक्ता (उपभोक्ता / ग्राहक / विद्यार्थी आदि) मात्र श्रोता न रहकर दृष्टा भी बन गया है, क्योंकि

प्रसन्न रहने के लिए दो ही उपाय हैं, आवश्यकताएँ कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिठायें।

अब हमारे घर के ड्राइंग रूम से लेकर बाहर की दुनिया में रात–दिन अपनी बात दृश्य–श्रव्य माध्यमों द्वारा ही संप्रेषित हो रही है; उसका मनौवैज्ञानिक प्रभाव उसके स्वभाव–व्यवहार में आ रहा है। कई बार यह स्थिति बड़ी ख़तरनाक साबित हो रही है। समाज में घट रहीं कई वीभत्स घटनाएँ इसका जीवंत उदाहरण हैं। अब समय आ गया है जब हमें समाज को इस दिशा में सजग करना होगा। हिन्दी शिक्षण के लिए दृश्य–श्रव्य–संदेश–सम्प्रेषण भाषा के मानदंडों को ध्यान में रख कर शैक्षणिक सामग्री तैयार करने के लिए तैयार होना पड़ेगा।

**ख. उदारीकरण** :

आज पूरा ज़ोर इस बात पर दिया जा रहा है कि हम अपने संदेश को किस तरह प्रभावशाली तरीक़े से अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएँ। अतः हर चीज में सैद्धांतिक बदलाव आ रहे हैं। भाषाएँ भी इससे अछूती नहीं रहीं । आज, इंटरनेट, मोबाइल आदि पर युवा पीढ़ी जिस भाषा का प्रयोग कर रही है, वह केवल संदेश सम्प्रेषण के सिद्धांन्त पर टिकी है। उन्हें व्याकरण/लिपि के नियमों से मतलब नहीं है, सिर्फ अर्थ–सम्प्रेषण ही उनका प्रयोजन है, वह ठीक होना चाहिए । यही कारण है कि यह पीढ़ी अंग्रेज़ी में जहां अमेरीकन इंग्लिश की दीवानी है वहीं हिंदी को रोमन लिपि में लिखने में अपनी व्यावहारिक समझदारी समझती है। चेतन भगत जैसे अग्रणी लेखक भी इसकी वक़ालत करते हैं। (Times of India, दि. 11.1.15 पुणे, पृ.18) हालांकि, पहले भी दक्षिण के राजनयिकों द्वारा इस तरह की मांग आती रही थी पर उसके राजनैतिक कारण थे। मज़ेदार बात है कि अंग्रेज़ी में आए या आ रहे बदलावों को लेकर अंग्रेज़ीदाँ उतने परेशान नहीं हैं जितने हिन्दी को लेकर हम लोग हैं। परंतु 21 वीं सदी की पीढ़ी बिना किसी वर्जनाओं के अपने हिसाब से व्यावहारिक होकर आगे बढ़ती जा रही है। यह यथार्थ है, अच्छा या बुरा!

**ग. निजीकरण**

21 वीं की पीढ़ी अपनी निजता को लोकर काफी सजग है। अपने ही घर में अपने–कमरे में वह अपना संसार देखना चाहती है। व्यापारीकरण और बाजारवाद की निजता का प्रभाव भाषाओं पर भी पड़ा । केवल बिक्री और मुनाफे से मतलब रहा। जब पूरा विश्व एक बाज़ार बना और **''ग्राहक''** ही भगवान बना तब सम्प्रेषण के संदर्भों में भाषाओं पर भी निजता ने घर कर लिया । परिणामस्वरूप इंग्लैंड, अमरीका, आस्ट्रेलिया, इंडियन, अफ्रीकन आदि की अंग्रेजी लेकर– ''अंग्रेजियां'' आ गईं । और हिन्दी को लेकर ; मुंबइया, हैदराबादी, मद्रासी, बंगाली, पंजाबी, भोजपुरिया ''हिंदियाँ ''आ गईं। कुछ भाषाविदों ने तो इनके व्याकरण तक लिख डाले। कुशल व्यापारी इन निजताओं का भी ध्यान रखता है और परिस्थिति के अनुसार अपना माल बेचने के लिए इनका प्रयोग करता है। हिन्दी को भाषाई प्रयोजनमूलकता के इस मोर्चे पर भी काफ़ी काम करना है।

**अब हमें सोचना है हमें क्या करना है.....**

21 वीं में दृश्य–श्रव्य माध्यम एक अटल आवश्यकता बन गए हैं । यह एक हद तक दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य है कि हमने दृश्य–श्रव्य माध्यमों को अधिकतर मनोरंजन का साधन मानकर, उनसे केवल आमोद–प्रमोद के कार्य करवाए हैं.....इस पर विचार होना चाहिए ।

- आज, ज्ञान/सूचना प्राप्ति के लिए 21 वीं सदी, एक प्रकार से, पूरी तरह सामासिक श्रव्य–दृश्य माध्यमों ( Composite Audio-Visual Media) के प्रति समर्पित होती दिखाई दे रही है। अतः किसी आधारभूत अवधारणात्मक–मंतव्य (Fundamental Conceptual View) को सुस्पष्ट तरीक़े से पाठक–दर्शकों तक पहुंचाने के लिए कई श्रव्य–दृश्य माध्यमों का एक साथ सामासिक रूप ( Composite Form) में प्रयोग/उपयोग हो रहा है। अंतः हिन्दी को लेकर, अपनी जिंस की मार्केटिंग के संदर्भ में इन मुद्दों पर विचार करना होगा। अपने मार्केटिंग– अधिकारियों को दृश्य–श्रव्य माध्यम द्वारा अपनी जिंस को बाज़ार में बेचने के लिए, अपनी बात को दृश्य–श्रव्य सिनेमा, दूरदर्शन, कम्प्युटर/इंटरनेट, मोबाईल, आइ–पैड आदि उपकरणों/साधनों के आ जाने से सन्देश सम्प्रेषण के स्तर पर दृश्य–श्रव्य अपने आप में एक भाषा बन गई है; जिसमें, पारंपरिक भाषा के निर्धारित कौशलों जैसे, **सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के अलावा ''भाषा को देखने का कौशल''** भी विकसित हुआ है; जिसका अध्यापन भाषाविज्ञान में भी अब–तक वैज्ञानिरज्ञ ढंग से आरंभ नहीं हुआ है। यह सामासिक कला–रूप ( Composite Art Form) है, जो अन्य ज्ञानानुशासनों यथा, पारंपरिक भाषा/साहित्य; चित्र–कला; वास्तु/मूर्ति– कला; संगीत; नाट्य/नृत्य–कला, विज्ञान आदि के घोल से बना है और अपनी विषय–वस्तु के संदेश–संप्रेषण के स्तर पर यह इन पर निर्भर है। इन्हें लेकर, हिन्दी के संदर्भों में, वैश्विक आवश्यकता को ध्यान में रखकर विचार करना होगा ।

✦ ✦ ✦

उस काम का चयन कीजिये जिसे आप पसंद करते हों, फिर आपको पूरी ज़िन्दगी एक दिन भी काम नहीं करना पड़ेगा – **कन्फ्यूशियस**

# अनुवाद - एक अनुभव

**श्री महेन्द्र कुमार मिश्र**, पुणे

भारत एक विशाल देश है। इस देश की हर नदियाँ, पहाड़, झरने अपनी संस्कृति रखते है। इसकी संस्कृति का तानाबाना बुनती है भौगोलिक संरचनाएं तथा बहुभाषिकता । इस बहुभाषी देश में अनुवाद कुछ बड़े सांस्कृतिक पुलों में से एक है । भाषा व्यक्ति व समाज को जोड़ती है, उसकी अभिव्यक्ति करती है– अनुवाद भाषा से भाषा को जोड़ता है। अनुवाद प्राचीन काल से विद्यमान है। दो दशक पहले तक अनुवाद अधिकांशतः साहित्य तक सीमित था । दौर बदलते गए, आज के सबसे नए दौर में भारतीय भाषाओं के बीच सीधे अनुवाद की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

हर दिन बदलते–नया रूप लेते–नई ऊँचाईयों को छूते और नई मुश्किलों से गुजरते समकालीन जीवन को अपनी भाषा में जानने की ललक सभी को होती है। इस ललक को पूरा करता है एक अनुवादक अपनी लेखनी द्वारा, जिसकी कठिनाईयों, समस्याओं को आज तक समझा नहीं जा सका है। दो अलग–अलग भावधाराओं, भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सार्थक संवाद पुल रचने वाले ''अनुवादक'' की आज भी पहचान नहीं की जा सकी है। अनुवादक की वेदना का एहसास वही कर सकता है जिसने कभी अनुवाद करने की जुर्रत की हो।

अनुवादकों के बारे में आम सोच यही कहती है कि अनुवाद मात्र मूल कृति के शब्दों और वाक्यों को अन्य भाषा में जस का तस उतारने की कला है। एक साथ दो भाषाओं से खेलने वाले व्यक्ति के रूप में ''अनुवादक'' को देखा जाता है। जबकि मेरा अनुभव कहता है कि अनुवादक केवल एक भाषा से दूसरी भाषा में ले जाने वाला ''भाषांतर'' नहीं होता है। अनुवादक को मूल रचना की आत्मा में गहराई से प्रवेश करना होता है, वहाँ के सुख–दुख–दर्द और पीड़ा को महसूस करना होता है। यदि वह इसमें सफल होता है तो उसे मूल रचना की नब्ज पकड़ में आ सकती है..... और यह इतना आसान नहीं होता है। कबीर ने सही कहा है–

**अग्नि आँच सहना सुगम खड़ग की धार ।**
**नेह निभावन एक रस, महा कठिन व्यौहार।**

कबीरदास जी अनुवादक नहीं थे, लेकिन उनका यह दोहा बताता है कि दोनों भाषाओं के बीच नेह निभाना खड़ग की धार पर चलने से भी कठिन काम है। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद के बारे में एक वर्मी अनुवादाचार्य टै टो ने कहा कि यह जल को अंजुरी में ले जाने जैसा दुस्साध्य कार्य है। सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद ऐसा सरल नहीं जैसे किसी निर्देश, सूचना, प्रपत्र, समाचार आदि का अनुवाद कम्प्यूटर के माध्यम से चुटकी बजाने मात्र की देर में सम्पन्न हो जाता है। यह तो भुक्त भोगी अनुवादक ही जानते है कि शब्दों और अर्थों के साथ गुत्थमगुत्थी करते हुए अनुवादक के अंदर क्या कुछ गुजरता है। इस संदर्भ में प्रो. के. सच्चिदानंदन की पंक्तियाँ दृष्टव्य है– ''काया अपनी शीश पराया'' जिसका सटीक अर्थ है अनुवादक अपने कंधे पर दूसरे रचनाकार का सिर थाम लेता है। इस तरह अनुवादक में दो दिमाग समाहित होते है। मूल रचनाकार हमेशा वहाँ होता है पर्दे के पीछे । अनुवादक को लेखक के अंतर्मन, उसके विचार को, चीजों को देखने के उसके नजरिया का अंदाजा लगाना पड़ता है और उस दृष्टि को पाठकों के सामने लाना होता है; जो रचनाकार की होती है। सच्चे अनुवाद कार्य में दो साहित्यिक दिमाग और व्यक्तित्व एक बनकर जुटे होते है।

वस्तुतः अनुवाद का कोई कार्य मूल की खुशबू को लिए हुए अनुवादक के निजी स्पर्श को भी उसी तरह दर्शाता है जिस तरह सूर्य किरणें प्रिज्म पर पड़ने से कई रंगों की दिखाई पड़ती है। अच्छा अनुवाद कार्य वहीं है जो मूल कार्य लगे । दूसरी भाषा में अनुदित होते समय मूल कार्य की सुंदरता और प्रवाह बना रहना चाहिए । मूल लेखन में हमारे पास अपनी स्वतंत्रता और सृजन सुख होता है जबकि अनुवाद में ऐसा नहीं है। यह जरूर है कि अनुवाद करते समय हमें एक अलग तरह का आनंद मिलता है। अनुवाद के द्वारा हम दूसरे रचनाकार के अंतर्जगत को अपनी भाषा में लाते है लेकिन हमें बहुत सावधानी से और लेखक के प्रति पूरी निष्ठा से काम करना होता है। इन सबके बावजूद आम तौर पर होता क्या है कि सारा यश तो मूल रचनाकार (लेखक) को जाता है और अपयश अनुवादक के हिस्से में आता है।

यहाँ हम एच. बालासुब्रम्हण्यम के नुस्खे से सहमत हैं कि कम–से–कम तीन बार संशोधन के बाद अनुवाद सही निकलता है। पहला प्रारूप स्त्रोत भाषा का पुट लिए होता है। थोड़े समय के अंतराल के बाद उसे मांजने पर उसमें से लक्ष्य भाषा का अभास होने लगता है और तीसरी बार नए सिरे से पुनर्लेखन करते हुए भाषा सहज स्वाभाविक रूप में निखर उठती है। सच है, तराशते–तराशते हीरे में चमक आ जाती है। अनुवाद का अपना आनंद होता है। इसे हम आत्मानंद कह सकते हैं।

---

शिखर तक पहुँचने के लिए ताकत चाहिए होती है, चाहे वो माउन्ट एवरेस्ट का शिखर हो या आपके पेशे का ।

**– डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम**

# पारिभाषिक शब्दावली

**डॉ. राजबहादुर, पुणे.**

पारिभाषिक शब्दों की निर्माण प्रक्रिया सामान्य शब्दों की निर्माण–प्रक्रिया के नियमों से ही परिचालित होती है। सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द के बीच मूल अंतर वस्तुतः अर्थ संरचना के स्तर पर होता है। पारिभाषिक शब्दावली को विशेषज्ञों की भाषा कहा जाता है। तकनीकी शब्दों को बिना परिभाषा के नहीं समझा जा सकता है इसलिए इसे पारिभाषिक शब्द कहते हैं। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, ''पारिभाषिक शब्द उन्हें कहते हैं जिनकी परिभाषा दी जा सकती है।'' आज प्रशासन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, वाणिज्य, कृषि आदि विषयों में अनेक साभिप्राय शब्द तकनीकी अर्थ में प्रयुक्त हो रहे हैं। इन शब्दों का प्रयोग अर्थ–विशेष के लिए होता है। आज के इस वैज्ञानिक युग में विभिन्न शब्दों के ज्ञान का विकास और विस्तार पारिभाषिक शब्दावली पर निर्भर करता है क्योंकि नवीन आविष्कारों तथा तकनीक का समुचित उपयोग सरल एवं सर्वग्राह्य भाषा द्वारा ही संभव हो सकता है और भाषा का आधार है पारिभाषिक शब्दावली । अतः पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में हमेशा इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि तथ्य अर्थ पर हावी रहे और अर्थ शब्द पर । प्रत्येक शब्द का अर्थ एक ही हो और वह सुनिश्चित हो, शब्द सरल तथा बोधगम्य होना चाहिए। प्रारम्भ में विविध विज्ञान एवं शास्त्रों की भाषा संस्कृत थी तथा पारिभाषिक शब्दावली भी संस्कृत में ही थी । धीरे–धीरे चीन, अरब आदि देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक तथा व्यापारिक संबंध बढ़ने के कारण उन देशों की भाषाओं के भी कुछ शब्द भारतीय शब्दावली में प्रवेश करते गए। संस्कृत अधिक विकसित एवं वैज्ञानिक भाषा थी। कालांतर में इस पारिभाषिक शब्दावली में पाली एवं प्राकृत आदि भाषाओं के भी शब्द जुड़ते गए क्योंकि पाली एवं प्राकृत भाषाएँ भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में विकसित हुई थी । मुगलों के शासन काल में फारसी और अरबी विदेशी भाषाएँ प्रचलित हुई, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं से ये भाषाएँ बिल्कुल भिन्न थी। मुगलों के प्रशासनिक कार्यों की भाषा फारसी थी। ऐसी स्थिति में विधि एवं प्रशासनिक सेवाओं के लिए फारसी का ज्ञान आवश्यक समझा जाता था। अतः फारसी के शब्दों का प्रभाव भारतीय भाषाओं और उसकी शब्दावली पर भी पड़ने लगा। पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में डॉ. गार्गी गुप्त का विचार था कि, ''भारतीय भाषाएँ इस स्थिति से समझौता कर रही थीं कि कि भारत में अंग्रेजी शासन के युग के साथ अंग्रेजी भाषा का अध्ययन–अध्यापन आरम्भ हुआ । शुरु में अंग्रेज प्रशासकों ने अंग्रेजी और फारसी दोनों की शब्दावली साथ–साथ चलने दी परन्तु धीरे–धीरे अँग्रेजी का प्रभाव बढ़ने लगा।''

राजभाषा वह भाषा है जिसके माध्यम से राजकाज चलाया जाता है, चलाया जाना है। इसका मतलब यह है कि, यह राजभाषा प्रशासनिक माध्यम की भाषा होगी, साहित्यिक भाषा की अपेक्षा इसमें ज्यादा विस्तार होगा। गोवर्धन ठाकुर ने राजभाषा की परिभाषा दी है–''राजभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जो राजकाज की भाषा, शासनतंत्र की भाषा हो और जिसके माध्यम से प्रशासन के समस्त कार्य–व्यापारों का संपादन हो।'' यही प्रयोजनमूलक हिंदी है। प्रयोजनमूलक हिंदी, साहित्येतर लेखन की वह विधा है जिसमें पारिभाषिक शब्दावली का बाहुल्य तथा भाषा रजिस्टरों (प्रयुक्तियों) का संगठन होता है। प्रचलित शब्द ही इसमें पारिभाषिक बना कर प्रयुक्त किए जाते हैं। भाववाच्य और कर्मवाच्यों की अधिकता राजभाषा की विशिष्टता है, इसमें कर्तृवाच्य भी है, लेकिन तुलनात्मक दृष्टि से कम है। यह भाषा का प्रगतिगत (Functional) रूप है। यही प्रयोजनमूलक हिंदी है – जैसे कि प्रशासनिक हिंदी, कार्यालयीन हिंदी, प्रौद्योगिकी हिंदी, तकनीकी हिंदी, वैज्ञानिकी हिंदी, कारोबारी हिंदी, अखबारी हिंदी, बाजारू हिंदी, कानूनी हिंदी आदि। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रयोजनमूलक भाषा साहित्यिक भाषा जैसी परिमार्जित नहीं होती। प्रतीक–बिंब विधान भी इसमें नहीं होता, यह ''भावपरक'' नहीं ''तथ्यपरक'' भाषा होती है। अतः पारदर्शिता इसमें अनिवार्य रूप से आवश्यक है। इसमें प्रयुक्त शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली कहते हैं। स्पष्ट है कि जिन शब्दों के अर्थ की परिभाषा की गई है, वे ही पारिभाषिक शब्द हैं।

---

क्या हम यह नहीं जानते कि आत्म सम्मान आत्म निर्भरता के साथ आता है? **– डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम**

# राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान

**भारत के संविधान में राजभाषा से संबंधित भाग** – 17

**अध्याय 1– संघ की भाषा**

**अनुच्छेद 120 :** संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा –

1. भाग 17 में किसी बात के होते हुए भी, किंतु अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा। परंतु, यथास्थिति, राज्य सभा का सभापति या लोक सभा का अध्यक्ष अथवा उस रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति किसी सदस्य को, जो हिंदी में या अंग्रेजी में अपनी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है, अपनी मातृ–भाषा में सदन को संबोधित करने की अनुज्ञा दे सकेगा ।

2. जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानों ''या अंग्रेजी में'' शब्दों का उसमें से लोप कर दिया गया हो ।

**अनुच्छेद 343 :** संघ की राजभाषा

1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।

2. खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था : परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतराष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

3. इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात्, विधि द्वारा (क) अंग्रेजी भाषा का, या (ख) अंकों के देवनागरी रूप का, ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

**अनुच्छेद 344 : राज भाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति –** 1. राष्ट्रपति, इस संविधान के प्रारंभ से पांच वर्ष की समाप्ति पर और तत्पश्चात् ऐसे प्रारंभ से दस वर्ष की समाप्ति पर, आदेश द्वारा, एक आयोग गठित करेगा जो एक अध्यक्ष और आठवीं अनुसूची में् विनिर्दिष्ट विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले ऐसे अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा जिनको राष्ट्रपति नियुक्त करे और आदेश में आयोग द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रक्रिया परिनिश्चित की जाएगी।

2. आयोग का यह कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रपति को–

क) संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग, ख) संघ के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग पर निर्बंधनों, ग) अनुच्छेद 348 में उल्लिखित सभी या किन्हीं प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा, घ) संघ के किसी एक या अधिक विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने वाले अंकों के रूप, ड) संघ की राजभाषा तथा संघ और किसी राज्य के बीच या एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच पत्रादि की भाषा और उनके प्रयोग के संबंध में राष्ट्रपति द्वारा आयोग को निर्देशित किए गए किसी अन्य विषय, के बारे में सिफारिश करे।

3. खंड (2) के अधीन अपनी सिफारिशें करने में, आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का और लोक सेवाओं के संबंध में अहिंदी भाषी क्षेत्रों के व्यक्तियों के न्यायसंगत दावों और हितों का सम्यक ध्यान रखेगा ।

4. एक समिति गठित की जाएगी जो तीस सदस्यों से मिलकर बनेगी जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे और दस राज्य सभा के सदस्य होंगे जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों और राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

5. समिति का यह कर्तव्य होगा कि वह खंड (1) के अधीन गठित आयोग की सिफारिशों की परीक्षा करे और राष्ट्रपति को उन पर अपनी राय के बारे में प्रतिवेदन दे।

6. अनुच्छेद 343 में किसी बात के होते हुए भी, राष्ट्रपति खंड (5) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर विचार करने के पश्चात् उस संपूर्ण प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश दे सकेगा।

---

कृत्रिम सुख की बजाए ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये । – **डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम**

# सीएसआईआर-एनसीएल में राजभाषा कार्यान्वयन

भारत सरकार की राजभाषा नीति तथा राजभाषा संबंधी नियमों का अनुसरण करने की दृष्टि से सीएसआईआर–राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एन.सी.एल.) में प्रत्येक स्तर पर गहन प्रयास किए जाते हैं। सीएसआईआर–एन.सी.एल. एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहां अधिकांश कार्य वैज्ञानिक तथा तकनीकी स्वरूप का होता है तथा शेष प्रशासनिक कार्य प्रमुखतः हिन्दी भाषा में किया जाता है। इस प्रयोगशाला में किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी उल्लेखनीय प्रयास निम्नानुसार हैं।

1. प्रत्येक तिमाही में प्रयोगशाला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक नियमित रूप से निदेशक महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की जाती है एवं इन बैठकों में प्रयोगशाला में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी प्रयासों की समीक्षा की जाती है। इन बैठकों में प्रयोगशाला के प्रत्येक प्रभाग/अनुभाग प्रमुख सदस्य के रूप में उपस्थित रहते हैं।
2. प्रयोगशाला के स्टाफ को हिन्दी कार्य करने में आ रही समस्याओं का निदान करने तथा हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने की दृष्टि से प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इन कार्यशालाओं में स्टाफ को भारत सरकार की राजभाषा नीति की जानकारी देने के साथ–साथ अपना दैनंदिन सरकारी कार्य हिन्दी में करने तथा कंप्यूटर पर यूनिकोड प्रणाली के माध्यम से हिन्दी में काम करने का प्रशिक्षण दिया जाता है।
3. वैज्ञानिक कार्यों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु तथा राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से यहाँ समय–समय पर वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भाषा में किया जाता है।
4. प्रयोगशाला में प्रतिवर्ष हिन्दी गृहपत्रिका **''एनसीएल–आलोक'** का प्रकाशन नियमित रूप से किया जाता है। गृहपत्रिका प्रकाशन का मूल उद्देश्य हिन्दी भाषा में लिखे गए वैज्ञानिक लेखों का प्रचार–प्रसार तथा कर्मचारियों की हिन्दी में लेखन और अभिव्यक्ति क्षमता को प्रोत्साहित करना है।
5. प्रयोगशाला में प्रतिवर्ष हिन्दी पखवाड़ा समारोह का भव्य आयोजन किया जाता है। गत वर्ष 15-29 सितंबर, 2014 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्टाफ के लिए विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं तथा कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता हैं। हिन्दी पखवाड़ा के आरंभ में हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष प्रयोगशाला की वार्षिक गृहपत्रिका **''एनसीएल–आलोक''** का विमोचन किया जाता हैं।
6. प्रयोग शाला के हिन्दी कक्ष द्वारा प्रतिदिन हिंदी सुविचार तथा अंग्रेजी शब्द के अर्थ का प्रेषण ई मेल द्वारा सभी कर्मचारियों को किया जाता है, ताकि कर्मचारियों में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न हो सकें।
7. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी दस्तावेज़ द्विभाषी जारी किए जाते हैं।
8. इस प्रयोगशाला में राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।
9. केंद्र सरकार, राजभाषा नियम 1976 (संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए प्रयोग) के नियम 10(4) के अंतर्गत इस प्रयोगशाला को ऐसे कार्यालयों के रूप में, जिसके 80% से अधिक कर्मचारी वृंद ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, राजपत्र में अधिसूचित किया गया है।
10. प्रयोगशाला के 98% कर्मचारियों को हिन्दी, हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।
11. प्रशासन अनुभाग के कुछ अधिकारियों/कर्मचारियों तथा वैज्ञानिक स्टाफ को कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रशिक्षित किया गया है तथा शेष स्टाफ को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया जारी है।

वर्तमान में विज्ञान के मूल काम अंग्रेजी में है । मेरा विश्वास है कि अगले दो दशक में विज्ञान के मूल काम हमारी भाषाओं में आने शुरू हो जायेंगे, तब हम जापानियों की तरह आगे बढ़ सकेंगे । **– डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम**

12. प्रयोगशाला में सभी मानक प्रपत्र, फार्म तथा आवेदन पत्र इत्यादि द्विभाषी रूप में तैयार किये गए हैं।

13. प्रयोगशाला की वेबसाइट को द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किया गया है।

14. प्रयोगशाला के सभी कम्प्यूटरों में द्विभाषी रूप से कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है।

15. प्रयोगशाला के सभी साइनबोर्ड, नाम–पट्टों तथा रबर की मोहरों को द्विभाषी बनाया गया है।

16. प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मिली–जुली भाषा का उपयोग किया जाता है।

17. प्रयोगशाला के निदेशक एवं हिन्दी अधिकारी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लेते हैं।

18. प्रयोगशाला की शीर्ष स्तर की प्रबंध परिषद की बैठकों की कार्यसूची द्विभाषी रूप में तैयार की जाती है और इन बैठकों में हिन्दी में भी चर्चा की जाती है।

19. प्रयोगशाला के पुस्तकालय हेतु प्रतिवर्ष हिन्दी पुस्तकें खरीदी जाती हैं।

20. प्रयोगशाला में आयोजित होने वाले समारोहों, व्याख्यानों एवं संगोष्ठियों की रिपोर्ट हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सीएसआईआर–समाचार में प्रकाशनार्थ राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्त्रोत संस्थान (निसकेयर), नई दिल्ली को नियमित रूप से भेजी जाती है।

21. सीएसआईआर मुख्यालय की मौलिक (विज्ञान) पुस्तक लेखन योजना, वैज्ञानिक कार्यों में हिन्दी पुरस्कार योजना तथा विज्ञान चिंतन लेखमाला आदि योजनाएँ इस प्रयोगशाला में लागू हैं। इन सभी योजनाओं में प्रयोगशाला के वैज्ञानिक और कर्मचारी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।

22. इसके अतिरिक्त प्रयोगशाला में आयोजित होने वाले विभिन्न वैज्ञानिक कार्यक्रमों तथा अन्य समारोहों का संचालन भी हिन्दी माध्यम से किया जाता है।

23. इस प्रयोगशाला के वैज्ञानिक देश के विभिन्न संस्थानों में राजभाषा के माध्यम से आयोजित होने वाली संगोष्ठियों तथा विज्ञान सम्मेलनों में भाग लेकर हिन्दी भाषा में अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते हैं।

24. प्रयोगशाला से जारी होने वाली सभी निविदा सूचनाएँ तथा विज्ञापन इत्यादि द्विभाषी रूप में प्रकाशित किए जाते हैं।

26. प्रयोगशाला के स्टाफ को हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने की दृष्टि से यहाँ विभिन्न राजभाषा प्रोत्साहन योजनाएँ लागू हैं।

27. प्रयोगशाला में हिन्दी काम–काज को बढ़ावा देने ताथा राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु 3 अनुभागों को हिन्दी में कार्य करने के लिए निर्दिष्ट किया गया है।

28. प्रयोगशाला में प्राप्त हिन्दी पत्रों के उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में ही दिये जाते हैं तथा **क** तथा **ख** क्षेत्रों को जाने वाले अधिकांश पत्रों के लिफाफों पर पते हिन्दी भाषा में लिखे जाते हैं।

29. राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम तथा राजभाषा संबंधी निर्देशों से सभी विभाग/प्रभाग प्रमुखों को अवगत कराया जाता है।

✦ ✦ ✦

***एकता की जान है,***
***हिन्दी देश की शान है ।***

---

हमारे निर्माता ने हमारे मष्तिष्क और व्यक्तित्व में असीमित शक्तियां और क्षमताएं दी हैं, ईश्वर की प्रार्थना हमें इन शक्तियों को विकसित करने में मदद करती है ।

# हिन्दी पखवाड़ा समारोह रिपोर्ट

सीएसआईआर–एनसीएल में दिनांक 15 से 29 सितंबर, 2014 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा समारोह आयोजित किया गया। हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं, हिन्दी संबंधी गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें प्रयोगशाला के स्टाफ एवं शोध छात्रों ने बड़ी संख्या में उत्साहपूर्वक प्रतिभाग लिया ।

**हिन्दी पखवाड़ा समारोह के दौरान निम्नांकित गतिविधियां आयोजित की गई –**

1. दिनांक 15 सितंबर 2014 : हिन्दी – पखवाड़ा शुभारंभ एवं एनसीएल आलोक का लोकार्पण
2. दिनांक 16 सितंबर 2014 : शब्द ज्ञान प्रतियोगिता
3. दिनांक 17 सितंबर 2014 : सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता
4. दिनांक 18 सितंबर 2014 : हिन्दी काव्यपाठ प्रतियोगिता
5. दिनांक 19 सितंबर 2014 : हिन्दी शुद्धलेखन प्रतियोगिता (केवल चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए)
6. दिनांक 23 सितंबर 2014 : हिन्दी कार्यशाला
7. दिनांक 29 सितंबर 2014 : पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 15 सितंबर 2014 को प्रयोगशाला में हिन्दी पखवाड़ा शुभारंभ तथा वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'एन.सी.एल. आलोक' का लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आकाशवाणी, पुणे के उपमहानिदेशक श्री. आशीष भटनागर तथा अध्यक्ष के रूप प्रयोगशाला के निदेशक डॉ. सौरव पाल उपस्थित थे । मुख्य अतिथि श्री. आशीष भटनागर ने अपने संबोधन में कहा कि 'वास्तव में भारतीय भाषाओं का आयोजन पूरे भारतीय जनमानस के साथ जुड़ा हुआ है । यह अवसर हमें अपनी स्वाधीनता और राष्ट्रीय अस्मिता की याद दिलाता है ।' उन्होंने एनसीएल द्वारा राजभाषा पत्रिका एनसीएल आलोक के प्रकाशन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि 'विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखों को जन–मानस की सरल भाषा में प्रस्तुत किया जाना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है, इससे निश्चय ही हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार होगा एवं विज्ञान के क्षेत्र में भी इस भाषा का उपयोग बढ़ेगा'। निदेशक डॉ. सौरव पाल ने अपने संबोधन में कहा कि 'इस अवसर पर हम सभी केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के माध्यम से देश की अखंडता बनाए रखने की प्रतिज्ञा भी करते हैं। ये भाषाएँ ही हमारी भारतीयता की पहचान हैं। अत: हमें हिन्दी के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी सम्मान करते हुए राजभाषा के विकास की दिशा में सतत रूप से प्रयास करते रहना होगा '।

दिनांक 29 सितंबर 2014 को आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित निदेशक डॉ. सौरव पाल ने कहा कि – 'हिन्दी पखवाड़ा मनाना भारत सरकार की राजभाषा नीति को सफल बनाने की दिशा में किए जा रहे उपायों में से एक है । इस प्रकार के आयोजन द्वारा हम अपने रोज के कामकाज में राजभाषा के प्रयोग का संपल्प लेते हैं । इस अवसर पर हम प्रयोगशाला की ओर से वार्षिक राजभाषा पत्रिका एनसीएल आलोक को प्रकाशित करते हैं और विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित करके कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित करते हैं। मुझे विश्वास है कि हमारी प्रयोगशाला के सभी वैज्ञानिक और अधिकारी/कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करके राष्ट्रसेवा में अपना अमूल्य योगदान देंगे '।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. सुधीर कुमार (प्राध्यापक–इग्नू) ने कहा कि – 'हिन्दी भाषा सभी भाषा–भाषियों के बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतु का और संपर्क बनाने का कार्य करती है । देश के आर्थिक, सामाजिक विकास और राष्ट्रीय अखंडता में हिन्दी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिस प्रकार हम अपने राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगीत का सम्मान करते हैं, उसी तरह हम सबको अपनी राजभाषा–राष्ट्रभाषा हिन्दी का भी सम्मान करना चाहिए और अपनी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करके उसके विकास में अपना योगदान देना चाहिए ।'

समारोह के आरंभ में श्री उमेश गुप्ता, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने हिन्दी पखवाड़े की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला । श्रीमती प्रेमा बालकृष्णन, प्रशासन नियंत्रक ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया । समारोह की कार्यवाही का संचालन हिन्दी अधिकारी श्रीमती स्वाति चढ्ढा ने किया ।

---

मैं हमेशा इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार था कि मैं कुछ चीजें नहीं बदल सकता । **– डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम**

# *हिन्दी भाषा के संबंध में विभिन्न विद्वानों के विचार*

अगर हमें हिंदुस्तान को एक राष्ट्र बनाना है तो राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हो सकती है ।
**– महात्मा गांधी**

राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ ।
**– डॉ. राजेंद्र प्रसाद**

हिन्दी भाषा भारत की अमरवाणी है, यह स्वतंत्रता और संप्रभुता की गरिमा है ।
**– राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी**

हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिससे माध्यम से सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। **– स्वामी विवेकानंद**

हिन्दी देश की एकता की कड़ी है । **– डॉ. जाकिर हुसैन**

# साहित्यिकी

# सपनों का भारत स्वयं बनाएँ

**श्री ओमकार सिंह कुशवाहा,** वरिष्ठ शोधछात्र, सी.एस.आई.आर–एन.सी.एल., पुणे

यह लेख माननीय डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी के व्याख्यानों से प्रेरित है। मई 2014 को सीएसआईआर–एनसीएल में उन्होंने 900 शोध छात्रों से खचाखच भरे सभागृह में जब पदार्पण किया तो जैसे सभी का वर्षों लम्बा इंतजार समाप्त हुआ और पूरा सभागृह तालियों से उनके स्वागत में गूंज उठा। माननीय डा. कलाम का व्यक्तित्व, ऊर्जा तथा जोश देखते ही बन रहा था तथा हर कोई खुद को भाग्यशाली समझ रहा था।

डा. कलाम का जीवन अत्यंत विषमताओं से भरा हुआ था। शायद इन्हीं विषमताओं से तपकर भारतवर्ष को एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सफल वैज्ञानिक, इंजीनियर, लोकप्रिय एवं आकर्षक व्यक्तित्व,दूरदर्शी दार्शनिक, सफल वक्ता, टीम लीडर, सबसे प्रसिद्ध राष्ट्रपति तथा प्रबुद्ध लेखक का समन्वय डा. कलाम के रूप में हमें प्राप्त हुआ।

मित्रों, हममें से शायद ही कोई ऐसा होगा जो उनका लोहा न मानता हो। उनका सादगी और सौम्यता से भरा व्यक्तित्व एक महापुरूष की भाँति सभी को अपनी ओर आकर्षित करता था और इन्हीं गुणों के कारण वे निर्विवाद हमारे आदर्श बने हुए हैं।

डा. कलाम का जन्म 15 अक्तूबर 1931 को तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम में हुआ। जिज्ञासा तथा जागरूकता के साथ–साथ अत्यंत मेहनती एवं लग्नशील होना और कर्मयोगी की तरह तपस्या ने उन्हें अद्वितीय व्यक्तित्व प्रदान किया । डा. कलाम की उपलब्धियों एवं पुरस्कारों के बारे में चर्चा करना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा होगा।

डा. कलाम के अनुसार ''भारतवर्ष के पिछले 3000 वर्षों के इतिहास में, दुनियाभर के लोगों ने भारत पर अनगिनत आक्रमण किए, उन्होंने हमारे देश को तथा इसके भूभागों को अपने अधीन किया तथा यहां के जनमानस पर राज किया। अलेक्जेंडर के बाद से ग्रीक, तुर्क, मुगल, पुर्तगाली, अंग्रेज, फ्रांसिसी, डच सभी भारत आए और इसको मनमाने ढंग से लूटा।'' डा. कलाम इस बिंदु को जोर देकर कहते थे कि ''इस सबके बावजूद कभी भी हमने किसी अन्य देश के साथ ऐसा नहीं किया। हमने किसी भी देश को अधीन नहीं बनाया, न ही किसी देश का भूभाग हड़पा, न उनकी संस्कृति, इतिहास सें कोई छेड़छाड़ की और न ही किसी प्रकार की जीवनशैली थोपी। ऐसा आखिर क्यों? क्योंकि हम भारतवासी दूसरों की स्वतंत्रता का सम्मान करते हैं। डॉ. कलामजी जी इसी आधार पर भारतवासियों को देश के लिए संकल्पबद्ध करने के लिए तीन परिकल्पनाएँ (विजन) साकार करने हेतु प्रेरित करते थे।

1. **आजादी** : हमें हर कीमत पर अपनी आजादी बचाकर रखनी होगी क्योंकि जब तक हम स्वतंत्र नहीं होंगे, कोई हमें सम्मान नहीं देगा।

---

आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर आप अपनी आदतें बदल सकते है और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देगी

**– डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम**

2. **विकास** : आज भारतवर्ष हर क्षेत्र में विश्व के अन्य अग्रणी देशों को मात देने की क्षमता रखता है फिर भी हम आत्मविश्वास की कमी से ग्रसित क्यों हैं? हमें विकसित एवं आत्मनिर्भर देश के रूप में विश्वपटल पर भारत को स्थापित करना ही होगा।

3. **विश्वशक्ति** : भारत को एक विश्वशक्ति के रूप में पहचान बनानी है फिर चाहे वो विज्ञान प्रौद्योगिकी क्षेत्र हों, वाणिज्य एवं पर्यटन का क्षेत्र या फिर सैन्य शक्ति हो । विश्वशक्ति बनने से ही हमारा राष्ट्र गौरवान्वित होगा।

डा. कलाम के अनुसार हमारे देश का मीडिया बहुत ही नकारात्मक है। हम क्यों अपने देश में अपनी ही शक्तियों तथा उपलब्धियों को गिनाने में इतना असहज महसूस करते हैं ? हम एक महान राष्ट्र हैं जो कि अनंत आश्चर्यपूर्ण विजय कथाओं से भरा पड़ा है पर हम उनकी अनदेखी करते हैं। उदाहरण के लिए हम विश्व में दुग्ध उत्पादन में प्रथम, रिमोट सेंसिग में प्रथम, गेहूँ उत्पादन में द्वितीय, चावल उत्पादन में द्वितीय स्थान रखते हैं पर इसकी चर्चा तक नहीं होती। हमारा मीडिया प्रमुखता से खराब समाचार, असफलताओं तथा आपदाओं को ही प्रकाशित करता एवं दिखाता है। इसी के विपरीत, तल अबीव की एक घटना को यादकर वे कहते थे कि उन्हें एक इजराइली समाचार पत्र पढ़ने का मौका मिला। यह समाचार पत्र ठीक एक दिन पहले घटित बहुत सारे आक्रमण, विस्फोटों एवं बहुत सारे लोगों के मारे जाने के बाद का था, परन्तु समाचार पत्र का मुख्य पृष्ठ एक व्यक्ति द्वारा पाँच वर्ष के अन्तराल में अपने अनुपजाऊ मरूस्थलीय भूभाग को वनाच्छादित करने के समाचार तथा अन्य प्रोत्साहित करने वाले चित्रों से भरा पड़ा था। सभी प्रकार के खराब समाचारों को अन्दर के पन्नों में अन्य खबरों के बीच में छापा गया था। जबकि भारत में हम सिर्फ मृत्यु, बीमारी, शोक, अपराध, तथा आतंकवाद के बारे में ही पढ़ते हैं। हम इतने ज्यादा नकारात्मक क्यों हैं?

एक अन्य संदर्भ में वे पूछते थे कि हम एक स्वतंत्र राष्ट्र होने के बावजूद विदेशी वस्तुओं के आदी क्यों हो गए? हमें विदेशी टेलिविजन, विदेशी कपड़े, विदेशी तकनीक आदि–आदि चाहिए, क्यों?

क्या हम इस बात से अनजान (अनभिज्ञ) हैं कि आत्म सम्मान सिर्फ आत्मनिर्भरता से आता है? भारत पिछड़ा देश नहीं हैं, यह एक अतिविकसित देश बनें इस दिशा में हमें मिलकर कार्य करना चाहिए । अतः भारतीय बनें एवं भारतीय सामान खरीदें । यहां पर ''कलाम'' जी द्वारा दिए गए प्रमुख ग्यारह दर्शन सिद्धान्तों का उल्लेख एवं अनुकरण करना इस दिशा में फलदायी होगा।

1. सरल, जिम्मेदार तथा मेहनती लोग ईश्वर द्वारा धरती पर रचित सर्वश्रेष्ठ रचना हैं और ईश्वर द्वारा विशेष सम्मान के पात्र होते हैं।
2. किसी व्यक्ति के जीवन में उजाला लाना श्रेष्ठ कार्य है।
3. जीवन को अर्थहीन मत जियो, इसे अर्थपूर्ण बनाने हेतु दूसरों का आशीर्वाद प्राप्त करो, माता–पिता की सेवा करो। अपने से बड़े तथा गुरूजनों का आदर सम्मान करो एवं देश से अटूट प्रेम करो।
4. दान देने के अलावा (अतिरिक्त ) क्षमादान भी करें ।
5. अपनी क्षमता अनुसार या कम–से–कम दो गरीब बच्चों को आत्म निर्भर बनाने के लिए शिक्षा में सहायता करो।
6. सरलता एवं परिश्रम का मार्ग अपनाना चाहिए क्योंकि वही सफलता का एकमात्र मार्ग है।
7. प्रकृति से प्रेम करो तथा इससे सीखो, जहाँ सब कुछ दिया हुआ है।
8. हमें मुस्कुराहट एवं प्रसन्नता का परिधान अवश्य धारण करना चाहिए तथा आत्मा को गुणों का परिधान पहनाना चाहिए ।
9. समय, धैर्य एवं प्रकृति हर प्रकार की पीड़ाओं को दूर करने वाले उत्तम चिकित्सक हैं।
10. अपने जीवन में उच्चतम एवं श्रेष्ठ लक्ष्य रखो और प्राप्त करो।
11. प्रत्येक क्षण का उपयोग रचनात्मकता में करो, समय व्यर्थ मत करो।

मित्रों, आदरणीय डा. कलाम द्वारा कहा गया प्रत्येक वाक्य अत्यंत मूल्यवान है । अतः हम सभी को इनका अनुकरण करके अपने जीवन को सफल एवं गौरवान्वित बनाना चाहिए।

अब बात करते हैं आज के 125 करोड़ आबादी वाले भारत की– एकता में अनेकता, फिर चाहे वह भौगोलिक परिस्थितियाँ हो, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विचारधाराएँ हों, भाषाएँ, खानपान आदि यही तो विश्वपटल पर भारत को अद्वितीय पहचान दिलाते हैं। यह हम सब भारतवासियों का कर्तव्य है कि समेकित प्रयास से प्रत्येक व्यक्ति को आगे लाने का प्रयास करें एवं सम्मान दें।

सृजनात्मकता तो यहां की जलवायु में विद्यमान है, शायद इसीलिए यह देश ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति, भाषा तथा धर्म की एक

प्रत्येक क्षण का उपयोग रचनात्मकता में करो, समय व्यर्थ मत करो। – **डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम**

प्रयोगशाला के रूप में पहचान बनाए हुए है। इसलिए हमें किसी भी प्रकार की नकारात्मकता से ऊपर उठकर अपने देश की समस्त समस्याओं के उत्तर स्वयं खोजने होंगे। ऐसा क्या कारण है हमें अपनी छोटी–से–छोटी आवश्यकता के लिए अन्य देशों की टेक्नालॉजी (तकनीक) के लिए इंतजार करना पड़ता है जबकि हमारे देश के लोगों में वह सभी खूबियाँ है कि जो चाहे स्वयं निर्मित कर लें। उदाहरण के लिए, अपनी जरूरतों के लिए आवश्यक सुपर कम्प्युटर (संगणक) हमनें स्वयं बनाए, उपग्रह (सेटेलाइट्स) स्वयं निर्मित किए, उन्नत रक्षा मिसाइलों का निर्माण अपने देश में हुआ, परमाणु शक्ति सम्पन्नता अपनी मेहनत से प्राप्त की, मंगल ग्रह का सफल संचालन अपने देश में हुआ आदि–आदि ।

कहने का तात्पर्य है कि जब हममें इतनी काबिलियत एवं हुनर हैं तब किन कारणों से हम हीन भावनाओं से भरे हुए हैं। क्यों हमें भारतीय होने का गर्व नहीं हो पाता? क्यों हमें विदेशी प्रौद्योगिकी तथा वस्तुओं के उपयोग में इतना आनंद आता है? यह प्रश्न सिर्फ प्रश्न नहीं हैं हमें इनका उत्तर अवश्य देना चाहिए। दूसरों को सम्मान देना हमारी संस्कृति में है, परन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं कि हम अपनों की उपेक्षा एवं अपमान करें। शायद हम अन्य लोगों को सम्मान देने के इतने ज्यादा अभ्यस्त हो गए कि भारतीय बाजारों में सुई से लेकर हवाई जहाज तक सब कुछ या तो विदेशों से आयातित प्रौद्योगिकी पर आधारित है या फिर सीधे आयात किया हुआ है। यह एक प्रकार से यहां के व्यापारियों, वैज्ञानिकों, शिक्षकों, कारीगरों आदि का अपमान नहीं तो और क्या है? जबकि देश इन्हीं लोगों के समन्वय से बना है।

अब प्रश्न यह उठता है कि फिर हमारे देश में हमारी क्या भूमिका रह जाती है? ऐसा प्रतीत होता है जैसे भारत एक अंतर्राष्ट्रीय बाजार हो और हम उपभोक्ता । इसके उलट आवश्यकता है ''भारतीय बनें, भारतीय खरीदें'' मानसिकता को बढ़ावा देने की, राष्ट्रहित में कदम उठाने की, आज देश की समस्याओं के निदान हेतु एक सकारात्मक एवं सृजनात्मक सोच की और इनका उत्तर एवं निदान खोजने के लिए प्रबुद्ध लोगों को शहरों सें गाँवों की ओर रूख करना ही होगा।

आओ, हम सब मिलकर ''सुजलाम् सुफलाम्, मलयज शीतलाम्'' को चरितार्थ करें और डॉ. कलाम जी के आदर्शों को जीवन में अपनाये। यही हम सबकी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

✦ ✦ ✦

## नेताजी सुभाषचंद्र बोस की महानता

बहुत पहले की बात है। कोलकाता की एक गंदी बस्ती में हैजे का प्रकोप फैला हुआ था। वहां एक छोटा सा बालक अपने साथ अन्य बच्चों को लेकर बीमारों की सेवा करने में जुटा हुआ था। उस बस्ती में एक नामी अपराधी भी रहता था। जब भी बच्चे हैजे से पीड़ित व्यक्तियों की मदद करते थे, वह उनके काम में बाधा डालता रहता था। दुर्भाग्यवश एक दिन वह अपराधी स्वयं भी हैजे की चपेट में आ गया । छोटे बालक को जब यह बात पता चली तो वह अपने बच्चों के दल को लेकर उसके पास पहुंच गया । नन्हे बच्चों को अपनी सेवा में लगा देख अपराधी का दिल पिघल गया और वह फूट–फूट कर रोने लगा। उसे रोते देख बालकों के नेता ने समझा कि वह मौत से भयभीत होकर रो रहा है। वह बालक बोला, 'भैया! आप घबराते क्यों हैं? तुम्हारा घर बहुत गंदा था, इसलिए तुम हैजे की चपेट में आ गए। अब हम सबने मिलकर तुम्हारे घर की सफाई कर दी है और जब तक तुम बिलकुल ठीक नहीं हो जाते, तब तक हम सभी मिलकर तुम्हारी अच्छी तरह से देखभाल करेंगे। अब बस तुम आराम करो।' बालक की बात सुनकर वह अपराधी बच्चे के पैर पकड़ते हुए बोला, 'बेटे ! मेरा घर ही नहीं, मन भी गंदा था और तूने आज उसकी भी सफाई कर दी। आज से मैं सारे बुरे कार्य बंद करने की प्रतिज्ञा लेता हूं । मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगा कि तुम इसी प्रकार समाज और देश की सेवा करते रहो और तुम्हारी महानता की हर जगह चर्चा होती रहे।' इतिहास गवाह है कि उस अपराधी की बात सच साबित हुई । उसी बालक को आज हम सब नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नाम से जानते हैं।

यदि हम स्वतंत्र नहीं हैं तो कोई भी हमारा आदर नहीं करेगा । **– डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम**

# सियाचिन ग्लेशियर - एक सर्वोच्च युद्धभूमि

**फ्ला. लेफ्ट. पराग र. चिटनवीस,** वरिष्ठ सुरक्षाअधिकारी, सीएसआईआर– एनसीएल, पुणे

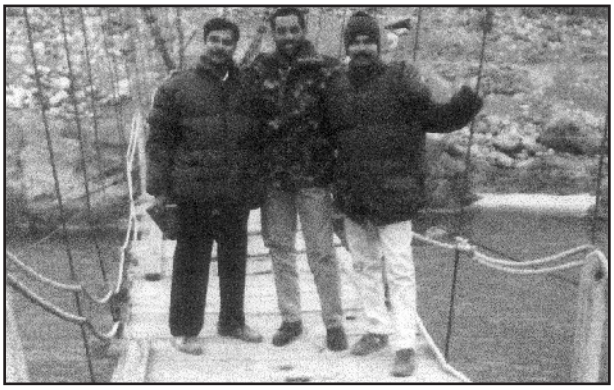

सुबह के साढ़े दस बजे थे और मैं यूनिट कमांडर द्वारा दिये गए एक महत्वपूर्ण कार्य में व्यस्त था कि अचानक फोन की घंटी बज उठी – 'सर, आपको सी.ओ. साहब ने तुरंत बुलाया है', फोन पर यह घबराहट भरा स्वर हमारे सी.ओ. साहब के दफ्तर से वारंट आफिसर शर्मा जी का था। मैं उठा, अपनी वर्दी तथा टोपी ठीक की तथा सी.ओ साहब के कमरे में पहुँचा, जहाँ पहले से हमारे यूनिट आपरेशन्स ऑफिसर स्क्वाड्रन लीडर गुप्ता, फ्लाइट लेफ्टिनेंट छाबड़ा तथा वारंट ऑफिसर शर्मा मौजूद थे। 'जय हिन्द सर' मैने सी.ओ. साहब को सैल्यूट किया, 'आओ चिट्स, बैठो', उन्होंने अपनी भारी आवाज में कहा। मैं उनके समक्ष एक खाली कुर्सी पर बैठ गया तथा वहाँ बैठे मेरे वरिष्ठ अधिकारियों का अभिवादन किया जो अब भी बड़ी–बड़ी आँखों से मुझे देख रहे थे। सी.ओ. साहब तुरंत मुद्दे पर आ गये और बोले, 'चिट्स हमें तुम्हारी मदद चाहिए, कमांड से एक सिग्नल आया है, उन्होंने फ्लाइट लेफ्टिनेंट छाबड़ा को अस्थायी ड्युटी हेतु लेह (लद्दाख) पहुँचने का आदेश दिया है और यहाँ परेशानी यह है कि फ्ला. लेफ्ट. छाबड़ा एक गंभीर कार्य हेतु छुट्टी पर घर जा रहे हैं, क्या तुम इस गुप्त मिशन पर उनकी जगह जा सकते हो? तुम्हें फ्ला. लेफ्ट छाबड़ा सारी बातें समझा देंगे'। मुझे पहले ही पता था कि हमारे पड़ोसी देश की गलत गतिविधियों को लेकर इस भाग में तनाव पैदा हो गया था, मेरे लिए यह एक अच्छा मौका था अपने भारत देश, अपनी मातृभूमि की सेवा करने का तथा युद्ध जैसी स्थिति को बिल्कुल पास से देखने का तथा उसे महसूस करने का। मैंने बिना कोई क्षण गंवाए 'हाँ' कर दी । इस पर सी.ओ. साहब बोले 'यंग मैन देन ऑल दी बेस्ट एण्ड गेट रेडी, AN - 32 वन इज कमींग टू पिक यू अप फ्रॉम आग्रा, इट विल लैंड एट तेंजपुर (असम) एअर फिल्ड आफ्टर वन अवर' । मैंने फिर सी.ओ. साहब को सेल्यूट किया, फ्ला. लेफ्ट छाबड़ा से ब्रीफींग प्राप्त की तथा जीप में जा बैठा । जीप काजीरंगा से लगे हुए जंगलों से होती हुई वायु सेना आफिसर्स मेस पहुँची, मैं दौड़ कर अपने कमरे में गया, सारा आवश्यक समान एक बैग में भरा तथा पहले से तैयार अटैची तथा इस बैग को लेकर फिर जीप में जा बैठा । जीप टारमैक की ओर दौड़ रही थी और मैं खुश था कि भारतीय वायु सेना में भर्ती होने के बाद पहली बार कुछ ऐसा अनुभव प्राप्त करने जा रहा था जिसकी हर फौजी को प्रतीक्षा रहती है। टारमैक पर पहुँचते ही, ए.टी.सी अधिकारी फ्लाईंग आफिसर मंगेश ने हँसते हुए कहा, 'सर जी, वो सामने आपका रथ आ रहा है'। सामने से एक AN-32 हवाई जहाज टैक्सी ट्रैक पर दौड़ता हुआ टारमैक की ओर बढ़ रहा था । कुछ ही मिनटों में मैं अपने

महान सपने देखने वालों के महान सपने हमेशा पूरे होते है ।

सामान के साथ एक लम्बे हवाई सफर पर निकल पड़ा था। इस AN-32 ने दिल्ली तक, एक डार्नियक ने चंडीगढ़ तक तथा वहाँ से एक IL-76 हवाई जहाज ने मुझे सकुशल लेह तक पहुँचा दिया था। मेर IL-76 का सफर वर्णनीय था। IL-76 की खिडकी से मैंने वह दृश्य देखा था जो शायद ही कोई सपने में भी देख सकता था। हम हिमालय की ऊँची–ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं पर से उड़ रहे थे जो बर्फ की सफेद चादर से ढँके हुए थे, तभी अचानक ही पायलट का स्वर सुनाई पड़ा, 'हम कुछ ही मिनटों में लेह हवाई अड्डे पर लैंड करने वाले हैं,' मैं फिर खिड़की से नीचे देखने लगा, बर्फ से ढँके पर्वत, बर्फ से ढँकी धरती और दूर एक छोटी सी काली रेखा जो धीरे–धीरे बड़ी हो रही थी और यह वास्तव में लेह की हवाई पट्टी थी, जहाँ हम उतरने वाले थे। धड़–धड़ की बड़ी सी आवाज के साथ हमारा विशाल हवाई जहाज हिला तथा जमीन को छूते ही हवाई पट्टी पर दौड़ने लगा। पलक झपकते ही हमारा IL-76 लेह हवाई अड्डे पर खड़ा था । मैं बड़ी उत्सुकता से पिछला रैम्प खुलने की प्रतीक्षा करने लगा। तभी फिर एक बार पायलट का स्वर गूंजा, 'हम लेह हवाई–अड्डे पर उतर चुके हैं, कृपया अपने गरम कपडे पहन लें, बाहर का तापमान शून्य से $16^0$ ($-16^0$c) कम है' । यह सुनते ही मैं अपनी वर्दी पर खास प्रकार का डाऊन जैकेट पहनने में व्यस्त हो गया और फिर एक बर्फीली ठंडी हवा के झोंके ने मेरे चेहरे को छू लिया। पिछला रैंप खुल रहा था और बाहर मानो स्वर्ग सा सुंदर– दृश्य मुझे बुला रहा था।

हम इस समय समुद्र स्तर से लगभग 11,562 फीट की ऊँचाई पर खड़े थे। ए.टी.सी. टावर के बाहर एक जिप्सी खड़ी थी और साथ ही खड़े थे फ्ला.लेफ्ट.रेड्डी तथा फ्लाईंग आफिसर पी.के. सिंग, जो मुझे लेने आए थे। हम अम्बाला में पहले भी मिल चुके थे और शायद इसलिए दोनों के चेहरे खिले हुए थे और दोनों ने ही मेरा स्वागत खूब गरमजोशी से किया । हम पुरानी यादों को ताजा करते हुए ऑफिसर्स मेस की ओर चल दिए । हम सीधे आफिसर्स मेस बंकरर्स पहुँचे, जहाँ मेरे ठहरने का इंतजाम था। मैंने अपना सामान रखा और हम तीनों ग्रुप कैप्टन बाबू, जो यहाँ सी.ओ (कमांडींग आफिसर) थे, से मिलने यूनिट हेडक्वार्टर की ओर चल पड़े। जिप्सी में ही फ्ला. लेफ्ट. रेड्डी ने मुझे इस सुंदर किंतु खतरनाक जगह के विषय पर सारी जानकारी देनी प्रारंभ कर दी थी। सी.ओ. साहब ने इस आपरेशन के संबंध में सारी जानकारी दी तथा मुझे कुछ दिन आराम करने को कहा। पहले मेरी समझ में नहीं आया कि यह आराम किसलिए और फिर धीरे–धीरे मेरे प्रश्नों के उत्तर मिलने लगे।

दरअसल, हमारा शरीर इतनी ऊँचाई पर रहने या काम करने का आदी नहीं होता। जब हम अचानक ऐसे स्थान पर पहुँचते हैं जहाँ सारी परिस्थितियाँ प्रतिकूल होती हैं, जैसे प्राणवायु की कमी, सूखी असामान्य ठंड, अतिरिक्त वायुमण्डलीय दबाव, बर्फ से टकराकर आती प्रखर सूर्य की किरणों आदि, तो हमें अपने शरीर को इन खतरों से बचाना अनिवार्य होता है। यहाँ तापमान शून्य से चालीस डिग्री तक नीचे उतर आता है।

मुझे इस मिशन पर सियाचिन ग्लेशियर तथा इसके आस–पास की भारतीय पोस्टों के कई चक्कर लगाने थे। मुझे इस मिशन पर जाने वाले बाकी साथियों से मिलाया गया जिनमें भारतीय वायु सेना के साथ भारतीय थल सेना के भी अधिकारी थे। हमारा कुल बीस लोगों का यह दल था जो एक Mi - 17 हेलिकॉप्टर की सहायता से यह कार्य करने वाला था।

हमारी पहली उड़ान थाइस (THOISE) कैम्प की ओर थी जो 10070 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। THOISE शब्द का विस्तार है 'Transit Halt of Indian Soldiers Enroute' (to siachen) यहाँ हमें कुछ समय रूकना था। अतः हमें अलग–अलग बंकरों में ठहराया गया। ठण्ड का मौसम उस पर बर्फ से ढ़ँके पहाड़ों के बीच, तापमान $-38^0$C और कैम्प में बिजली की सुविधा नहीं थी। कमरा गरम करने हेतु मिट्टीतेल (केरोसीन) की बुखारी का उपयोग किया जाता था, लेकिन वह भी सीमित समय के लिये। स्नानघर तथा शौचालय हर जगह पर पानी बर्फ बना हुआ था। पीने का पानी बुखारी के समीप रखना पड़ता था अन्यथा वह भी पलक झपकते ही बर्फ बन जाता था। मिट्टी के तेल की बुखारी टीन–पत्रे की पतली सी चादर से बने हुए ड्रम तथा पाईप की एक ऐसी रचना थी जो इस जानलेवा तापमान में हमारे सैनिकों को जीवित रखे हुए थी। परन्तु इस बुखारी के भी कुछ जानलेवा नुकसान थे, जैसे ज्यादा गर्म होने पर यह फट जाती थी और यदि इसकी चिमनियों में कार्बन जम जाए तो सारा धुँआ कमरे में भरकर यह सो रहे आदमी की जान ले लेती थी।

ऐसी असामान्य ठंड में हमारी वर्दी पूरी तरह बदल चुकी थी। ऊनी अंदरूनी कपड़ों की पहली परत, उस पर ऊनी Over-All

आदर्श, अनुशासन, मर्यादा, परिश्रम, ईमानदारी तथा उच्च मानवीय मूल्यों के बिना किसी का जीवन महान नहीं बन सकता है ।

**– स्वामी विवेकानंद**

उस पर डाऊन पक्षी के पंखों का मोटा जैकेट, पैरों में ऊनी मोजे, उस पर स्नोबूट्स, हाथों में चमड़े के मोटे दस्ताने, सर और चेहरे को ढँकती हुई ऊनी टोपी और दिन के समय आँखों पर स्नो–गॉगल या बर्फ की अंधी करने वाली चमक से बचने के लिए खास काला चश्मा । इस भारी लिबास के साथ एक भरी हुई पिस्तौल और एक वॉकी–टॉकी, कुल मिला कर पाँच किलोग्राम का अतिरिक्त भार हर समय प्रत्येक सैनिक पर होता ही था।

थाइस में हमें एक और प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ा – 'भूकंप' । इन पहाड़ों पर 'भूकंप' बहुत ही सामान्य बात थी, लेकिन हमारे लिये नहीं, खास कर तब, जब हमने बड़ी–बड़ी चट्टानों को पहाड़ों से लुढ़ककर बंकरों पर गिरते हुए देखा। यूनिट में कार्यरत एक अर्दली ने, जो एक स्थानीय निवासी था, बताया कि कई बार इससे बड़ी चट्टानें बंकरों में सो रहे सैनिकों पर भी गिरी हैं और कई सैनिक इस वजह से बुरी तरह हताहत हुए हैं, कुछ तो शहीद भी हुए हैं। उसने हमें यह भी बताया कि कई बार यह चट्टानें हवाई–पट्टी पर भी आ जाती हैं, जिससे कई घंटों तक हवाई यातायात प्रभावित हो जाता है।

थाइस तथा हुँडर में हमारा कार्य लगभग समाप्त हो गया था। अब हमें भारतीय बेस कैम्प (सियाचिन) की ओर कूच करना था। हम सभी लोग तैयार हो कर थाइस हवाई पट्टी की टारमैक पर पहुँच गये। यहाँ हमारे Mi-17 हेलीकाप्टर पायलट ने हमें यह सूचना दी कि हम इस हेलीकाप्टर को और आगे नहीं उड़ा सकेंगे, क्योंकि इसमें कुछ तकनीकी खराबी आ गयी हैं जिसे अब चंडीगढ़ से आने वाली इंजीनीयरों की टीम ही ठीक कर सकती है। हमने यह सुन कर राहत की साँस ली कि हमारे लिए वहाँ खड़ा दूसरा, वी. आई. पी. हेलीकाप्टर जो हल्के नीले रंग का था, उड़ने के लिये तैयार है। हम सभी बीस सदस्य अपने सामान के साथ इस हेलीकाप्टर में बैठाए गए। मैं और कैप्टन सतीश कुछ खास कारणों की वजह से कॉकपिट में जा बैठे । पायलट फ्ला.–लेफ्ट. संजीव जैन तथा को–पायलट फ्लाइंग ऑफिसर अरविंद अवस्थी ने सारे प्री–फ्लाइंग चेक पूरे किये तथा इंजन शुरू कर दिया।

एक हल्की सी गड़गड़ाहट के साथ हेलीकाप्टर के दोनों पंखे घूमने लगे और कुछ ही समय में हम बेस कैम्प की ओर उड़ रहे थे। जब दो पहाड़ियों के बीच हमारा Mi - 17 हेलीकाप्टर बादलों में प्रवेश कर जाता तो क्षण भर के लिए ऐसा प्रतीत होता मानो हम अभी किसी पहाड़ी से टकरा जाएंगे और फिर जैसे हम बादलों के कोहरे से बाहर आते तो हमारी जान में जान आ जाती । दोनों ही पायलट बड़े आराम से इस Mi - 17 को उड़ा रहे थे। तभी फ्लाईंग ऑफिसर अवस्थी ने अपना आर.टी.सेट हटाया तथा हमारी ओर मुड़कर कुछ ऐसा कहा जिसे सुनकर मैं तथा कैप्टन सतीश एक दूसरे की ओर मुड़ कर देखने लगे थे। हमने अपनी नजरें उस खास दिशा में घुमा दी थी। दरअसल हमें यह बताया गया था कि हम अब जिस जगह से गुजरने वाले हैं उसके एक ओर भारतीय पोस्ट है तथा दूसरी ओर पड़ोसी देश की पोस्ट है और कई बार इस पोस्ट से हमारे Mi - 17 पर AAG (Anti Aircraft Gun) द्वारा गोलियाँ बरसायी गई हैं। फिर आज तो हम एक वी.आई.पी. Mi - 17 में बैठकर इस स्थान से गुजर रहे थे और शायद हम सभी जानते थे कि आज हम पर गोलियाँ अवश्य बरसेंगी । हम मुश्किल से दो मिनट आगे चले होंगे कि अचानक पायलट के इशारे पर हम झुक गए। उन्होंने हेलीकॉप्टर को ऊपर नीचे तथा दाँए–बाँए हिलाना शुरू कर दिया, जिसे पायलटों की भाषा में Evasive Manoeuvering या बचाव हेतु घूमना कहते हैं। हेलीकॉप्टर के गनर ने भी फायरिंग शुर कर दी थी । जिस ओर फायरिंग हो रही थी उस ओर जब हमारा ध्यान गया तब हमें उस दिशा में कुछ रोशनियाँ जलती–बुझती दिखाई दी। यह जल बुझ रही रोशनियाँ कुछ और नहीं AAG से हमारी ओर चल रही गोलियाँ थी । यह सिलसिला कुल सात मिनट तक चला और फिर हेलीकॉप्टर स्थिर हो गया। हम समझ गए कि हमने वह खतरनाक स्थान अब पार कर लिया था। अब सवाल था – क्या हमारा Mi - 17 सुरक्षित है? दोनों पायलट फिर यंत्रों से खेलने लगे और करीब दस मिनट पश्चात दोनों ने और हम सभी ने राहत की साँस ली । हम सुरक्षित थे।

जल्द ही हमें दूर एक छोटी सी बस्ती दिखाई पड़ी जो हमारा सियाचिन बेस कैम्प था। यह स्थान समुद्र सतह से करीब 12,000 फीट की ऊँचाई पर था। यहाँ उतरते ही हम जान गए थे कि हम एक युद्ध–भूमि पर खड़े थे। हमें तुरंत ही एक बंकर में ले जाया गया। हमें यहाँ भारतीय थल सेना के कई आला–अफसर मिले। अब हमें यहाँ कुछ महीनों तक रहना था। इस स्थान पर दिन और रात, सिर्फ दो ही समय समझ आते थे, ठीक समय का अनुमान लगाना कठिन था। शाम को हमारे दल के सभी सदस्य

---

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है। – **श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी।**

यहाँ पर स्थित शिवजी के मंदिर पहुँचे । हमें बताया गया कि सेना की सभी बटालियन, जो सियाचिन की विभिन्न पोस्टों पर तैनात होने के लिए 'ऊपर' जाती थी, इस शिव मंदिर में दर्शनार्थ जरूर आती थी। हमें यहाँ पर आई हर रेजीमेंट की पताका फहराती दिखाई पड़ी जो 'ऊपर' तैनात होने के लिए गई थी। हम शिवजी के दर्शन कर वापस अपने बंकरों में लौट आए। रात का भोजन समाप्त करते ही हमें बताया गया कि व्यर्थ बंकरों से बाहर न आएँ। इससे पहले कि हम कोई कारण जान पाते, एक जोर के धमाके की आवाज कानों को छू गई। एक सैनिक ने तेजी से दौड़ते हुए चिल्ला कर कहा 'साब जी, बाहर मत निकलिए 'शेलींग' शुरू हो गई है'। अब तक हमें अपनी बोफोर्स तोपों की आवाजें भी आने लगी थी, हम समझ गये कि हमारी सेना जवाबी कार्रवाई कर रही थी । यह धमाके रूक–रूक कर सारी रात गूँजते रहे।

सुबह सब कुछ शांत था, परन्तु प्रकृति नहीं। बाहर तेज बर्फबारी हो रही थी। हमारे बंकर से बाहर की ओर जाने वाले रास्ते पर करीब डेढ़ फीट की बर्फ पड़ी थी तथा हमारी सेना के जवान बर्फ साफ करने के कार्य में व्यस्त थे। यहाँ मुझे बहुत से ऐसे जवान दिखाई दिए जिनके अंगों में से एक या एक से ज्यादा अंग गायब थे। मैंने यह प्रश्न कर्नल सिंग से पूछा जिनके स्वयं के दाहिने पैर का अंगूठा कटा हुआ था और उनका उत्तर बहुत ही भयानक सच्चाई मेरे सामने ले आया। उन्होंने हँसते हुए कहा 'अरे कुछ नहीं यार, Frost bite की वजह से मेरा अंगूठा Dead हो कर कट गया' । उन्होंने जितनी सहजता से उत्तर दिया था, बात उससे कहीं ज्यादा गंभीर थी। दर असल, इतने कम तापमान में हमारे अंग जैसे नाक, कान, ऊँगलियाँ यदि बाहर के वातावरण और ठंडी हवा में काफी समय expose हो जाते थे तो यह सुन्न हो जाते थे। ऐसी स्थिति में यदि यह अंग पानी या पसीने के साथ इस ठंड में expose होते थे तो उस व्यक्ति के कुछ समझ पाने से पहले ही जम जाते और रक्त प्रवाह के अभाव में यह Dead हो जाते । इसका एहसास उस व्यक्ति को तब होता जब वह बुखारी से गर्म किये गए किसी कमरे में थोड़ा समय बिताता। पर तब तक बहुत देर हो चुकी होती । यह मरा हुआ अंग 'टक' की आवाज से शरीर से अलग हो जाता था।

इसके अलावा हमारा हेलीकॉप्टर जब भी किसी पोस्ट के पास पहुँचता तो वहाँ तैनात जवान हेलीकाप्टर के साथ–साथ नीचे दौड़ने लगते। एक दिन उतरने पर मैंने एक जवान से पूछा कि वह हेलीकाप्टर के साथ क्यों दौड़ रहा था । उसका जवाब वाकई विचलित करने वाला था– 'साब जी, दो महीनों से घर से चिठ्ठी नहीं आई है, इसलिए सोचा शायद इस जहाज में हमारी चिठ्ठियों का थैला आया हो, शायद आप ऊपर से अभी थैला फेंकोगे, इसी आशा में दौड़ रहा था'। शायद यह परिस्थिति अब नहीं है। हमारा विज्ञान इतना तरक्की कर गया हौ कि अब हमारे जवानों के अंग किसी Frost bite से ना कटते हो, अब हमारे जवानों के पास मोबाइल फोन तथा सैटलाइट फोन उपलब्ध हो, जो तब नहीं थे।

इस सब के बावजूद हमारी सेना के जवान बरसों से यहाँ डटे हुए हैं, वे युद्ध लड़ रहे हैं, अपनी भारत माँ की सरहदों की रक्षा के लिए।

हमारी पूरी टीम ने यहाँ पूरे छः महीने बिताए। हमारा कार्य समाप्त हो गया था। हमें जिस कार्य के लिए भेजा गया था उसकी पूरी रिपोर्ट तैयार थी तथा एक प्रति सेना मुख्यालय भेजी जा चुकी थी। हमारे दल के सभी सदस्य खुश थे कि हमें जो कार्य सौंपा गया था वह हमने पूरी जान लगा कर पूर्ण किया था और इसमें हमें सफलता प्राप्त हुई थी। हम दूसरे ही दिन लेह के लिए प्रस्थान करने वाले थे जहाँ से हमें IL-76 द्वारा पहले चंडीगढ़ तथा वहाँ से दिल्ली जाना था और यहाँ से हमें हवाई जहाजों द्वारा अपनी–अपनी यूनिट लौट जाना था।

कर्नल सिंग और उनकी रेजीमेंट ने हमारे दल के सम्मान में एक पार्टी रखी थी । इस पार्टी में ड्युटी पर तैनात सैनिकों के अलावा सभी सैनिक उपस्थित थे। कहते हैं फौजी बड़े सख्त जान होते हैं, लेकिन इस पार्टी में मैने कई सैनिकों की आंखें नम देखी, जिन्हें वे अपनी हँसी के पीछे छुपाते नजर आए । अंत में कर्नल सिंग ने दल के सभी सदस्यों को एक–एक बैटन भेंट की जो गुलाब की लकड़ी (Rose wood) से बनी थी और ऐसी जमीन जहाँ गुलाब की झाड़ियाँ बहुतायत में पाई जाती है उसे 'सियाचिन' कहते हैं। मैंने आज भी यह बैटन बहुत सम्भाल कर रखी हैं। यह बैटन मुझे आज भी हमारे लाड़ले भारत देश के सच्चे सपूतों की, उन फौजियों की याद दिलाती है जो हँसते–हँसते देश पर कुर्बान होने को तैयार रहते हैं।

मेरा यह लेख इन सभी वीर सैनिकों को समर्पित है–

**–: जय हिन्द :–**

✦ ✦ ✦

हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है। – **श्री शंकरराव कप्पीकेरी**

# बाल जीवन एवं आधुनिक परिवेश

**श्रीमती चंदना रॉयवर्धन,** सी.एस.आई.आर–एनसीएल, पुणे.

आज हमारा समाज जिन विसंगतियों, विषमताओं, विपदाओं के दौर से गुजर रहा है, वहाँ राष्ट्र के भविष्य, बाल समाज के मनोविज्ञान को समझना, उनके आसपास के वातावरण को समझना आवश्यक हो गया है। आज के बालक कल के वरिष्ठ नागरिक होंगे, और उन पर ही राष्ट्र की उन्नति की जिम्मेदारी होगी। मेरे मस्तिष्क में लगातार यह प्रश्न खड़ा हो उठता है कि आज बालवर्ग कैसा जीवन जी रहा है!!! उसके चारों ओर किस तरह का परिवेश है!!! उसकी क्या समस्याएँ हैं !! उसे किस तरह सुधारा जा सकता है इत्यादि। यदि बाल जीवन ही न सुधारा गया तो देश के भविष्य के बारे में कई प्रश्न खड़े हो सकते हैं।

आधुनिकता के परिणामस्वरूप आज का बाल जीवन बदले हुए स्वरूप में है। आधुनिक समाज में पर्यावरण, प्रदूषण, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ, लिंग भेद से जुड़ी समस्याएँ, नैतिक मूल्यों से जुड़ी समस्याएँ है इनसे घिरे बालकों की मानसिकता समझने के लिए मेरे निजी स्वार्थ को इस लेखनी में समाहित करते हुए मैं पालकों को आज के परिवेश के बारे में सचेत करना चाहती हूँ। बालकों के हित में लिखना ही मेरा निजी स्वार्थ है। आज के अभिभावकों को अगर किंचित भी लाभ इस लेख के पढ़ने से होता है तो मैं धन्य हो जाऊंगी । आधुनिक परिवेश के सकारात्मक पहलू एवं नकारात्मक पहलुओं को यदि आज के पालक समझ लें तो बाल जीवन में कहीं न कहीं विकास अवश्य होगा।

मैं यहाँ बाल जीवन से जुड़े आधुनिक परिवेश के कुछ मुख्य बिन्दुओं को प्रस्तुत करना चाहूँगी।

**बदलते जीवन मूल्य और बाल मनोविज्ञान** : आज के आधुनिक परिवेश में बालक पुराने और नये मूल्यों के बीच फंसा हुआ है। साहित्य बदल गया है, समाज के मानक बदल गए हैं। संस्कृति और कला के मानदंड बदल गए हैं। शाश्वत मूल्य बदल गए हैं। आज का बालक आदर के महत्त्व को भूल चुका है। वह मेहनत से घबराता है। समय की प्रासंगिकता एवं समसामयिकता के अनुरूप चलने का व्यवहारिक दृष्टिकोण ही बालकों के व्यक्तित्व के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ऐसे परिवेश में बालकों के मनोविज्ञान को समझना भी आवश्यक हो गया है। बालक एकाकी जीवन जीता है। बचपन से ही कामकाजी माता के सान्निध्य के लिए वह तरस जाता है। कई तरह के मनोग्रंथियों का शिकार बालक अपने व्यस्त पिता के लिए कहता है...

**बूझो मेरा दुश्मन कौन, पापा का मोबाईल फोन**

एकल परिवार के बच्चे टूटते से नजर आते हैं। बचपन से ही माता पिता के व्यस्त जीवन से घबराकर बालक कह उठता है––

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है। **– वाल्टर चेनिंग**

**''बहुत बुरा लगता है मम्मी,**
**मुझे तुम्हारा दफ्तर जाना**
**घर पर लौटूँ और उस समय,**
**दरवाजे पर ताला पाना।**
**जाने कितनी बातें उस पल,**
**चाहा करती तुमसे कहना।''**

**विज्ञानपरकता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण** : वैज्ञानिकता को आधुनिकता से जोड़ते हुए मैं यह कहूंगी कि इससे बालकों की मानसिकता पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आज के बालक में तितली में कौतूहल नहीं है वरन् शटलयान में है। आज वैज्ञानिक उन्नति चरम सीमा पर है। आज का बच्चा माता पिता के साथ समय न बिताकर कंम्प्यूटर के साथ समय बिताता है। हैरी पॉटर जैसी रचनाएँ, पुस्तकों और फिल्म के रूप में उनकी दुनिया में प्रवेश कर चुकी है। आज के युग के शंकाग्रस्त और उन्नत आई क्यू वाले बालकों में परीलोक की स्थिति और उसकी परिस्थितिजन्य सत्यता को लेकर प्रश्न चिन्ह खड़ा हो गया है।

**संचार माध्यमों में आई क्रान्ति** : आधुनिक परिवेश की सबसे बड़ी देन संचार माध्यमों में आई क्रान्ति है। आज का बच्चा सूचना और प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी के जिस युग में जी रहा है वहाँ कंम्प्यूटर का 'माऊस' उसके लिए एक चलता फिरता खिलौना है। ई मेल के जरिये यह संसार के किसी भी कोने में पहुंच सकता है।

**ऋतु त्योहारों के प्रति नवीन दृष्टि** : आज के आधुनिक परिवेश में बालकों में ऋतु त्यौहारों के प्रति नवीन दृष्टिकोण देखने को मिलता है। होली में मात्र रंग खेलने की बात नहीं कही गई–यह आपसी वैमनस्य को दूर करता है, यह समझाया गया है। यह पक्ष बच्चों को एक सकारात्मक परिवेश प्रदान करता है।

**पर्यावरण के प्रति जागरूकता** : आज के परिवेश में प्रकृति के प्रति नया दृष्टिकोण विकसित हुआ है। हाल ही में पशु पक्षियों के प्रति अमानवीय क्रूरता और प्रदूषण को लेकर बच्चों में नवीन जागृति फैलाई गई है – जिससे बच्चों में नवीन चेतना जागृत हुई है जो समाज के लिए लाभकारी है।

**शैक्षिक परिवेश में आए बदलाव** : पुरानी गुरूकुल प्रथा ने मॉन्टेसरी और किण्डरगार्डन शिक्षण पद्धति का रूप धारण कर लिया है। सर्वांगीण शिक्षा पद्धति नीरस और उबाऊ है। बालक शिक्षा को एक बोझ महसूस करता है। ट्यूशन बदलते परिवेश में एक फैशन बन गया है। ऐसे में बालक भग्नाशा की मनोदशा से गुजरने लगता है । नये शैक्षिक परिवेश की व्याख्या इस कविता में बखूबी की गई है

**''नाजुक कंधे ढेर किताबें, बस्ता ठेलम ठेल**
**होमवर्क का भूत बिगाड़े, रोज हमारा खेल''**

**लड़की का महत्त्व** : आधुनिक परिवेश में कन्या जन्म को लेकर जो विवाद था वह लगभग अपनी समाप्ति पर है, ऐसे में लिंग भेद की यातना से बच्चे बचे हुए है। यह आधुनिक परिवेश की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

**वैश्वीकरण** : वैश्वीकरण ने मानवता के प्रति प्रेम के नये आयाम दिये है। यह वस्तुतः बाजारवाद, उपभोक्तावाद और भौतिकवाद को बढ़ावा देनेवाला भ्रांति लोक है। बच्चे पूरे विश्व के तथ्यों से अवगत हो रहे हैं, परन्तु इस प्रक्रिया में 'मैं' की भावना भी प्रबल हो रही है। इसके सकारात्मक पक्ष को देखते हुए संतोष होता है कि बाल जीवन में बाल शोषण, बाल श्रम के प्रति जागरूकता फैल रही है। बालक के अन्दर राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय चेतना का जागरण हो रहा है।

इस तरह हम देखते हैं कि आधुनिक परिवेश ने अगर हमें एक चतुर चालक रोबोट के जैसा बालक दिया है तो कहीं उसके बचपन को संकटग्रस्त भी कर दिया है । कहीं मनोवैज्ञानिक त्रासदी और संत्रास से घिरा बच्चा है तो कहीं बालश्रम की समस्या से उलझा हुआ बचपन है। इस विषय के प्रति सचेत होने की जरुरत है कि आधुनिक परिवेश को किस हद तक स्वीकार करना है । इस आधुनिकता ने बच्चों को माता पिता पर हावी होने की आजादी, खिलौनों से भरी अल्मारी तथा कंम्प्यूटर दिया है साथ ही जीवन मूल्यों के प्रति नकारात्मक होने की बुद्धि भी दी है । विज्ञान और नैतिक मूल्यों के बीच एक दिशा है जिसे हमें किसी भी दशा में विस्मृत नहीं करना है – वह है बालकों के चरित्र निर्माण की दिशा । आज का बाल जीवन समस्त विषमताओं को अस्वीकृत करते हुए, आधुनिकता के सकारात्मक पहलुओं के साथ फले फूले, यही मेरी मनो कामना है।

✦ ✦ ✦

किसी राष्ट्र की राजभाषा वही भाषा हो सकती है जिसे उसके अधिकाधिक निवासी समझ सके। – **आचार्य चतुरसेन शास्त्री**

# मेरी हैदराबाद यात्रा का वह अविस्मरणीय अनुभव

**श्री मोहन ब. सूर्यवंशी,** भंडार एवं क्रय अनुभाग,सीएसआईआर–एनसीएल,पुणे

बात तब की है जब मैं अपने दोस्तों के साथ घूमने के लिए हैदराबाद गया था। हैदराबाद के दर्शनीय स्थानों की सैर करने के बाद हम सबने 'रामोजी फिल्म सिटी' देखने की योजना बनाई। योजना बनते ही 'रामोजी फिल्म सिटी' जाने के लिए हमने गाड़ी तय की और अगले दिन सुबह ही रामोजी फिल्म सिटी देखने के लिए निकल पड़े।

मैं पहली बार फिल्म सिटी देखने जा रहा था। मेरे कुछ दोस्त पहले देख चुके थे। मैं बड़ी उत्सुकता के साथ उनसे रामोजी फिल्म सिटी के बारे में पूछताछ कर रहा था। मुझे पहले से ही एक्टिंग में रुचि है इसलिए मैंने अपने मित्रों से पूछा कि क्या हमें एक्टिंग का मौक़ा मिल सकता है। मेरे मित्रों ने कहा कि शायद मिल भी सकता है। इस प्रकार उनके द्वारा प्राप्त जानकारियों ने मेरे उत्साह में और अधिक बढ़ोतरी कर दी । इतने बड़े इलाके में फैली हुई उस मायानगरी में घूमने का ख्याल ही मेरे मन में सुखद एहसास जगाने लगा। सारे रास्ते मैं इसी सुखद एहसास में डूबा रहा और अंततः करीब एक घंटे के बाद हम रामोजी सिटी पहुंच गए, जो कि हैदराबाद विजयवाड़ा के राष्ट्रीय राजमार्ग पर शहर से पच्चीस किलोमीटर दूर स्थित है।

विशाल परिसर में फैली हुई फिल्म सिटी देखते ही हमें लगने लगा कि हम किसी जादुई दुनिया में पहुंच चुके है। यहां पर प्रवेश के लिए छः सौ रूपए प्रति व्यक्ति के हिसाब से टिकट लगता है। टिकट खरीद कर तथा कुछ सामान लॉकर में रखकर मुख्य द्वार पर खड़ी एक बस में हम सब बैठ गए। कुछ ही देर में हमें बस द्वारा रामोजी फिल्म सिटी के अंदर ले जाया गया। लगभग दो हजार एकड़ में फैली इस फिल्म सिटी का निर्माण फिल्म निर्माता श्री रामोजी राव ने 1996 में करवाया था। पूरी फिल्म सिटी में फिल्म निर्माण के लिए 500 से भी अधिक स्थान है, साथ ही पर्यटकों के मनोरंजन के लिए भी फिल्म सिटी में बहुत सी व्यवस्थाएं की गई है जो इसके आकर्षण में चार चांद लगाती है। फिल्म सिटी का परिसर खूबसूरत होने के साथ–साथ इतना अधिक विशाल है कि किसी भी नए व्यक्ति को यह भूल–भुलैया से कम नहीं लगता।

फिल्म सिटी में एक से बढ़कर एक खूबसुरत और आकर्षक जगहों पर घूमने के बाद हम सभी मित्र एक्शन स्टुडियो पहुचे । वहां पर बहुत से लोग जमा थे। हम सबको एक बड़े हॉल के प्रवेशद्वार में अंदर जाने के लिए कतार में रूकवाया गया। वही पर लगे एक स्क्रीन पर श्री रामोजी का विडियो दिखाया जा रहा था। हम सभी के मन में उथल–पुथल मची हुई थी और अंदर कैसा दृश्य होगा, इसकी हमें बड़ी उत्सुकता थी। थोड़ी देर बाद वहां का एक कर्मचारी आया और कुछ जानकारियां देने के बाद उसने कहा कि उसे एक महिला और एक पुरुष एक्टर की जरूरत है और जिसे भी आना है आगे आ सकता है। हम आगे ही खड़े थे, तभी मेरे दोस्त ने शीघ्रता से मुझसे कहा कि तू जा और इस तरह मैं आगे चला गया। तभी एक लड़की भी आगे आ गयी । हम दोनों को एक अलग कमरे में ले जाया गया और बाकी सभी को एक दूसरे बड़े हाल में भेजा गया। अब मुझे यहां थोड़ी सी चिंता होने लगी कि मैं आगे आ तो गया लेकिन अब क्या? मुझे क्या करना होगा, कुछ पता नहीं था। थोड़ी घबराहट भी हो रही थी। तभी वहां का एक कर्मचारी हमारे पास आया और उसने उस लड़की को कुछ कपड़े देकर थोडा सा मेकअप करने को कहा और फिर उसे वहां से ले गया । थोड़ी देर बाद मुझे भी बुलाया गया, जहां एक स्टेज था और सामने सभी लोग बैठे थे, जिनमें मेरे दोस्त भी शामिल थे।

स्टेज पर माहौल कुछ ऐसा था – एक तांगा था जैसे 'शोले' फिल्म में बसंती ने चलाया था, लेकिन उसमें घोड़ी नहीं लगाई थी। मेरे साथ वाली लड़की को उस पर बसंती जैसा गेटअप करके बिठाया गया था। ये सब देखकर मैंने अंदाज लगाया कि शायद यहां मुझे 'शोले' फिल्म के कुछ डॉयलाग कहने होंगे। मैं जल्दी जल्दी मन में कुछ डॉयलाग याद करने लगा। बड़े से हाल में बैठे सभी लोग हमें देख रहे थे। मेरे दोस्त भी इशारों से मेरा हौसला

---

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है। **–(जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर**

बढ़ा रहे थे। तभी वहां मौजूद कर्मचारी लोगों से कहने लगा, 'आपने शोले फिल्म तो देखी होगी। फिल्म कैसे बनाते हैं और उसमे इफेक्ट्स कैसे देते हैं ये हम आपको अब यहां दिखाएंगे'। 'तांगे पर बैठी लड़की के हाथ में चाबुक जैसी रस्सी देकर उसने कहा – 'आपको ऐसी एक्टिंग करनी है जैसे आपके पीछे गुंडे लगे है और आप तांगे को चला रही है। ' अब एक्टिंग की बारी मेरी थी। तांगे के नीचे बड़ा सा रॉड था। मुझसे उसने कहा इस रॉड को ज़ोर ज़ोर से हिलाना है, जिससे ऐसा लगे कि तांगा चल रहा है । यह सुनते ही मैं नीचे बैठकर ज़ोर ज़ोर से उस रॉड को हिलाने लगा और तांगे में बैठी लड़की वैसे ही एक्टिंग करने लगी जैसा कि उससे कहा गया था। वह तांगा और लड़की इतने भारी थे कि दो मिनिट में ही मेरे पसीने छूट गए। जैसे ही मैं तांगा हिलाना कम करता वह आदमी कहता– ज़ोर से हिलाओ, जिससे फिल्म में ऐसा लगे कि तांगा तेजी से चल रहा है। कुछ देर तक यह चला और फिर हम दोनों को बाकी लोगों के साथ इफ़ेक्ट्स देखने के लिए अगले हॉल में भेजा गया । इस तरह मेरी एक्टिंग की तमन्ना पूरी हुई और मैं खुशी–खुशी अपने मित्रों के पास आ कर बैठ गया।

असली जादू इस कक्ष में देखने को मिला । यहां पहले से रिकार्ड की हुई ध्वनियां और दूसरे कक्ष में रिकार्ड की गई फिल्म पर सुपर इंपोस कर दी जाती है। इस कक्ष में दिखाई देने वाले दृश्य में तीन–चार डाकू घोड़ों के साथ धन्नों का पीछा करते हुए दिखाई देते है और बसंती के रूप में वहीं लड़की नजर आती है। पूरा माहौल 'शोले' फिल्म जैसा ही लगने लगता है। दृश्य के समाप्त होते ही तालियों की गड़गडाहट गूंजने लगी और वह कर्मचारी सामने आया। उसके सामने आते ही मेरे एक मित्र ने कहा– 'बहुत नाइंसाफी है। सारी मेहनत मेरे दोस्त ने की किंतु वह उस शॉट में में नहीं दिखा, सिर्फ लड़की को ही क्यों शॉट में दिखाया गया।' यह सुनकर उस कर्मचारी ने जो कहा, वह बात सभी के दिलों को छू गई। उसने कहा – 'हम आप लोगों को इस कक्ष में इसी बात का एहसास कराना चाहते थे कि फिल्म जगत में पर्दे पर एक सीन दिखाने के पीछे हजारों व्यक्तियों की मेहनत छुपी होती है, पर उन व्यक्तियों का नाम भी कोई नहीं जानता और सिर्फ कुछ लोग ही प्रसिद्ध हो पाते हैं, लेकिन आप लोग पर्दे के पीछे काम करने वाले व्यक्तिंयों को, उनकी मेहनत को नहीं जानते।' उसकी बात सुनकर हम सभी को एहसास हुआ कि चमचमाती मायानगरी का यह पहलू भी है, जिससे आम जनता अनजान है।

इस तरह फिल्म सिटी की खूबसूरत यादों को समेटे हुए हमने वहां से विदा ली। आज भी मेरे लिये वह अनुभव अविस्मरणीय है।

✦ ✦ ✦

## बुरी आदतों की जड़ें

एक विद्वान अपनी समझ–बूझ के लिए बड़े प्रसिद्ध थे । वह आगंतुकों की समस्याएँ चुटकियों में हल कर देते। एक बार एक धनी व्यक्ति अपने पुत्र को लेकर उनके पास आया और बोला– मेरे बेटे की बुरी आदतें छुड़वा दीजिए । उसने उसकी बुरी आदतों का बखान करते हुए यह भी बताया कि कैसे कुछ सालों से वह उसकी आदतें छुड़ाने का प्रयास करता रहा, लेकिन असफल रहा। विद्वान उस बालक को एक बगीचे में घुमाने ले गए। वहां एक जगह रुके और एक नन्हे पौधे की ओर संकेत करते हुए बोले, 'बेटा उसे उखाड़ दो।' पौधा बहुत छोटा था, सो उसे ज्यादा ताकत नहीं लगानी पड़ी। फिर विद्वान ने उसे जरा बड़ा पौधा उखाड़ने के लिए कहा। किशोर ने जरा जोर लगाया और उसे भी जड़ के साथ उखाड़ लिया। विद्वान ने एक झाड़ी की ओर संकेत किया, 'अब इसे उखाड़ों' । बालक ने अपनी सारी ताकत लगाकर उसे भी उखाड़ दिया। अंत में विद्वान ने उसे एक अमरूद का पेड़ उखाड़ने के लिए कहा। किशोर ने पेड़ के तने को पकड़ कर अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर पेड़ टस से मस नहीं हुआ । उसकी सांस फूल गई, उसने हार मान ली और कहा– श्रीमान, इस पेड़ को उखाड़ना असंभव है। विद्वान ने उस बालक को समझाया – बेटा, बुरी आदतों की यही दशा होती है। शुरू में उनको उखाड़ फेंकना सरल होता है, परंतु जब उनकी जड़ें फैल जाती हैं, तब उन्हें पूरी ताकत से कोशिश करने पर भी नहीं उखाड़ा जा सकता । इसलिए तुम अपनी बुरी आदतों को अभी से छोड़ दो।' बालक के मन में विद्वान की बात पैठ गई और उस दिन से धीरे–धीरे उसकी बुरी आदतें जाती रहीं।

भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है। **– टी. माधवराव**

# खुश रहो, मुस्कुराते रहो, निरोगी रहो

**श्री. सुभाष चन्द्र मिश्र,** प्रशासन नियंत्रक का सचिवालय, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे.

मानव जीवन अति दुर्लभ है इसे हम व्यर्थ ही खो देते हैं। जिंदगी जीने के लिए होती है इसे जी भरके जियो। शरीर में निःश्वास के साथ विजातीय तत्वों को विसर्जित करने का सरलतम उपाय है हास्य योग अर्थात् मुस्कुराना, खुलकर हँसना। हँसने से सारे रोग भाग जाते हैं। इसलिए क्यों न हम मुफ्त चिकित्सा का लाभ उठाएँ।

**हँसने–मुस्कुराने का महत्त्व :**

तनाव, चिंता, भय, क्रोध, निराशा, चिड़चिड़ापन, हड़बड़ी, अधीरता आदि नकारात्मक प्रवृत्तियों से हमारी अंतःस्रावी ग्रन्थियाँ खराब होती है जो शरीर में विभिन्न रोगों को निमन्त्रण देने में अहम् भूमिका निभाती है। जिस प्रकार अंधेरा और उजाला साथ–साथ नहीं रह सकते, ठीक उसी प्रकार मुस्कान के साथ रोग के उपरोक्त कारणों को स्वतः दूर होना पड़ता है। जिस घर में अतिथि का आदर सत्कार नहीं होता, उस घर में समझदार मेहमान अधिक देर नहीं रहना चाहते। अतः यदि हमारा चेहरा सदैव मुस्कराता हुआ प्रसन्नचित्त रहे तो शरीर अनेक रोगों से सहज ही बच सकता है। उसकी कार्यक्षमता बढ़ जाती है। सोच सकारात्मक हो जाती है। दूसरी बात अकारण भी मुस्कराने से तनाव, भय, चिंता, अशांति, स्वतः दूर भाग जाते है।

मुस्कान न केवल एक जीवन्त प्रक्रिया है, उससे भी कहीं अधिक एक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक घटना भी है, जिससे दो व्यक्तियों के बीच शुभ संवाद आरम्भ होने में सुविधा मिलती है। अतिथियों का मुस्कराते हुए ही स्वागत किया जाता है। अर्थात् मुस्कान हमारे जीवन में आनन्द, सुख, प्रसन्नता की सूचक होती है। मुस्कान की उपमा खिलते हुए फूल से की जाती है। जिस प्रकार खिला हुआ पुष्प अच्छा लगता है, ठीक उसी प्रकार मुस्कान से व्यक्ति को सुख की अनुभूति होती हैं। जिसके चेहरे की मुस्कुराहट चली जाती है, उसके जीवन की प्रसन्नता चली जाती है। मुस्कराहट तभी आकर्षक लगती है, जब वह होठों के साथ–साथ आंखों से भी नजर आये । मुस्कुराहट से अच्छा दूसरा तोहफा और दवा प्रायः हमारे पास नहीं होती।

**हँसना –स्वस्थ मनुष्य की पहचान :**

''खुश रहो आबाद रहो मुस्कुराते रहो..... ''
चाहे यहाँ रहो या इलाहाबाद रहो!!!

मानव ही एक मात्र ऐसा प्राणी है, जिसमें हँसने की क्षमता होती है। यह उसका स्वभाव भी है तथा उसकी खुशी की अभिव्यक्ति का माध्यम भी। किसी बात पर मुस्कराना अथवा हँसना, किसी को देखकर हँसना किसी से मुस्कराते हुए मिलना, खुशी के प्रसंगों पर मुस्कराना मानव व्यवहार की सहज क्रियाएँ हैं।

हँसना स्वस्थ शरीर की पहचान है जो मानसिक प्रसन्नता के लिए आवश्यक है। नियमित हँसने से शरीर के सभी अवयव ताकतवर और पुष्ट होते हैं।

हास्य तनाव का विरेचन है । सच्चा हास्य तोप के गोले की तरह छूटता है और मायूसी की चट्टान को बिखेर देता है। हास्य से रोम–रोम पुलकित होते हैं, दुःखों का विस्मरण होता है, खून में नयी चेतना आती हैं। शरीर में कुछ भाग हास्य ग्रन्थियों के प्रति विशेष संवेदनशील होते हैं। हँसी मानसिक रोगों के उपचार का प्रभावशाली माध्यम है।

वैज्ञानिकों ने अपने विभिन्न शोधों में यह पाया है कि खुलकर हँसने से रक्त की गति बढ़ जाती है एवं रक्त परिभ्रमण में आने वाले अवरोधक तत्त्व दूर होने लगते हैं। श्वसन क्रिया सुधरती

भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा हिंदी है । – **श्री नलिनविलोचन शर्मा**

है। आक्सीजन का संचार अधिक मात्रा में होने लगता हैं। शरीर के अधिकांश चेतना केन्द्र जागृत होने लगते हैं। अधिक हँसने वाले बच्चे फुर्तीले एवं अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली होते हैं। 10 मिनट हँसने मात्र से इतनी ऊर्जा मिलती है, जो साधारणतया लगभग एक किलोमीटर प्रातः स्वच्छ वातावरण में भ्रमण करने से प्राप्त होती है।

अमेरिका के प्रख्यात कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. विलियम फ्रार्ड के अनुसार एक मिनट का हँसना लगभग 40 मिनट आराम के बराबर होता है। 'मेक अस लॉफ (Make us laugh)' नामक पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि 'हँसने से दर्द से छुटकारा मिलता है। रक्तचाप सुधरता है। रक्त नलिकाएँ साफ होती है एवं रक्त संचार सुधरता है। हास्य से जो हारमोन्स बनते हैं वे गठियां, एलर्जी एवं वात रोगों से मुक्ति दिलाते हैं, दर्द दूर करते हैं। हँसने से चेहरे की मांसपेशियाँ सक्रिय होती है। उसमें झुर्रियां नहीं पड़ती। अनिद्रा, तनाव, भय, निराशा आदि दूर होते हैं'।

दुःखी, चिन्तित, तनावग्रस्त, भयभीत, निराश, क्रोधी आदि हँस नहीं सकते और यदि उन्हें किसी भी कारण से हँसी आती है तो उस समय तनाव, चिंता, भय, दुःख, क्रोध आदि उस समय उनमें रह नहीं सकते, क्योंकि दोनों एक दूसरे के विरोधी स्वभाव के होते हैं। अतः यदि हम काल्पनिक हँसी भी हँसेंगे तो तनाव, चिंता, भय, निराशा आदि स्वतः दूर हो जाते हैं। ये ही वे कारण होते हैं जो व्यक्ति को अस्वस्थ, असंतुलित, रोगी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हँसने से शरीर के आन्तरिक भागों की सहज मालिश हो जाती है। अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ और ऊर्जा चक्र सजग और क्रियाशील होने लगते हैं, जिससे रोग प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ती है। मन में सकारात्मक चिन्तन, मनन होने लगता है। शुभ विचारों का प्रादुर्भाव होता है। नकारात्मक भावनाएँ समाप्त होने लगती है। आज के तनावयुक्त वातावरण से मुक्त होने के लिए हास्य–योग सरलतम, स्वयं के पास, सभी समय उपलब्ध, सहज, सस्ता साधन है।

**हँसने–मुस्कुराने के मौके तलाशें :**

हँसने के लिए व्यक्ति बाह्य आलम्बनों पर निर्भर रहता है, जो हमारे पास सदैव उपस्थित नहीं होते। चुटकलों के सहारे हम 365 दिन नहीं हँस सकते, क्योंकि नित्य नवीन ज्ञानवर्धक प्रभावशाली चुटकले भी पढ़ने को नहीं मिलते और न ऐसे व्यक्तियों का नियमित सम्पर्क होता है, जो दूसरों को हँसाने में दक्ष होते हैं। अतः समय–समय पर हमें पिकनिक / दर्शनीय स्थानों के भ्रमण इत्यादि का आयोजन करना चाहिए, इस से मन प्रसन्न रहता है। अभी हाल ही में हम सब मित्र मुरुड जंजीरा (रायगढ़) महाराष्ट्र गये थे। एक घटना ऐसी हुई कि जिसका उल्लेख यहाँ पर नहीं किया जा सकता है, फिर भी इतना कहना चाहता हूँ कि हम सभी एक साथी के कारण पूरा दिन हँसते–मुस्कुराते रहे।

**प्रातः कालीन भ्रमण एवं लाफ्टर क्लब :**

आज की तनावपूर्ण जीवन शैली से बढ़ते एकाकीपन और अवसाद को दूर करने के लिए आजकल शहरों में लाफ्टर क्लब का प्रचलन बढ़ रहा है, जो कि एक बड़ी ही अच्छी बात है। हमारे देश में 11 जनवरी 1988 को पहली बार मुंबई में लाफ्टर क्लब की स्थापना हुई और आज देश में लगभग 12 हजार से अधिक लॉफ्टर क्लब है।

इन लॉफ्टर क्लबों में सुबह के समय भ्रमण एवं योग करने के पश्चात लोग समूहों में एकत्रित होकर बिना किसी वजह के जोर–जोर से ठहाके लगाते हैं। समूह में होने से हँसी अपने आप आ ही जाती है और प्रदूषण रहित स्वच्छ, एवं खुले प्राणवायु वाले वातावरण में प्रातःकाल उदित सूर्य के सामने हँसना अपेक्षाकृत अधिक लाभप्रद होता है क्योंकि हास्य क्रिया के साथ–साथ सौर–ऊर्जा एवं ऑक्सीजन अधिक मात्रा में सहज प्राप्त हो जाते हैं।

कभी–कभी किसी को देखकर, उसकी असफलता पर, उसकी बात सुनकर अथवा व्यंग्यात्मक भाषा में हँसते हुए उनका उपहास या मजाक करना क्रूर हास्य होता है। जिससे वैर और द्वेष बढ़ने की संभावना होती है, अतः ऐसी हँसी का निषेध करना चाहिए। अतः हमको कब, क्यों, कहाँ, कितना, कैसे हँसने का विवेक आवश्यक होता है अन्यथा तनाव–चिन्ता दूर करने वाली हँसी स्वयं उसको पैदा करने का कारण बन जाती है।

हँसो, जी भर के हँसो, हँसने से घर बसते हैं।

✦ ✦ ✦

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। – **श्री कमलापति त्रिपाठी**

# बचत के उपाय

**श्रीमती कल्पना तलाटी,** वित्त एवं लेखा अनुभाग, सीएसआईआर–एनसीएल, पुणे

पैसा ही सब कुछ नहीं है, परंतु पैसों की जरुरत सबको हमेशा जरूर रहती है। आज पैसे का ही हर तरफ बोलबाला है क्योंकि पैसे के बगैर कुछ भी नहीं। आज जिंदगी व परिवार चलाने के लिए पैसे का ही अहम किरदार देखा जाता है। पैसे की ख्वाहिश सभी को होती है इसीलिए पैसा कमाने के लिए दिन–रात एक कर देते हैं। आज के समय में पैसा कमाना जितना मुश्किल है, उससे कहीं अधिक कठिन दिखता है पैसे को अपने भविष्य के लिए बचा कर रखना क्योंकि अनाप–शनाप खर्च और बढ़ती महंगाई के अनुपात में कमाई के स्त्रोतों में कमी होती जा रही है। इसीलिए हमारी आज की एक आनुपातिक बचत ही कल हमारे बच्चों व परिवार को सुखी व समृद्ध रख सकने में अपना अहम किरदार निभायेगी।

कहा जाता है कि खर्च करने की कोई आखिरी सीमा नहीं होती, बस सिर्फ पैसा पास होना चाहिए। फिर भी अधिक से अधिक पैसा भी खर्चों के आगे कम ही हो जाता है, जबकि खर्चों की सूची बढ़ती जाती है। ऐसे में बचत बहुत जरूरी है। छोटी–छोटी बचत या धन निवेश ही हमारे परिवार के भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे जैसे शादी–ब्याह, घर, बच्चों की पढ़ाई–लिखाई या काम–धंधों में लगने वाली एक साथ पूंजी का समाधान कर देती है। आज की थोड़ी समझदारी व निवेश प्रबंधन से ही हम अपनी वृद्धावस्था में पैसे का सहारा व आराम का पूरा इंतजाम कर सकते है ।

वित्तीय योजना के लिए जरूरी है कि हम मासिक खर्च की सूची बनाते समय ही अपने मासिक निवेश को तय करके उसको भी जरूरी खर्चों में रखें। अक्सर लोगों की यह योजना होती है कि सभी खर्चों के बाद ही वो किसी भी तरह के निवेश के बारे में सोचना शुरू करते हैं। इस प्रकार धन संचय का क्रम सबसे आखिर में आ पाता है। कहीं कहीं पर खर्चे पूरे नहीं हो पाते और बचत भी नहीं होती।

जहां आज की महंगाई में घर खर्च चलाना मुश्किल दिखाई पड़ता है, वहीं आने वाले दस बीस सालों में महंगाई की दर कहां पहुंच जायेगी, इसका अनुमान भी हमें लगाना चाहिए। इस हिसाब से उस उम्र में पैसे का हिसाब–किताब व इंतजाम अभी से कर लेना सही निवेश साबित होगा। क्योंकि बुढ़ापे या ढलती उम्र में पैसा कमाना आसान नहीं होता है। किसी भी परिवार की सम्पन्नता भविष्य के लिए धन संचय में ही निहित होती है। आने वाला भविष्य हमारे जीवन का अहम हिस्सा होता है, जिस तरह से एक परिवार की सुख व समृद्धि आने वाले कल के लिए पैसे जोड़ने जैसी धन संचयन योजनाओं में निवेश करने से होती है। उसी प्रकार देश की आर्थिक प्रगति व अर्थव्यवस्था की रफ्तार भी कई तरह की योजनाओं में निवेश करने से ही होती है।

आज की बचत अपने परिवार तथा देश दोनों के भविष्य को सुरक्षित व संरक्षित रखती है। किसी जरूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर यही बचाया गया पैसा ही हमारे तथा देश हित के काम आता है। अपनी रुचि व आवश्यकतानुसार निवेश के बेहतर विकल्प को चुना जा सकता है। सरकारी व गैर सरकारी बैंकों, डाकघरों, सरकारी या निजी बीमा कम्पनियों या सीधे तौर पर बाजार में निवेश करके हम अपना भविष्य संवार सकते हैं।

---

हिंदी को राजभाषा घोषित करने के बाद पूरे पंद्रह वर्ष तक अंग्रेजी का प्रयोग करना पीछे कदम हटाना है। – **राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन**

बचत करने की दृष्टि से निम्नलिखित उपाय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

1) **लक्ष्य तय करें** :

किसी भी कार्य में सफलता के लिए सबसे पहले लक्ष्य बनाना बहुत जरूरी है। यदि आप बचत करने का लक्ष्य बनाते हैं तो निश्चित रूप से आपको कुछ न कुछ बचत करनी ही होगी । आप तय करें कि आपको कितने रूपयों की जरूरत है और कितनी बचत कर सकते हैं।

2) **अपनी जरूरतें तय करें** :

अपनी मेहनत से कमाए रुपयों को खर्च करने से पहले, कुछ रुपये अपने खर्च के लिए अलग निकाल लें। समझे कि आप अपने आप को वेतन दे रहे हैं।

3) **बजट बनाएं** :

अपने खर्च और बचत की योजना को लिख डालें । ये एक नक्शे की तरह होगी जो बताएगी कि अपना पैसा कैसे और कहां खर्च करें। एक बार बजट बनाने के बाद सख्ती से उसका पालन करें।

4) **अपने खर्च का हिसाब रखें** :

ये आपके बजट का दूसरा हिस्सा है। यदि आप रोज खर्च होने वाले पैसे का हिसाब रखते है, उसकी रसीद रखते हैं, तो आप अपने तय किए हुए बजट से तालमेल बिठा सकते हैं।

5) **कर्ज लेने से बचें** :

यदि आप पहले से कर्ज में हैं तो जितना जल्दी हो सके उसे चुकाने की कोशिश करें। आज की युवा पीढ़ी के लोग कम समय में ही सब कुछ पा लेना चाहते हैं, इसके लिए वे लोग बिना सोचे समझे क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करते हैं और आर्थिक तंगी तथा उधार लेने की स्थिति में आ जाते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि सोच समझ कर ही, एकदम जरूरी चीजों के लिए ही अपने क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करें और तय समय पर उसका पूरा भुगतान करने की कोशिश करें।

6) अगर आप प्रत्येक सप्ताह की समाप्ति पर खाने के लिए बाहर जाते हैं तो इस आदत को कम करें।

7) एक गुल्लक रखें और रोज की बची हुई रेजगारी उसमें जमा करें । इस तरह एक दिन काफी पैसे जमा हो जाएंगे।

8) अपनी कार से ऑफिस जाने की बजाय कार पूल करके आफिस जाएं। अगर आपके रास्ते में पब्लिक ट्रांसपोर्ट हो तो उसका ही इस्तेमाल करें।

9) कई बार हम लोग बिना जरूरत के कपड़े–जेवर इत्यादि खरीद लेते हैं, जबकि हमारे पास पहले से ही कपड़ों से अलमारियां भरी होती है। अतः लालच में न पड़ कर इन वस्तुओं की खरीद तभी करें, जब आपको इनकी आवश्यकता हो। बेहतर होगा कि आप वर्ष में एक या दो त्यौहार तय कर लें और फिर केवल उन्हीं अवसरों पर इन चीजों की खरीददारी करें।

10) अगर आपके बच्चे छोटे हैं तो उन्हें पढ़ाने के लिए ट्यूटर लगाने की बजाय आप उन्हें खुद पढ़ाएं। इससे पैसों की बचत तो होगी ही, आप अपने बच्चों को अच्छे से पढ़ा भी पाएंगे।

11) अपने घर का अधिकांश काम जैसे साफ–सफाई और माली का काम खुद करने की कोशिश करें । इससे पैसों की बचत तो होगी ही, आप भी ज्यादा सक्रिय बने रहेंगे और आपकी स्वतः ही कसरत हो जायेगी । आपके बच्चे भी आपसे काम करना सीखेंगे।

12) अगर आप किराए के घर में रह रहे हैं तो फिर उतना ही बड़ा घर लें, जितने की आपको जरूरत हो। इससे आपके किराए के पैसे बचेंगे साथ ही होम–लोन लेकर जल्दी से जल्दी अपना घर खरीदने की कोशिश करें, क्योंकि किराए में खर्च किये गये पैसे से हमारी कोई स्थाई संपत्ति नहीं बनती, जबकि उसी किराए के पैसे में कुछ राशि मिला कर हम किश्तों का इंतजाम कर सकते हैं, जिससे हमारी स्थायी संपत्ति बन जाती है।

13) घर में जिन जगहों पर आप न हों, वहां की लाइट और पंखा बंद कर दें, ताकि बिजली का बिल बच सकें।

14) बड़ी राशि एकदम से जोड़ना आसान नहीं होता इसलिए घर के प्रत्येक सदस्य के लिए आर.डी. खाता खोले और प्रतिमाह उसमें पैसे जमा करें। आर.डी. परिपक्व होने पर उस बड़ी राशि की एफ.डी.की जा सकती है।

✦ ✦ ✦

हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। – **श्री. कृष्णस्वामी अय्यर**

# कार्यस्थल और आपका व्यवहार

श्रीमती स्वाति तिवारी

हम अपने जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा कार्यस्थल पर गुजारते हैं। ऐसे में हमारा व्यवहार ही सबसे पहले हमारे काम आता है। हमारी सफलता और विकास बहुत कुछ हमारे द्वारा खुद की बनाई छवि पर निर्भर करता है और हमारी छवि मात्र हमारे काम से ही विकसित नहीं होती, बल्कि यह कार्यस्थल पर हमारे व्यवहार से भी बनती है। कार्यस्थल पर कठोर परिश्रम के साथ–साथ यह भी जरूरी है कि हम अपने सहकर्मियों के साथ अच्छा बर्ताव करें और लोगों पर अपने व्यवहार से सकारात्मक असर डालें। कार्यस्थल में हमारा व्यवहार ऐसा होना चहिए जिससे हमारी सकारात्मक छवि बनें और विवादों से दूर रहा जा सकें । आइए जाने कि किन–छोटी बातों का ध्यान हमें कार्यस्थल पर रखना चाहिए –

1) **वेशभूषा का ध्यान रखें** :

आपकी वेशभूषा आपके व्यक्तित्व, छवि और आत्मविश्वास को बनाने या बिगाड़ने में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। कार्यालय में हमेशा साफ–सुथरे तथा तरीके से प्रेस किए हुए गरिमापूर्ण वस्त्र पहनना चाहिए। अत्यंत फैशनेबल तथा चटख रंगों वाले कपड़े पहनने से बचना चाहिए । यदि आप अपनी वेशभूषा में सादगी नहीं रखेंगे तो ऐसा करना न केवल सहकर्मियों की निगाह में आपको गैर–जिम्मेदार बनाता है, बल्कि आपकी व्यवसायिक छवि को भी नुकसान पहुँचता है।

2) **समय की पाबंदी** :

समय का पाबंद न होना अन्य लोगों को बुरा लग सकता है और आपकी छवि को तो नुकसान पहुँचाता ही है। काम या अपॉइंटमेंट्स में देरी होना यह दर्शाता है कि आप कार्य के प्रति गंभीर नहीं हैं। साथ ही यह न केवल आपके, बल्कि दूसरे लोगों के काम पर भी असर डालेगा । अन्य लोगों के समय की इज्जत करें और मीटिंग्स और अपॉइंटमेंट्स आदि के लिए समय पर पहुंचें।

3) **सहकर्मियों और वरिष्ठों का आदर** :

कार्यालय में हमें हमेशा अपने वरिष्ठ अधिकारियों और सहयोगियों एवं अन्य लोगों का आदर करना चाहिए तथा हमेशा सभी के प्रति बुनियादी शिष्टाचार निभाना चाहिए। दूसरों की इज्जत न करने से केवल नकारात्मकता और नफरत ही उपजती है। आप काम करने में कितने भी कुशल क्यों न हों, लेकिन यदि आप अपने साथियों की इज्जत नहीं करते तो आपकी सफलता की संभावना समाप्त हो जाती है। यहां तक कि ऐसे माहौल में रहना, काम करना भी दूभर हो जाता है। इसलिए अपने सहकर्मियों की इज्जत करते हुए कार्यस्थल पर आपसी सहयोग की संस्कृति को मजबूत करें।

4) **दफ्तर की मर्यादा बनाए रखें** :

चिल्लाना, तेज बोलना, झगड़ा करना, वेवजह किसी की बात काटना, बेबात शोर मचाना, कार्यस्थल पर पान/गुटका खाना या सिगरेट पीना, मोबाइल की घंटी को तेज रखना और मीटिंग के दौरान भी बजते रहने देना आदि दफ्तर की मर्यादा को बिगाड़ते हैं। ऐसे कार्यो से बचें, जो दफ्तर का माहौल खराब करते हैं। याद रखें कि वहाँ और लोग भी काम करते हैं, जिन्हें आपकी इन आदतों से दिक्कत होगी । हमेशा दफ्तर की गरिमा का ख्याल रखें और सबके लिए माहौल शांतिमय और स्वस्थ बनाने में सहयोग दें।

5) **अफवाहें न फैलाएं** :

अफवाहों का आपकी छवि पर विपरीत असर पड़ता है। सभी कर्मियों को इस आदत से दूर रहना चाहिए। हर जगह ऐसे लोग जरूर होते हैं, जो अफवाहों और गपबाजी में अपना सारा समय बर्बाद करते हैं। ऐसे लोगों को कभी इज्जत की निगाह से नहीं देखा जाता । यहाँ तक कि कुछ कंपनियों में तो ऐसे अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ कड़ी नीतियां भी बनी हुई हैं। सबकी सुनें पर कभी अफवाहें फैलाने का हिस्सा न बनें ।

6) **तालमेल बैठाएं** :

कार्यस्थल में लोगों के साथ बेहतर तालमेल बैठाने के लिए उनके साथ खुल कर बात करना जरूरी है, लेकिन कार्यस्थल पर हमें अपने व्यवहार के प्रति अति सावधान रहना चाहिए । वाकई बेहतर तालमेल बैठाना चाहते हैं, तो याद रखें कि कहां पर आपको एक सीमा रेखा खींचनी है? इस सीमा रेखा के अभाव में कार्यस्थल पर तनाव पैदा होने का खतरा बना रहता है।

उदाहरण के तौर पर आप कार्यस्थल में धर्म, जाति या

भारतवर्ष में सभी भाषाएं सम्मिलित परिवार के समान पारस्परिक सद्भाव लेकर रहती आई हैं। – **श्री. रवींद्रनाथ ठाकुर**

राजनीतिक विश्वास पर टिप्पणी करने से बचें, क्योंकि हर व्यक्ति का धार्मिक, जातिगत या राजनीतिक विश्वास अलग-अलग हो सकता है और इसी के आधार पर बड़े-बड़े विवाद भी पैदा हो सकते हैं, इसलिए बेहतर है कि आप न किसी जाति, धर्म या राजनीतिक विचारधारा की तारीफ करें और न ही बुराई । यदि चर्चा जरूरी ही है, तो सभ्य और शांत तरीके से इस प्रकार अपनी बात रखें जिससे किसी को दुख न पहुंचे ।

7) **हंसी – मजाक भी हो संभल कर** :

हंसी-मजाक जरूरी है किंतु कार्यालय में हमें हर किसी के भी साथ मजाक नहीं करना चाहिए । आप अपने मित्रों या स्टाफ सदस्यों के साथ मजाक जरूर कर सकते हैं किंतु वे अत्यंत सौम्य, साधारण तथा एक सीमा के अंतर्गत होना चाहिए। महिला सहकर्मियों के साथ बातचीत करते समय अत्यंत सावधान रहें।

मजाक करते समय हमें यह बात ध्यान में रखना अत्यंत जरूरी है कि किसी से भी उसके रंगरूप, शरीर के आकार, उसके नाम, उसके पद, धर्म-जाति को लेकर कभी भी मजाक न करें, ऐसा करने से उस व्यक्ति को दुख पहुंच सकता है और तनावपूर्ण स्थिति आ सकती है। जरूरी नहीं कि जिस व्यक्ति से आप यह मजाक कर रहे हैं, वही नाराज हो । आपके इस मजाक का गवाह बन रहे लोगों को भी इस पर आपत्ति हो सकती है। यह भी जरूरी नहीं कि वे आपके सामने ही नाराजगी जाहिर करे, वे बाद में शिकायत भी कर सकते हैं।

8) **कुछ मामलों में चर्चा न करें** :

कार्यालय में सबसे जरूरी बात यह है कि किसी भी व्यक्ति से उसकी आय या पदोन्नति पर चर्चा न करें । इन दोनों विषयों पर चर्चा कर्मचारियों के बीच एक-दूसरे से जलन की भावना पैदा करने की प्रमुख वजह बन सकती है। कोशिश करें कि न तो आप खुद किसी की आय पूछे, न ही कोई आपसे इस पर चर्चा करें। कौन अधिकारी/कर्मचारी कितना योग्य अथवा अयोग्य है, इन बहसों में न पड़ें।

इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर हम कार्यस्थल पर एक अच्छे कार्मिक के रूप में अपनी पहचान बना सकते हैं। हालांकि, कार्यस्थल पर अच्छे व्यवहार की कोई नियमावली नहीं होती, फिर भी आपकी तरक्की और छवि को ऊंचा उठाने में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए कड़ी मेहनत के साथ-साथ अच्छा व्यवहार भी दर्शाएं। आप पाएंगे कि समय आने पर यह गुण किस तरह आपके पक्ष में काम करता है।

✦ ✦ ✦

## सबसे बड़ा काम

एक बार बेंजामिन फ्रैंकलिन ने एक धनी व्यक्ति की मेज पर बीस डॉलर की सोने की गिन्नी रखते हुए कहा, 'सर, आपने बुरे वक्त में मेरी सहायता की थी । उसके लिए मैं बहुत आभारी हूं। लेकिन अब मैं अपनी मेहनत के बल पर इतना सक्षम हो गया हूं कि आपका वह कर्ज लौटा सकूं।' यह सुनकर वह व्यक्ति उन्हें गौर से देखते हुए बोला, 'क्षमा कीजिए, पर मैंने आपको पहचाना नहीं। न ही मुझे यह याद है कि मैंने किसी को बीस डॉलर उधार दिए थे।' बेंजामिन बोले, 'मैं उन दिनों एक प्रेस में अखबार छापने का काम करता था। एक दिन अचानक मेरी तबीयत खराब हो गई । तभी मैंने आपसे बीस डॉलर लिए थे।' उस व्यक्ति ने अपने बीते दिनों के बारे में सोचा तो उसे याद आया कि काफी पहले एक लड़का प्रेस में काम किया करता था और एक दिन उसने उसकी मदद भी की थी। इस पर वह बोला, 'हां मुझे याद आ गया । लेकिन दोस्त, यह तो मनुष्य का सहज धर्म है कि वह मुसीबत में सहायता करे । इन गिन्नियों को अब अपने पास ही रखें । कभी कोई जरूरतमंद आए तो उसे दे दें'। उनकी यह बात सुनकर बेंजामिन फ्रैंकलिन बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अभिवादन कर वे गिन्नियां अपने साथ लौटा लाए । इसके बाद एक दिन उन्होंने एक जरूरतमंद व्यक्ति को वह गिन्नियां दे दीं। उस व्यक्ति ने बेंजमिन से गिन्नियां लौटाने की बात कही तो वह उससे बोले, ''दोस्त, जब तुम सक्षम हो जाओगे तो अपने जैसे किसी जरूरतमंद को ये गिन्नियां दे देना। मैं समझूंगा कि मेरी गिन्नियां मुझे मिल गईं''। किसी जरूरतमंद की वक्त पर मदद करना ही सबसे बड़ा काम है।

राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है। – **श्री अवनींद्रकुमार विद्यालंकार**

# सामाजिक विकास में साहित्य की भूमिका

डॉ. हरभजन सिंह हंसपाल

मानवीय सभ्यता के विकास काल से ही साहित्य और समाज का परस्पर घनिष्ठ संबंध रहा है। सामाजिक तथा राजनैतिक परिवर्तनों ने सदैव साहित्य को प्रभावित किया है और उसी तरह सत्ताधीशों के अत्याचारों का साहित्यकारों ने सदा विरोध किया है।

साहित्य और समाज का सबसे सुंदर स्वरूप हमें हिन्दी साहित्य के भक्ति काल में दिखायी देता है। जिस समय हमारा देश पराजय तथा हताशा की स्थिति में था और जब हमारे देशवासियों का आत्मविश्वास समाप्त हो गया था उस कठिन समय में हमारे भक्त संतों ने समाज को एक नयी दिशा प्रदान की। महाकवि तुलसीदास जी ने राम के लोक–मंगलकारी मानवीय स्वरूप को प्रस्तुत किया। उस समय के समाज में इससे एक नई आशा का संचार हुआ । उसी प्रकार सूरदास जी ने भगवान श्री. कृष्ण के चरित्र के विभिन्न रूपों का मनोहारी चित्रण कर के लोगों में यह विश्वास जागृत किया कि भगवान की भक्ति द्वारा खोई हुयी शक्ति और आत्मसम्मान को पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

भक्तिकालीन समाज को सबसे अधिक प्रभावित संत कबीर ने किया है। संत कबीर एक महान् क्रांतिकारी विद्रोही भक्त हुये है जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर जम कर प्रहार किया है। उन्होंने भारत वर्ष की दोनों प्रधान जातियों को समान रूप से फटकारा और समाज में एक सर्वव्यापी निर्गुण ब्रम्ह की भक्ति का उपदेश दिया।

भक्ति कालीन भक्त स्वतंत्र रूप से अपनी साहित्य साधना करते थे, इसी कारण उनकी लेखनी पर किसी भी राजकीय सत्ता का दबाव नहीं था। वे किसी राजा महाराजा के आश्रित अथवा दरबारी कवि नही थे। उन संतों का जनसाधारण पर गहरा प्रभाव था। वे समाज के किसी बंधन को स्वीकार नहीं करते थे और निर्भीकता से अपनी बात कहते थे। कबीर तुलसी और नानक जैसे संतों को तो समाज हित में तत्कालीन शासकों से भी संघर्ष करना पड़ा था।

भक्तिकाल के पश्चात स्वाधीनता आंदोलन में भी साहित्य कारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। सन् 1857 की क्रांति के समय भी साहित्यकारों ने समाज में स्वतंत्रता की भावना का प्रसार किया और लोगों में देशप्रेम की भावना का संचार किया। कई वर्षों तक चलने वाले स्वाधीनता आंदोलन के पीछे साहित्यकारों की क्रांतिकारी लेखनी सतत रूप से गतिमान थी।

बंगाल में बंकिम बाबू ने आनंदमठ उपन्यास की रचना की, उनके ''वंदे मातरम्'' गीत ने जन–जन को मातृभूमि पर प्राण न्योछावर करने को तैयार कर दिया। यह ''वंदे मातरम' गीत इतना लोकप्रिय हुआ कि लगभग सभी क्रांतिकारी वीरों ने इस गीत को गाते हुये अपने प्राण मातृ–भूमि को अर्पण कर दिये। स्वाधीनता के पूर्व सभी स्वाधीनता सेनानी इस गीत को राष्ट्र–गीत के रूप में गाया करते थे। एक गीत समाज में कितनी अधिक जागृति फैला सकता है इसका यह एक अपूर्व उदाहरण है।

हमारे देश के जितने भी शहीद हुये हैं उनका किसी न किसी गीत से अवश्य संबंध रहा है। अमर शहीद–शहीद होते समय 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है'' गीत गाते हुये मृत्यु को चूम लिया करते थे और भगत सिंग 'मेरा रंग दे बसंती चोला माये रंग दे बसंती चोला' गीत को गाते हुये शहीद हो जाते हैं।

सामाजिक विकास में साहित्य की भूमिका बहुत प्राचीन है। हम यदि अतीत में झांक कर देखे तो हमें आभास होगा कि हमारा वर्तमान समाज प्राचीन वैदिक सिध्दांतों पर आधारित है। वेदों में जो ज्ञान विज्ञान और चिकित्सा सम्बन्धी विचार संग्रहित हैं वे वर्तमान समय में विज्ञान तथा चिकित्सा शास्त्र को बहुत लाभ पहुँचा रहे हैं। हमारे आदि पूर्वज द्वारा निर्धारित समाज व्यवस्था आज भी किसी न किसी स्वरूप में हमारे देश में विद्यमान है।

लिखित साहित्य अनेक वर्षो तक सामाजिक विकास को प्रेरित करता रहता है। समाज पर साहित्य का कितना अधिक प्रभाव हो सकता है, इसका सबसे अच्छा उदाहरण **''गुरू ग्रंथ साहब''** नामक ग्रंथ है, जिसमें 42 संतों की वाणी संग्रहित है। इस ग्रंथ में केवल 6 गुरूओं की वाणी हैं, शेष 36 भक्त विभिन्न प्रदेश व सम्प्रदाय के हैं। धार्मिक समन्वय और सर्व धर्म समभाव का ऐसा उदाहरण अन्य किसी भाषा या राष्ट्र में दिखलायी नहीं देता । यह संसार का एक मात्र ऐसा ग्रंथ है जिसे गुरू का पद प्राप्त है और आज भी जीवित गुरू के रूप में इसकी पूजा अर्चना होती है।

वर्तमान समय में भी साहित्य ही है जो समाज को राजनीतिक आक्रमणों से बचाता है और समाज के सर्वांगीण विकास के लिये जनसाधारण को खतरों से सावधान करता है । आज तक साहित्य ने सामाजिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है और भविष्य में भी योगदान देता रहेगा।

✦ ✦ ✦

''अपने सपनों को साकार करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है कि आप जाग जाएं । –**''पॉल वैलेरी**

# क्रान्ति की प्रतिमान - भगत सिंह की माताजी

डॉ. धर्मेन्द्र शर्मा

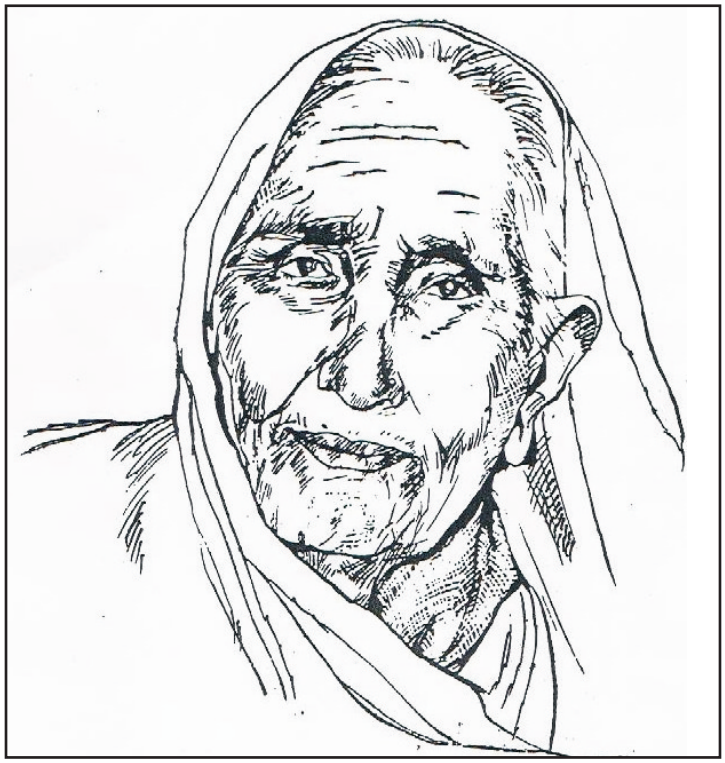

शहीदे–आजम भगत सिंह की माँ विद्यावती देवी के चेहरे पर उस समय बहुत चमक आ जाया करती थी, जब वे अपने अतीत का स्मरण करती थीं, फिर प्रसंग चाहे सरदार किशन सिंह के साथ उनके विवाह का हो या उनकी आँखों के तारे भगत सिंह की गौरव–गाथा का।

विद्यावती देवी में गजब की जीवटता थी। उनके जीवन में निरापद कुछ भी नहीं रहा, हाँ, विषमताओं ने उनका साथ पूरी वफादारी से निभाया था दाम्पत्य जीवन के आरंभ के पश्चात ही नियति की क्रूर बिडंबनाओं को उन्होंने सहा था। उनके देवर अजीत सिंह देश की आज़ादी का सपना संजोकर अड़तीस वर्षो तक न जाने कितने देशों की खाक छानते रहे। दूसरे देवर स्वर्ण की शहादत उनकी आँखों के सामने हुई । पति किशन सिंह का एक पैर घर में रहता, तो दूसरा जेल में। विद्यावती जी के ज्येष्ठ पुत्र जगत सिंह की 10-11 वर्ष की अल्पावस्था में ही सन्निपात के कारण मृत्यु हो गई थी। दूसरे बेटे भगत सिंह ने 23 वर्ष की अवस्था में आमंत्रित मृत्यु का वरण कर लिया था। उनके पुत्रों कुलतार और कुलवीर को अंग्रेजों ने छः– सात वर्षों तक जेलों का नारकीय जीवन व्यतीत करवाया। एक बार बाढ़ ने विद्यावती जी का घर बहा दिया। ईर्ष्यालुओं द्वारा लगाई गई आग से विद्यावती जी ने अपने खेतों की पकी हुई फसल को पथराई हुई आँखों से जलते देखा था। भगत सिंह की फाँसी के मुकदमे के समय जो खर्च हुआ था, उसे वहन करने के लिये उनके घर की एक–एक चीज़ बिक गई थी। इसी समय उनके घर डकैती पड़ गई, जिसमें डकैत उनके बैलों की जोड़ी ले उड़े। सन् 1939-40 में उनके पति को फालिज हो गया और वे अपंग होकर बिस्तर पर पड़े रहने लगे। ऐसे समय न जाने कितने दायित्वों का निर्वाह वे एक साथ करती थीं।

विषमताओं को सहेजना उनकी प्रकृति बन गई थी । इतने घातों – प्रतिघातों को झेलने के बाद उन्होंने अपने आशियाने को फिर से आबाद कर लिया। आपदाएँ सहते–सहते वे इतनी मजबूत हो चुकी थी कि मृत्यु के भय को उन्होंने जीत लिया था। मृत्यु कई बार उन्हें लेने आई, किन्तु उन्हें प्रणाम कर के स्वयं ही लौट गई । जीवन के विभिन्न पड़ावों पर उन्हें चार बार सर्प दंश का सामना करना पड़ा था। मृत्यु के प्रति ऐसी अडिगता व स्थिरता ने उन्हें भगत सिंह की माँ होना सिद्ध किया था तथा भगत सिंह ने मृत्यु का आलिंगन करते समय जिस वीरता पूर्ण मुस्कान को बिखेरा था, उसने भगत सिंह को विद्यावती जी का पुत्र होना सिद्ध किया था।

जिस समय भगत सिंह लाहौर की जेल में अपने जीवन की साँझ व्यतीत कर रहे थे उस समय वातावरण में व्याप्त खामोशी को भगत सिंह और उनके साथी अपने ठहाकों से शर्मिंदा कर दिया

जब हम हिंदी की चर्चा करते हैं तो वह हिंदी संस्कृति का एक प्रतीक होती है। – **श्री शांतानंद नाथ।**

करते थे। भगत सिंह और उनकी माँ के बीच हुए ऐसे ही एक वार्तालाप का सजीव शब्द–चित्र प्रस्तुत करते हुए भगत सिंह की भतीजी वीरेन्द्र सिंधु लिखती हैं–

''वे (विद्यावती जी) एक बार मुलाकात को गई, तो भगत सिंह ने कहा, 'बेबेजी, आप भी जेल में आ जाइये, यहाँ साथ ही रहेंगे, आपको भी चल कर नहीं आना पड़ेगा ।' वे उत्सुकता से बोलीं – कैसे आऊं बेटा? लेक्चर मुझे देना नहीं आता, पिकेटिंग (धरना) करके आ जाऊँ क्या? भगत सिंह बोले, 'नहीं, वह हमारा काम नहीं है'। वे भूल गई जेल और फाँसी को और बोलीं 'किसी को ढेला मार कर आ जाऊँ?' सुन कर भगत सिंह खिल–खिला पड़े और आसपास के दूसरे लोग भी हँसने लगे। सोचती हूँ, माँ–बेटे की ऐसी हँसी इतिहास ने कितनी बार देखी है?''

विद्यावती जी अपने पुत्र को फाँसी लगने से पहले जी भरकर निहार लेने की आस लिये जेल के द्वार तक पहुंचती थीं, तब कई बार प्रहरी उन्हें बाहर ही बिठा देते थे। विद्यावती जी की आँखों में उस समय वह तस्वीर उभरकर आ जाया करती थी, जब वे ग्वाल मण्डी, लाहौर के एक ज्योतिषी के पास अपने लाड़ले का भविष्य जानने गई थीं। ज्योतिषी ने तब उनसे भगत सिंह का कोई कपड़ा लाने को कहा था। विद्यावती जी भगत सिंह की पगड़ी लेकर बड़ी उम्मीदों के साथ पंडित जी के पास पहुँची । पंडित जी ने पगड़ी देखने के बाद कहा, 'तुम्हारे लड़के का भाग्य बहुत विचित्र है। या तो वह तख्त पर बैठेगा या फिर तख्ते पर झूलेगा।' क्रांतिकारी कुल में उत्पन्न हुए अपने बेटे के भविष्य के संकेत विद्यावती जी को मिल चुके थे।

अपने बेटों से आखिरी मुलाकात की बाट जोह रही भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव की माताओं के साथ उन दिनों एक विचित्र घटना घट गयी । भगतसिंह व चंद्रशेखर आजाद के क्रांतिकारी दल 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ' के कुछ सदस्यों ने भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव से मिलने की अभिलाषा व्यक्त करते हुए जेल के अधिकारियों को एक अर्जी लिख कर भेजी। इन तीनों क्रांतिकारियों की फाँसी से कुछ दिन ही बाकी बचे थे । जेल के अफसरों ने बड़ी चतुराई से इस प्रस्ताव को टालते हुये कह दिया कि इन तीनों विप्लवियों से वे ही लोग मिल सकते हैं, जो उनके परिवार के सदस्य हैं अथवा सगे – संबंधी हैं । भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव की मातायें भी इस समय अपने–अपने पुत्रों की अंतिम छवि को अपने अंतर में अंकित कर लेने के लिये आतुर थीं।

मृत्यु मार्ग में पलकें बिछाये बैठे भगत सिंह को जब अंग्रेजों के इन इरादों का आभास हुआ, तो उन्होंने बड़ी मजबूती से अपने इरादे जाहिर करते हुए कह दिया, ''इस समय हमारे देशवासी ही हमारे सगे–संबंधी हैं। यदि उनसे मिलने की इजाजत हमें नहीं दी जाती, तो हम अपने परिवार के लोगों से भी नहीं मिलेंगे ।'' जब तीनों वीर प्रसूताओं को यह बात पता चली, तो उन तीनों ने भी अपने – अपने पुत्रों की भावनाओं को पूरा–पूरा सम्मान देते हुए उनके निर्णय से अपनी सहमति जता दी । अपने पुत्रों के निर्णय से वे गर्वित तो थी, किन्तु हर्षित नहीं थीं। अपने बेटों की अंतिम झलक देखे बिना ही वे तीनों मातायें वापस लौट गई। इतनी गहरी पीड़ा सहने का सामर्थ्य संभवतः ईश्वर ने सिर्फ माताओं को ही दिया है।

23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरू तथा सुखदेव को फांसी के फन्दों पर झुला दिया गया। जब विद्यावती जी को यह समाचार मिला, तो उनके कानों में भगत सिंह द्वारा कहे गये अंतिम शब्द गूँजने लगे, ''बेबेजी, रोना मत । ऐसा न हो आप पागलों की तरह रोती फिरें! लोग क्या कहेंगे कि भगत सिंह की माँ रो रही है''। '' जब तक भगत सिंह जीवित रहे, तब तक उन्होंने अपनी माँ की आज्ञा का पालन किया, लेकिन जब भगत सिंह शहीद हो गये, तो विद्यावती जी ने अपने बेटे के आदेश का आजीवन पालन किया । पता नहीं कैसी–कैसी विचित्र पीड़ाएँ इस माँ को अपने जीवन में झेलनी पड़ी थीं। विद्यावती जी के मातृत्व की गहराई की कुछ थाह हम उनके इस वाक्य से पा सकते हैं, ''ईश्वर कोई ऐसी सर्वोत्तम व्यवस्था कर देते कि पुत्रों के दुःख माताओं को लग जाया करते, तो मातायें संसार में एक भी बेटे को दुःखी नहीं रहने देतीं।''

क्रांति कवि श्रीकृष्ण सरल ने जालंधर जिले के खटकड़कलाँ गाँव जाकर विद्यावती जी से भगत सिंह पर लिखे गये अपने महाकाव्य का लोकार्पण करने का निवेदन किया, तो

वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं । – **श्री मैथिलीशरण गुप्त**

माताज़ी ने उज्जैन पहुँच कर इस कार्य को सम्पन्न करने की स्वीकृति दे दी। जब उज्जैन वासियों को यह शुभ समाचार मिला तो वे खुशी से झूम उठे। जब माताजी उज्जैन पहुँची, तो नगर वासियों ने उनका स्वागत फूलों के साथ–साथ पलक पाँवड़े बिछा कर किया। एक खुली बग्घी में उनकी शोभा यात्रा निकाली गई। उन्हें दस हजार से भी अधिक फूल मालाएँ पहनाई गई। मालीपूरा मार्ग पर तो उन पर इतने फूल बरसाए गए कि सड़क दिखाई देना बंद हो गई। विद्यावती जी की बग्घी जिस मार्ग से गुजरती उस पर रंग–बिरंगे फूलों की चादर बिछ जाती थी। 9 मार्च, 1965 का दिन आधुनिक उज्जैन के इतिहास के सर्वाधिक गौरवशाली दिन के रूप में दर्ज हो चुका था।

संध्या वेला में छत्री चौक की सभा की छटा विद्यावती जी की उपस्थिती से अतुलनीय हो चुकी थी। राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रेम गीत गाये गये, भगत सिंह पर लिखी कविताएँ पढ़ी गईं तथा शहीदों के शौर्यपूर्ण जीवन को ओजस्वी भाषणों द्वारा प्रस्तुत किया गया। सारा वातावरण इतना मार्मिक हो गया कि कोई भी आँख आँसुओं को अपने भीतर सहेज कर नहीं रख सकी। विद्यावती जी ने अपनी चुप्पी तोड़ी और बोलना शुरू किया–

''तुम लोग रोते क्यों हो? आज तो मेरे भगत सिंह की शादी है । उस समय वह शादी के नाम पर घर छोड़ कर चला गया था। जिसे मैंने लाहौर में खो दिया था, उसे उज्जैन में पा लिया है। देखो, कितना अच्छा मण्डप सजाया गया है। फूलों की कितनी सुन्दर झालरें लटक रही है। चारों तरफ रोशनी जगमगा रही है। कवि लोग सेहरा पढ़ रहे है। घोड़ी गायी जा रही है। इसी से तो कहती हूँ कि आज भगत सिंह का विवाह हो रहा है। फिर तुम लोग रो क्यों रहे हो? रोओ मत, सब लोग खुशी मनाओं।''

जन समूह भाव–विभोर होकर दूर से ही विद्यावती जी की और फूल फेंकने लगा। यह स्थिति देख कर क्रांतिकवि श्रीकृष्ण सरल जी ने लोगों से अनुरोध किया कि ऐसा न करें, क्योंकि बड़े–बड़े फूलों से माता जी को चोट लग सकती है। यह सुनकर माताजी ने अपना मत रखा। ''लोगों को मत रोको। इनको अपने दिल की इच्छा पूरी कर लेने दो । यह तो फूल ही बरसा रहे हैं, अगर मेरे बेटे भगत सिंह की जय बोल कर कोई पत्थर भी मेरे ऊपर फेंके, तो वे भी मुझे फूल जैसे ही लगेंगे।''

माता जी के वचन सुन कर श्रोताओं के बदन में सिहरन दौड़ गई। वे गद्‌गद् हो उठे और 'धन्य हो माँ। धन्य हो माँ । भगत सिंह जिन्दाबाद!' के नारों से आकाश गूँज उठा। हैदराबाद से प्रकाशित होने वाली एक पत्रिका ने लिखा, ''सभा की समाप्ति पर लोग उन मालाओं का एक–एक फूल निकाल कर ले गये, जो माताजी को पहनाई गई थीं । जहाँ माताजी को बिठाया गया था, उस स्थान की धूल तक लोग खरोंच कर ले गये । महिलाओं ने अपने शिशुओं को माता विद्यावती के चरणों में डाल कर दुआएँ माँगी कि ये बच्चे भी भगत सिंह जैसे बहादुर बनें।''

सरल जी के जिस **'भगत सिंह महाकाव्य'** की प्रति पर माताजी ने हस्ताक्षर किये थे, उसे माधव कॉलेज ने 3,331 रूपयों में नीलामी में खरीदीं थी। श्रीकृष्ण सरल ने यह राशि माताजी के चरणों में अर्पित कर दी। माताजी को कार्यक्रम के दौरान 11,000 रूपये की सम्मान निधि भी अर्पित की गई थी । यह सब राशि विद्यावती जी ने सरल जी के मार्फत भगत सिंह के क्रांतिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के कैन्सर के इलाज के लिये दिल्ली भेज दी थी।

जब तक माताजी जीवित रहीं, वे गुमनाम क्रांतिकारियों व शहीदों के परिवारों को आर्थिक सहायता करती रहीं। उन्हें शासन की ओर से जो पेन्शन मिलती थी, उसे भी वे किसी रुग्ण और उपेक्षित क्रांतिकारी के तकिये के नीचे धीरे से दबा कर चली आती थीं। जिस माँ ने अपना बेटा ही देश पर लुटा दिया हो, उसके लिये रूपया–पैसा लुटाना फिर कौन सी बड़ी बात थी? 1 जून 1975 को दिल्ली के बिलिंगडन अस्पताल में इस ज्योति का मिलन परम ज्योति से हो गया।

✦ ✦ ✦

भाषा राष्ट्रीय शरीर की आत्मा है। – **स्वामी भवानीदयाल सन्यासी**

# हिन्दी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर - मैत्रेयी पुष्पा

डॉ. योग्यता भार्गव

**'एक जिद, एक साहस है कि, ऊँची उड़ान भर लूगी मैं। होगा मुझ पर सबको नाज, जब उन्नति के पथ पर चलूँगी मैं अपने अस्तित्व को बिना मिटाए, चुनौतियों से भी लड़ लूँगी मैं। मैं चलूंगी, निरन्तर चलती रहूँगी और जीत कर आऊँगी मैं'।**

नब्बे के दशक में जिन रचनाकारों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है और जिन्हें पाठकों ने हाथों–हाथ लिया, मैत्रेयी पुष्पा जी का नाम उनमें प्रमुख है। उन्होंने हिन्दी कथा धारा को वापस गाँव की ओर मोड़ा और कई अविस्मरणीय रचनाएँ हमें दी।

मैत्रेयी पुष्पा जी नारी लेखिका ही नहीं बल्कि नारी क्रांति के रुप में जानी जाती है। मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवम्बर 1944 को उ.प्र. के अलीगढ़ जिले के 'सिकुरा' नामक गाँव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता हीरालाल एक गरीब किसान थे। जब मैत्रेयी मात्र 18 माह की बच्ची थी तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई थी । अपनी बेटी को मैत्रेयी नाम उनके पिता ने ही दिया था। मैत्रेयी का लालन पालन उनकी माँ ने किया जो एक साहसी महिला थी तथा जिन्होंने अपनी बेटी को अच्छी शिक्षा दिलाने में कोई भी कमी नहीं की।

जहाँ उनकी माँ उन्हें एक आदर्श स्त्रीत्व से भरपूर और अनुशासन प्रिय जीवन देना चाहती थी, वही मैत्रेयी स्वच्छन्द और खुली हवा में जीवन जीना चाहती थी। मैत्रेयी ने बचपन में अपनी पढ़ाई को पूरा करने के लिये बहुत संघर्ष किया, साथ ही चुनौतियों का सामना किया। अपने खट्टे मीठे अनुभव से जूझती मैत्रेयी पुष्पा जीवन में आगे बढ़ी और आज वे एक उच्च कोटि की साहित्यकार हैं।

उनके द्वारा जो महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखी गई उनमें – चाक, इदन्नमम, अगनपाखी, झूलानट, अलमा कबूतरी, उनकी आत्म कथाऐं, कस्तूरी कुण्डल बसै तथा गुड़िया भीतर गुड़िया । ये उनसे हमें व्यक्तिगत तौर पर जोड़ती है। वहीं हर स्त्री को इनकी आत्मकथा अपनी सी जान पड़ती है।

इनके उपन्यास 'इदन्नमम' पर ही उनकों पाँच पुरस्कार प्रदान किये जा चुके हैं। वही इन्हें 'फैसला' कहानी पर हिन्दी अकादमी द्वारा साहित्य कृति सम्मान (कथा पुरस्कार) दिया गया। तो 'बेतबा बहती रही' उपन्यास पर उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा प्रेमचंद सम्मान, आदि अनेक सम्मान मिल चुके हैं।

मैत्रेयी जी का जीवन एक खुली किताब की तरह है। वैसे तो उनके कथा और उपन्यास रचना का वैचारिक परिप्रेक्ष्य जन–जन की समस्याओं से ओत–प्रोत हैं, लेकिन नारी जीवन की समस्याओं पर उन्होंने विशेष रूप से कलम चलाई । जहाँ कहीं भी नारी को समानता का स्तर प्रदान करने की बात संघर्ष रूप में आयी है, वहीं उनका नारी मन ज्वालामुखी की भाँति विस्फोटक हो उठता है।

खुद राजेन्द्र यादव द्वारा मैत्रेयी जी के बारे में कहा गया है ''कुछ अलग और नया था, जो मुझे तुम्हारी तरफ खींच रहा था। गाँव कस्बों का परिवेश, खेतिहर संस्कृति में बनते और बिगड़ते समीकरण, स्त्री के उभरते व्यक्तित्व की तेजस्विता, चुनावों पंचायतों में गाँव की बदहाली, अपराधी जनजातियों के मुख्य धारा में शामिल होने की जद्दोजहद, तुम्हारा अपना बिन्दास–जीवन बताओ, यह सब पहले इतने विस्तार से किसी लेखिका ने दिया था? रेणु के रोमानी अंदाज में यह सब था, मगर वहाँ स्त्री पक्ष कहाँ है?''

मैत्रेयी पुष्पा जी ने स्त्री–पुरुष संबंधों का ताना बाना अपने उपन्यासों में बुना है, परन्तु ये संबंध आधुनिकता और भागदौड़ की जिंदगी से परे अत्यन्त व्यक्तिगत और बुंदेलखण्ड की जमीं पर रचाये व बसाये गये है।

मैत्रेयी जी के पात्र बुंदेली जमीं से सराबोर होने के पश्चात भी स्वच्छन्द मनोवृत्ति के दिखलायी देते हैं। फिर चाहे वह मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यास 'झूलानट' की शीला हो या 'इदन्नमम' की कुसुमा भाभी। ये सभी पात्र विवाह जैसी आवश्यकता को आवश्यक नहीं मानते हैं। उनके पात्र स्वच्छन्द प्रेम में विचरण करते है। विवाह पूर्व लड़के और लड़की की सहमति भी आज अनिवार्य मानी गयी है और इस तथ्य को उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से अंकित किया गया है कि बिना मर्जी के विवाह जीवन में एक घुटन और आडम्बर भर देता है। तभी तो 'इदन्नमम' की मंदा और ''कस्तूरी कुंडल बसै' की पुष्पा दोनों अपनी मर्जी के खिलाफ विवाह को अमान्य कर देती हैं।

मैत्रेयी जी ने सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा मानवीय धरातल

भाषा के उत्थान में एक भाषा का होना आवश्यक है। इसलिये हिंदी सबकी साझी भाषा है। – **पं. कृ. रंगनाथ पिल्लयार**

पर की है, किन्तु पूर्व युगीन जर्जर प्रगति रोधी मूल्यों का खुले रूप में बहिष्कार किया है।

वर्षों से भारतीय समाज के अंतर्गत स्त्री की जो दीनहीन और 'हाय बेचारी' वाली स्थिति बनी हुई है, मैत्रेयी जी इस छवि को बखूबी तोड़ती नजर आती है। साथ ही उनके भीतर स्त्री इतनी सशक्त, मजबूत तथा दृढ़ दिखलायी देती है, जो हर क्षेत्र में लोहा लेने को तैयार है। उनके नारी पात्र किसी कल्पना महल के न होकर इसी धरातल के यथार्थ में जीवन यापन करते हैं, हँसते बोलते दिखलायी देते है, बुन्देलखण्डी जमीन और अनेकानेक समस्याओं से रूबरू होने के बाद भी उनके पात्र अन्य आधुनिक लेखिकाओं के पात्र से कहीं 'बोल्ड' दिखलायी देते हैं।

वे रहन सहन, खान पान व परिवेश की आधुनिकता को महत्व न देकर वैचारिक स्वतंत्रता व आधुनिकता की पक्षधर दिखलायी देती हैं। ग्रामीण जीवन को अपने लेखन का आधार बनाने पर भी उन्होंने नारी जीवन की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक समस्याओं के साथ–साथ नारी जीवन के विविध पहलुओं पर अपनी लेखनी चलायी है।

मैत्रेयी जी की नारियाँ चाहे जैसी परिस्थितियाँ हो, चाहे ग्रामीण परिवेश की या शहरी परिवेश की, दोनों का सामना करते हुये, कुचक्रों से पृथक रह वह अपने अस्तित्व से समाज को परिचित कराती है और समाज उसके अस्तित्व को स्वीकारता दिखता है। मैत्रेयी जी की नारियां संदेश देती हैं कि स्त्री वर्ग वह सब हासिल कर सकता है। बस, जरुरत है तो एक पुख्ता व बुलन्द इरादे की।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास संस्कार बिम्बों को जगाते, लगभग वृन्दावन लाल वर्मा की याद दिलाते हुये, महान साहित्यकार 'रेणु' से टक्कर लेते हुए औपन्यासिक यात्रा के जर्बदस्त मोड़ हैं, जो वर्तमान समाज में नारी की महत्त्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हुये, स्थान विशेष की संस्कृति को अवगत कराते हुये, समाज के धार्मिक – समाजिक, रीति – रिवाजों के बारे में जानकारी देते हुये, समाज के निम्न व निर्धन वर्ग की समस्याओं से रुबरू कराते हुये और इन सबसे बढ़कर समाज में जहर के समान फैली पश्चिमी संस्कृति में लिप्त भारतीय जन का पुनः अपनी भारतीय संस्कृति से जोड़ने की दीक्षा दिलाते हुये, समाज को नैतिकता व सदाचारिता का पाठ पढ़ाते हुये दिखलायी देते हैं और इन सब में नारी की भूमिका अपना विशेष स्थान रखती है।

मैत्रेयी पुष्पा की लोकप्रियता का सबसे बड़ा राज – उनका जन सामान्य और नारी जीवन की संवेदना से जुड़ा होना है। मैत्रेयी जी अपने जनपद के सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक जीवन को खंगालती हैं, वह खंगालने से निकलने वाली मलिनता की ओर भी सजग और सावधान हैं। ऐसे मौकों पर वह बुंदेलखण्ड के कस्बों खण्डों में अपनी झाड़ू को लिए उस सफाई करने वाली की तरह लगती हैं जिसे न गंदगी से परहेज है, न बदबू से । मुक्ति बोध की यह कविता मैत्रेयी पर सटीक बैठती है–

'' जो है उससे बेहतर चाहिए दुनिया को
साफ करने के लिए मेहतर चाहिए''

आज समाज को एक ऐसे ही मेहतर की आवश्यकता है जो समाज को उसका दर्पण दिखाए । मैत्रेयी जी निरन्तर आक्षेपों को झेलते हुए समाज को नवीन, स्वच्छ और स्वच्छन्द वातावरण प्रदान कर रही हैं।

मैत्रेयी जी के उपन्यास पढ़ने के बाद मैं कहना चाहूंगी कि ये उपन्यास नारी की जिंदगी से जुड़े विविध पहलुओं को जानने समझने और उसकी कुंठाओं, प्रवंचनाओं और वर्जनाओं के लिए भी पढ़े जाने चाहिए। नारी केवल 'देह' नहीं, वह चेतन तत्व भी है, जो अपनी निजी इच्छाओं, रूचि–अरूचि, तत्व एवं आवश्यकता का बोध करा सकती है। उनके नारी पात्रों के चित्रण से स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है कि नारी की एक स्वतंत्र अस्मिता है और वे विभिन्न व्यवस्थाओं के जाल में फँसकर भी अपने नारीत्व की स्वतन्त्र पहचान बनाये रख सकती है। मैत्रेयीजी स्पष्टता में विश्वास करती हैं। वे कहती हैं, जो है वही दिखना चाहिए, ऐसे न हो कि आप सोचें कुछ और कहें कुछ और । इससे व्यक्तित्व और चरित्र की सच्चाई सामने नहीं आ पाती। अपने आत्मकथात्मक उपन्यास 'कस्तूरी कुंडल बसै' में मैत्रेयी अपनी पति के गले लगकर रोती है और मायके वापस नहीं जाना चाहतीं, लेकिन जाना पड़ता है। समाज के हिसाब से यह उल्टी रीति है। देखा है ऐसा कहीं? साहित्य में भी नहीं । मैत्रेयी कहती है– ऐसा नहीं देखा, माना, पर होता ऐसा ही है। वह करो पर कहो मत और जो कहो वह करो मत में विश्वास नहीं रखतीं ।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ व उपन्यास पाठकों को गहन चिन्तन की ओर मुखरित करते हैं, साथ ही हिन्दी साहित्य को नवीन सिरे से विचार करने को विवश करते हैं।

✦ ✦ ✦

भाषा देश की एकता का प्रधान साधन है। – **आचार्य चतुरसेन शास्त्री**

# आज की दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी - कारण एवं निवारण

**डा. संजय जाधव**

आज हम 21 वीं सदी के पहले दशक को पार कर अगली मंजिल की ओर चल पड़े हैं। यह सदी ज्ञान–विज्ञान और सूचना–संचार एवं तकनीक की सदी है और आज के समय में पूरी दुनिया एक ग्लोबल विलेज में परिवर्तित हो चुकी है। इंटरनेट, मोबाईल, टीवी और तमाम सोशल वेबसाइटों के माध्यम से हम पल–पल की खबर रखते है और विश्व के कोने कोने से जुड़ गए हैं ।

किंतु वर्तमान समय में हम देखते हैं कि हमारे आस–पास युवा पीढ़ी के अधिकांश लोग गैर जिम्मेदार, तमाम अवगुणों से युक्त और संस्कारहीन होते जा रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी अनेक बुराईयों और व्यसनों की चपेट में आकर दिग्भ्रमित हो गई है। हमें इसके कारणों पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है।

1991 के बाद आए भूमंडलीकरण के दौर ने पूरी दुनिया की तस्वीर ही बदल के रख दी। भूमंडलीकरण संपूर्ण विश्व को एक ग्राम में तब्दील करने की अवधारणा है, जहां कोई सीमा नहीं, कोई दीवार नहीं। भूमंडलीकरण, आर्थिक उदारीकरण के इस दौर में तेजी से आधुनिकीकरण हुआ और हमारे समाज में खुलापन आया। ऐसे में पश्चिम संस्कृति के विचारों का प्रभाव हमारे युवा वर्ग पर तेजी से पड़ा, जिसकी वजह से हमारा युवा वर्ग अपनी भारतीय संस्कृति को भूल बैठा। हमारी शिक्षण संस्थाएं भी इसके लिए दोषी है, क्योंकि आज जरूरत है विवेकानंद, महात्मा गांधी जैसे महापुरूषों के विचार पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने की, जिससे युवा पीढ़ी को दिशा मिल सकें । किंतु आज के दौर में शिक्षा का व्यावसायीकरण हो गया है, जिसमें मात्र पाठ्यक्रम पूरा करने और किताबी शिक्षा देने पर जोर रहता है। शिक्षाविदों को यह समझने की आवश्यकता है कि केवल किताबी ज्ञान देकर हम अपनी युवा पीढ़ी को सक्षम नहीं बना सकते। समय के साथ पाठ्यक्रम में बदलाव होना चाहिए । पाठ्यक्रम में व्यवहारिक ज्ञान, रोजगारपरपक ज्ञान, समाज तथा परिवार के प्रति उत्तरदायित्व, राष्ट्रीयता, एकता–अखंडता, नैतिक आचरण जैसे गुणों की शिक्षा भी दी जानी चाहिए, क्योंकि इन गुणों के अभाव के कारण ही हमारी युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित होकर बुराईयों में लिप्त हो रही हैं।

समस्त शिक्षा संस्थानों के ढांचे में तथा उनके शुल्क में भी एकरूपता लाये जाने की जरूरत है। आज हम देखते है कि शिक्षा संस्थानों का शुल्क काफी अधिक होता है, जिससे गरीब एवं मध्यमवर्ग के बच्चे इन संस्थानों में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते । बहुत से मेधावी छात्र गरीब होने के कारण अपने स्वप्न साकार नहीं कर सकते हैं क्योंकि अधिकतर उच्चतर शिक्षा संस्थानों की फीस भरना उनके बस की बात नहीं होती है। जिस वजह से उनमें निराशा पनपती है और वे सही दिशा प्राप्त करने से वंचित रह जाते है।

इसके अलावा हम देखते हैं कि आज का युवा कम से कम समय में अधिक से अधिक पा लेना चाहता है। इसके लिए वे परिणाम की चिंता किए बिना कोई भी गलत कार्य करने को तैयार हो जाते है, जिससे अधिक से अधिक पैसा आ सकें । यह सब दिखावे की प्रवृत्ति के कारण होता है, जिसके कारण युवा वर्ग अपनी नैतिकता खो बैठता है और गलत कार्यों के चंगुल में फंसते चले जाता है। साथ ही आज की युवा पीढ़ी में नशीले पदार्थों का सेवन करने की चाह तेजी से बढ़ी है। गलत संगति से इस प्रकार की आदतें किशोरावस्था में ही बहुत से युवकों को लग जाती है और बाद में वे इन व्यसनों के गुलाम हो जाते है। अतः इस संबंध में परिवार के लोगों और शिक्षकों को बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

आज के दौर में युवा वर्ग इंटरनेट का भी बहुत आदी हो गया है। इंटरनेट का सदुपयोग करने के बजाय वे इसका गलत कार्यों में उपयोग कर रहे हैं। इसके माध्यम से बहुत से युवक–युवतियां अश्लील फिल्म देखकर अपना नैतिक पतन तो करते ही है साथ ही अपना अमूल्य समय भी बरबाद करते हैं। कुछ लोग फेसबुक, वाट्सअप जैसे माध्यमों से जुड़कर गलत संदेश भेजकर समाज में

अगर किसी देश को भ्रष्टाचार–मुक्त और सुन्दर–मन वाले लोगों का देश बनाना है तो मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं – पिता, माता और गुरू । **– डॉ. ए पी जे अब्दुल कलाम**

अफवाहें फैलाने का कार्य करते है। इससे सामाजिक और राष्ट्रीय माहौल तो खराब होता ही है, युवा वर्ग की मनःस्थिति और पढ़ाई लिखाई पर भी बुरा असर पड़ता है। अतः इस दिशा में भी हमें युवा पीढ़ी को सचेत करने की आवश्यकता है।

आज की युवा पीढ़ी हमारी गौरवशाली भारतीय संस्कृति को भूल चुकी है। वह पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण कर अपनी खान–पान, रहन–सहन की आदतों को बिगाड़ रही है, जो कि अत्यंत ही दुर्भाग्यपूर्ण है! आज हमें यह समझना आवश्यक है कि युवाओं को देश का जिम्मेदार नागरिक बनाना है । शिक्षकों को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए, क्योंकि देश को संवारने की जिम्मेदारी उन पर है। शिक्षा के क्षेत्र में भी ऐसे ही व्यक्तियों का चयन होना चाहिए जो स्वयं चरित्रवान, अच्छे आचरण वाले एवं विद्वान व्यक्ति हो, तभी उनका सुप्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ सकता है। हमें नई त्रिवेणी संगम वाली योजना की शुरूआत शिक्षा के पाठ्यक्रम में करनी होगी, जो ज्ञान, विज्ञान एवं अध्यात्म से युक्त हो।

हमें अगर अपनी आने वाली पीढ़ी को सुसंस्कारित, नैतिकतावादी और सक्षम बनाना है तो हमें उन्हें स्कूलों/महाविद्यालयों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा देनी होगी, नशा और धूम्रपान जैसी बुराईयों के प्रति आरंभ से ही सचेत करना होगा, उनमें योग–आध्यात्म के प्रति रूचि जागृत करनी होगी, उनकी प्रतिभा को निखारना होगा और पारिवारिक–सामाजिक मूल्यों के प्रति सजग रहना होगा। तभी हमारी युवा पीढ़ी मजबूत बनेगी और विश्व स्तर पर भारत का नाम रौशन होगा।

✦ ✦ ✦

## पाप की जड़

राजा सत्यप्रिय एक धर्मपरायण शासक थे। एक दिन वे सोचने लगे कि आखिर मनुष्य पाप करने को विवश क्यों होता है? यह जिज्ञासा उन्होंने अपने गुरु के सामने रखी। गुरु मुस्कराते हुए बोले, 'राजन, इसका जवाब विद्यामती ही दे सकती है।' बस, राजा विद्यामती के पास जा पहुंचे । विद्यामती अति रूपवान और गुणवान थी। राजा ने उसे अपनी जिज्ञासा बताई तो उसने कहा, 'इसका जवाब पाने के लिए आपको कुछ दिन मेरे यहां अतिथि बनकर रहना होगा।' राजा बोले, 'मगर, मैं यहां कैसे ठहर सकता हूँ। मेरी प्रजा दिन–रात मुझे अपनी समस्याएं बताती रहती है।' राजा की बात बीच में ही काटकर विद्यामती बोली, 'पर प्रश्न का उत्तर तो आपको तभी मिल पाएगा।' यह सुनकर राजा वहीं रुक गए और अपने राज्य में सूचना भिजवा दी कि वह एक आवश्यक कार्य से बाहर हैं। विद्यामती राजा की दिन–रात सेवा करती, उन्हें स्वादिष्ट भोजन खिलाती और उनसे ज्ञान–विज्ञान व वेदों आदि के बारे में बातें करती। राजा विद्यामती पर मोहित हो गए और एक दिन उन्होंने प्रणय निवेदन कर डाला । इस पर विद्यामती बोली, 'बस महाराज, आज आपको जवाब मिल गया। अब आप जा सकते हैं।' राजा ने हैरानी से कहा, 'यह मेरा उत्तर नहीं' विद्यामती बोली, 'पाप की जड़ लोभ है, जिसकी चपेट में आज आप भी आ गए । कहां तो आप यहां रुकने तक को राजी नहीं थे और कहां आज मुझे अपनी रानी बनाने को भी तैयार हैं। लोभ ही मनुष्य को गलत मार्ग की तरफ खींच ले जाता है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर देता हैं।'' जवाब सुनकर राजा लज्जित हो गए और उसे प्रणाम कर राजमहल लौट गए।

जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा में नहीं चलेगा, तब तक हम यह नहीं कह सकते हैं कि देश में स्वराज्य है ।

**– श्री मोरारजी देसाई**

# इम्तिहान

**श्री परिमल बनाफर**

घटना मेरे बचपन की है, जब मैं पांचवी कक्षा में पढ़ने वाला अबोध बालक था। संसार में जितना प्रेम मुझे किसी वस्तु या व्यक्ति से नहीं, उतना प्रेम मुझे अपनी माँ से है। रात को जब तक माँ एक कहानी न सुना दे, मुझे नींद आने से रहती । माँ जिला परिषद में शिक्षिका है। सो अगले दिन सुबह पाठशाला जाने देर न हो जाए, इसलिए जल्दी ही सो जाती । आज मैं कहानी के लिए खूब जिद करने लगा और माँ मुझे टालने की कोशिश कर रही थी। किन्तु मैं भी चालाक था । माँ बोली, ''कल पक्का कहानी सुनाऊंगी और कल अच्छी वाली सुनाऊंगी।'' मैं इतनी आसानी से न माननेवाला था । मैं बोला, ''और अगर ना सुनायी तो?'' माँ ने मुझे वादा करते हुए कहा, ''कल पक्का सुनाऊंगी । कल अगर तबियत अच्छी भी नहीं हो, तो भी कहानी पक्की !'' इसी के साथ समझौता हुआ और मैं अच्छे बालक की तरह सो गया।

अगले दिन मैं पाठशाला चला गया । पाठशाला का नया सत्र आरम्भ हो चुका था और मैं झूमते–खेलते मस्ती में पाठशाला से घर लौटा। घर पर मेरी देखभाल हेतु आया थी, जिसे मैं 'ताई' कहता था। घर आते ही ताई ने मुझे खाना परोसा । घर में मैंने चारों ओर सामान फेंका और ताई उसे सँवारने में जुट गयी। यह मेरी रोज की दिनचर्या थी।

पाँचवी कक्षा के पहले सत्र तक कापी में पेंसिल से लिखवाते हैं। आज दूसरे सत्र का पहला दिन था। सो मैडम ने पेन से लिखना सिखाया था। आज मैं अपनी कॉपी में पेन से लिखना आरम्भ करनेवाला था और कल ही पिताजी ने मुझे नया पेन दिलवाया था, जिससे लिखने की मुझे बहुत जल्दी थी। इसीलिए मैंने भोजन भी झटपट निपटा लिया। ये बालमन भी कितना मासूम होता है। छोटी–छोटी बातों में इतना आनंद पा लेता है, माना इसका विश्व ही छोटा सा हो।

एकाएक ताई ने मुझसे कहा, ''अरे बेटा पता चला, माँ का आज स्कूल जाते समय एक्सीडेंट हो गया ।''

मैंने घबराते हुए कहा, ''कुछ भी कहती हो ताई ? ये कैसे हो–सकता है?''

ताई – '' हाँ बेटा, अभी–अभी थोड़ी देर पहले तुम्हारे पिताजी ने माँ को अस्पताल में भर्ती किया है। माँ के पैरों में पलस्तर भी लगा है। थोड़ी देर पहले फोन आया था । माँ को घर पर ला रहे है। ईश्वर करें ज्यादा चोट न आई हो।''

अब तो मैं समझ गया था कि ताई मज़ाक नहीं कर रही, पर फिर भी अपने दिल को तसल्ली देने हेतु मैं बोला, ''तुम कुछ भी बोलती हो ताई! झूठ!'' ऐसा कहकर मैंने अपना बस्ता खोला और गृहकार्य पूरा करने में मग्न हो गया। हाँ, मग्न हुआ, पर पढ़ाई में नहीं, मन ही मन माँ के बारे में सोचने में । नए पेन से लिखने की उत्सुकता भी मानो कहीं गायब सी हो गयी थी और उसका स्थान चिंताग्रस्त डर ने ले लिया । इतने में फाटक की आवाज आयी। मैंने उठकर देखना चाहा, पर हिम्मत ढीली पड़ गयी । मन में विचार आया, ''कहीं ताई ने जो कहा वो सच तो नहीं? माँ को अस्पताल से ही तो ले नहीं आ रहें?'' फिर सोचा कि ये तो हो ही नहीं सकता । उस विचार पर ध्यान न देकर अगले ही पल विचार बदल डाला, ''मैं अभी उठकर फाटक पर देखता हूँ और ताई को बतला दूं, कि जो वो कह रही है वो सब झूठ है।''

अगले कुछ ही क्षणों में द्वार का दृश्य देखकर अपने विचारों को पूर्णविराम दे दिया । माँ के पैर में पलस्तर लगा हुआ है। माँ कुर्सी पर बैठी हुई है। उस कुर्सी को पिताजी और बड़ी माँ धकेलते हुए, माँ को घर में ला रहे हैं। माँ की यह हालत देख मेरा हृदय धक्–धक् करने लगा। खून सर्द हो गया। कंठ भारी हो गया । मालूम हुआ किसी ने शीशा पिघलाकर पिला दिया हो। अश्रु मानों

मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नही सह सकता । – **आचार्य विनोबा भावे**

आँखों के पीछे ही खड़े इंतज़ार कर रहे हो, जैसे ही बाँध फूटेगा वैसे ही वे अपनी राह बना लेंगे। मैं माँ की ओर उन्हीं नेत्रों से ताक रहा था। मेरी ऐसी हालत थी कि अगर मैंने अपने मुँह का द्वार नहीं खोला तो आँखों का बाँध फूट जाएगा, इस डर से मैंने फ़ौरन माँ से कहा, ''अरे वाह माँ, आज तूने साड़ी तो बहुत सुंदर पहनी है।'' और ऐसा कहकर फिर अपनी ही जिव्हा काट ली। इससे पहले मैं उलझन से बाहर निकलूँ, पिताजी और बड़ी–माँ, माँ को अंदर के कमरे में ले जा चुके थे। माँ को गद्दे पर लिटाया और पिताजी कोई दवा लाने तुरंत बाहर निकल पड़े। बड़ी–माँ भी माँ की देखभाल करती अंदर ही बैठी रही और मैं अकेला ही अपने दिल की धड़कनों को गिनते हुए बैठक–खाने में बैठा रहा ।

अंदर के कमरे में जाने का मेरा साहस ही नहीं था। डर था, कहीं मैं रोना–धोना न शुरू कर दूँ । लग तो रहा था कि माँ की बाहों में अपने अश्रुओं को बहने दूँ। पर फिर सोचा कि अगर रोऊँगा तो माँ क्या सोचेंगी। अजीब कशमकश थी मेरे बालमन की । इसी उधेड़बुन में मैं अपना गृहकार्य करते हुए बैठक–खाने में ही बैठा रहा। नये पेन से मैं लिख रहा था, पर हाथ थरथरा रहे थे। पेन की निब कागज़ पर टिकाकर शून्य बैठा रहा । पन्द्रह मिनट बीत गए। लगा जैसे, पन्द्रह घंटे बीत चुके हो । कागज़ पर पेन की स्याही फ़ैल गयी, तब जाकर मुझे ध्यान आया। अंदर जाकर माँ से मिलने का मन कर रहा था। पर फिर वही कशमकश सता रही थी। आखिरकार मुझे इस परिस्थिति से छुड़ाने की ईश्वर ने ही ठानी । मैं इतनी देर से माँ से मिलने अंदर नहीं आया इसलिए बड़ी – माँ ने मुझे पुकारा । मैं इस तरह दौड़ता अंदर गया मानों कई सालों बाद माँ से मिलने जा रहा हो । कमरे में प्रवेश किया और चुपचाप जाकर माँ के पासवाले बिस्तर पर बड़ी– माँ के साथ बैठ गया। माँ की ओर देखने में भी मेरी सारी शक्ति खर्च हो रही थी। मैं अपने आप को अशक्त महसूस कर रहा था। जुबान से एक लफ़्ज़ भी बोलने की ताकत न थी। फिर बड़ी–माँ ने स्वयं ही से मुझे तसल्ली देना शुरू किया, ''कुछ नहीं हुआ बेटा, बस पैर में थोड़ी सी चोट आयी है।'' मैंने मौन तोड़ने से मना कर दिया । इससे आगे मैं एक और मिनट वहाँ नहीं रुक सकता था। वरना आँखों का बाँध फूटकर बाढ़ आ जाती। कुछ सामान बाहर रह गया है, ये बहाना कर मैं कमरे से बाहर दौड़ा चला आया तो सीधा आँगन में ही जाकर रुका। दीवार से टिककर मर्माहत–सा खड़ा रहा, फिर धीरेसे नीचे बैठ गया, आसपास कोई नहीं ये सुनिश्चित किया और इस तरह फूट–फूटकर रोने लगा मानों, हृदय और प्राणों को आंसुओ से बहा दूँगा।

पिताजी और माँ ने अंदर कमरे में रात का भोजन किया । मैंने टीवी देखने का बहाना किया और बैठक–खाने में अकेले ही खाना खाया। निवाले गले से नीचे उतर नहीं रहे थे। खाने का मन नहीं था। किसी को पता न चले इसलिए चुपके से अपनी थाली का बचा हुआ खाना बाहर कुत्ते को खिला आया। फिर बहुत देर बाद माँ के कमरे में सीधा सोने के लिए गया।

अब मन का रुदन शांत हो गया था। माँ से बात की। अचानक माँ को याद आया कि उन्होंने मुझसे आज अच्छी सी कहानी सुनाने का वादा किया था । माँ ने कहा, ''कल मैं बोली थी बेटा कि आज अगर तबियत खराब भी हो जाए तो भी कहानी सुनाऊंगी। देख आज सचमुच मेरी तबियत खराब हो गयी।''

माँ का किया वादा मुझे याद आया । फिर मेरे बालमन में विचारचक्र दौड़ा, ''ईश्वर कितना निष्ठुर है। माँ मुझसे किया वादा निभाती है या नहीं, केवल ये देखने के लिए उसने आज माँ की तबियत सचमुच खराब कर दी। मामूली से वादे के लिए ईश्वर ने माँ का कितना कड़ा इम्तिहान लिया । ईश्वर को मेरी माँ की जरा भी परवाह नहीं। हाय रे ईश्वर! तेरा दिल इतना छोटा भी हो सकता है''!

मैं इन्हीं विचारों के चक्रव्यूह में खोया रहा । मेरे बालहृदय ने भी मुझसे कहा कि क्या ऐसी हालत मे भी माँ से कहानी सुनाने की ज़िद करूँगा?

''क्या इस अबोध बालक का मन माँ की उस गंभीर स्थिति को समझ पायेगा?'' मानो ईश्वर ने कुछ ऐसा इम्तिहान शायद मेरा भी ले लिया।

✦ ✦ ✦

हिन्दी एक जानदार भाषा है । यह जितनी बढ़ेगी, देश को उतना ही लाभ मिलेगा । **– पं. जवाहरलाल नेहरू**

# मुक्ति

**गीतिका द्विवेदी**, पुणे

फोन पर बात करने के बाद मैं बहुत ही उधेड़बुन में पड़ गई। समझ में नहीं आ रहा था कि मैं फूट–फूट कर रोऊँ या खुश हो जाऊँ उसके लिए, जिसका शरीर पिछले कई वर्षों से इस धरती पर तो था किंतु एक मशीन की तरह। उसके शरीर की आत्मा भी उसकी आत्मीया न थी। अपने चालीस वर्षों की आयु में न जाने वो कितनी बार मर चुकी थी। आज आखिरकार मेरी बाल सखी की मृत्यु हो गई यह सुनकर मैं स्थितप्रज्ञ की स्थिति में आ गईथी।

उसकी भाभी फोन पर मुझसे बहुत मिन्नतें कर रही थी कि मैं 'रेशा' के अंतिम दर्शन कर लूँ। रेशा की भाभी की फोन पर रोती हुई आवाज मुझे चिढ़ा रही थी। कितनी दिखावटी दुनिया है। जब तक रेशा जीवित थी, भाभियों को फूटी आँख नहीं सुहाती थी। बेचारी पति के घर से निष्कासित तीन भाइयों के घरों में कैरमबोर्ड की गोटी की तरह इस घर से उस घर तक अपने बेचारगी के स्ट्राईगर के बदौलत ठेली जाती रही थी। आज मुझे अपनी रुलाई से ये ज़ाहिर करना चाहती है कि वह अपनी इकलौती ननद की मृत्यु से बहुत दुखित है! छीः घिन आती है मुझे इन मुखौटों से।उन्हें भी मालूम है कि मैं उन लोगों के मुखौटों के अंदर के चेहरे को अच्छी तरह जानती हूँ। मैं उस घर के लिए अजनबी नहीं हूँ। मैंने देखा है रेशा के भाईयों का रेशा के लिए जुनून से लबालब प्यार। माता–पिता की शहजादी रेशा । मैं सिर्फ उसके सुख की साक्षी नहीं रही हूँ उसके दुख, अकेलेपन और अपमानजनक समय की संगी भी रही हूँ।

सुंदर, सलोनी, मृदुभाषी रेशा की शादी जब शहर के जाने माने ज़ेवर के व्यापारी के इकलौते बेटे से हुई थी तो उसकी सबसे करीबी मैं ही तो थी। उस वक्त बारातियों की रईसी और सजीले दूल्हे को देख कहीं न कहीं मेरा भी मन धड़का था । परन्तु बाल सखी के इस सौभाग्य पर रत्तीभर भर भी जलन नहीं हुई थी। रेशा विदा हो गई किंतु एक ही शहर में विवाह होने के कारण उसका आना–जाना लगा रहता था। उसके विवाह को कुछ महीने ही हुए थे कि उसके ससुराल वालों ने उसे मायके में रहने को मजबूर कर दिया। ज़ेवर के व्यापारी ने रेशा के अंदर छिपे असंख्य रत्नों की कद्र नहीं की और उसे उन्नीस साल की अवस्था में परित्यक्ता घोषित कर दिया गया। अधूरी पढ़ाई, कच्ची उम्र और अपार सुंदरता के साथ तलाकशुदा तग़मा । धीरे – धीरे उसकी भाभियों के व्यवहार में फर्क पड़ने लगा।

मैं भी अपनी उम्र के उस दहलीज पर थी कि रेशा के जीवन में आए उस तूफान की गम्भीरता को समझ नहीं पा रही थी। हाँ, जब भी रेशा के घर उससे मिलने जाती थी तो मुझे उसकी भाभियों के व्यवहार में बहुत फर्क दिखाने लगा था। पहले बड़ी भाभी कब हँसते हुए नाश्ते की तश्तरी और शर्बत हमारे पास रख जाती थीं हमें पता भी नहीं चलता था । परन्तु रेशा की वापसी के बाद जब कभी मैं उसके घर जाती थी तो शर्बत के आने से पहले ही मुझे मालूम हो जाता था कि थोड़ी ही देर में हमारे सामने शर्बत आने वाला है। रसोईघर से शर्बत में चीनी घोलने की आवाज रेशा के कमरे तक आती थी । गिलास और चम्मच का घर्षण बेचारी चीनी किस प्रकार सहन करती थी वो ही जाने किंतु मैं उस घर के सदस्यों की बेरुखी अधिक दिनों तक नहीं सहन कर पाई। अपनी माँ की हिदायत मानते हुए मैं अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गई और धीरे–धीरे मेरा रेशा के यहाँ जाना बहुत कम हो गया। रेशा भी अपनी पढ़ाई पूरी करने में लग गई।

एक दिन पता चला कि रेशा की दूसरी शादी हो गई और वह किसी दूसरे शहर में चली गई। इतनी गुपचुप शादी, मुझसे भी छिपाया गया। उसके सुखद भविष्य की कामना करती हुई मैंने अपने अंदर उठते इस शिकायती दुख को कम करने की कोशिश की । कुछ दिनों के बाद मैं भी वैवाहिक बंधन में बंध कर दूसरे शहर में अपना घर संसार बसा कर व्यस्त हो गई।

पिछले साल एक दिन अचानक इनौरविट मॉल में एक नारी कंठ से अपने बचपन का नाम सुनते ही हर्ष मिश्रित आश्चर्य से जब

उस ओर देखी तो मैं भावशून्य हो गई। जीर्ण काया, पिचके गाल, हाँ उसकी आँखें बहुत अपनी सी लगी। उसके साथ तकरीबन पंद्रह – सोलह महीने का पिलपिला सा बच्चा था। पास गई तो पता चला ये तो रेशा है! करीब के कॉफी हाउस में हम दोनों बैठ कर काफी देर तक बातें करते रहे। दूसरी शादी से भी उसे खुशियाँ नहीं मिली। उसका दूसरा पति तलाकशुदा औरत को ब्याह कर नहीं लाया था बल्कि उसने तो धनवान घर की इकलौती बेटी को अपने घर में शरण दी थी जिसे जब चाहे अपने लोभ की अग्नि का होम बना सके। रेशा की आहुति दे कर वो दस साल तक उसके मायके से पैसे लेता रहा। इस बीच उसने दो बेटों को जन्म दिया। दस साल तक ससुराल और मायके की चौखट नापते – नापते आखिरकार रेशा हमेशा के लिए मायके आ गई। बड़ा बेटा पूरी तरह उसकी सास के गिरफ्त में था इसलिए वो उसके साथ नहीं आया। छोटा बेटा उसके साथ है। रेशा के भाईयों का व्यापार के साथ–साथ घर भी बंट चुका था। एक भाई पुणे में है इसलिए वो अपने माता – पिता के साथ आई है। मेरे घर से उसके भाई के घर की दूरी बहुत अधिक थी फिर भी हमारा मिलना – जुलना हो ही जाता था। वो तो मेरे घर बहुत नहीं आ पाती थी किन्तु मुझे अकसर मेरे पति वहाँ तक पहुँचा देते थे ताकि मैं रेशा के कुछ गमों को कम कर सकूँ।

अंतिम बार एक महीना पहले उससे मिली थी। घर का माहौल इतना भारी था कि मेरे लिए वहाँ रुकना मुश्किल हो रहा था। भटकती आत्माओं की तरह कोई न कोई आकृति हम दोनों के बीच आ ही जाती थी। उसकी भाभी की भावभंगिमा मेरे लिए असहनीय हो रही थी। रेशा की बड़ी – बड़ी वो आँखें बहुत कुछ कहना चाह रही थीं, कुछ कह भी रही थी। मैंने कुछ हद तक तो उसकी आँखों की भाषा पढ़ भी ली थी किन्तु उसकी आँखों के नीचे की कालिमा को मैं नहीं पढ़ पाई। आज अचानक रेशा की मृत्यु की खबर ! अंतिम दर्शन, उसके शरीर का?

मेरा मन बोल उठा – नहीं, रेशा मरी नहीं है। उसे तो मुक्ति मिल गई उन रिश्तों से, जो उसके लिए बने ही नहीं थे।

✦ ✦ ✦

## सबसे अच्छी चीज दें

एक बार डॉ. राम मनोहर लोहिया फरुर्खाबाद से शिकोहाबाद रेल पकड़ने जा रहे थे। रास्ते में एक जगह कव्वाली का आयोजन हो रहा था। आवाज सुनते ही उन्होंने गाड़ी रुकवाई और कव्वाली सुनने चले गए। वहां उन्हें एक व्यक्ति ने पहचान लिया और बोला–अरे लोहिया जी आप यहां? फिर धीरे–धीरे सभी ने उन्हें पहचान लिया और काफी लोग वहां उनसे दुआ सलाम करने लगे। जिस व्यक्ति ने लोहिया जी को सबसे पहले पहचाना था वह बहुत ही गरीब था। उसने जोरदार सर्दी में भी केवल लुंगी और कमीज पहनी हुई थी। डॉक्टर साहब ने उस व्यक्ति से कारण पूछा तब उसने बताया कि –साहब मैं गरीब आदमी हूं। ऊनी कपड़े नहीं हैं। यह सुनते ही डॉक्टर साहब ने जगेश्वर मिश्र जी से कहा– मेरे बक्से में दो स्वेटर रखे हैं, एक स्वेटर लेकर आओ। जनेश्वर जी ने बक्स खोला तो उसमें एक आधी बाजू की और एक पूरी बाजू की स्वेटर थी। उन्होंने आधी बाजू की स्वेटर ली और लोहिया साहब को दे दी। आधी बाजू की स्वेटर देखते ही लोहिया जी ने कहा– आप फिर जाइए और दूसरी वाली लेकर आइए। इस बार वह पूरी बाजू की स्वेटर लेकर आए और डॉक्टर साहब को दे दी। डॉक्टर साहब ने आधी बाजू की स्वेटर के बजाय उस व्यक्ति को पूरी बाजू की स्वेटर भेंट कर दी। वह बहुत खुश हो गया और डॉक्टर साहब को दुआएँ देने लगा। वहां से निकल आने पर डॉक्टर साहब ने जनेश्वर मिश्र से पूछा– तुमने अपनी गलती महसूस की? देखो, किसी को कभी कुछ देना हो तो अपने पास जो सबसे अच्छी चीज हैं, वही उसे देनी चाहिए।

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।

# जायसी का रहस्यवाद

**डॉ. पुष्पा पुष्पध**

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार साधना के क्षेत्र में जो ब्रह्म है वही साहित्य के क्षेत्र में रहस्यवाद है। रहस्यवाद ब्रह्म से आत्मा के तादात्म्य का प्रकाशन है।

आचार्य शुक्ल ने जायसी के रहस्यवाद पर विस्तार से प्रकाश डाला है। इन्होंने सूफी रहस्यवाद को भारतीय अद्वैतवाद का ही विदेशी रूप माना है। अद्वैतवाद भारतवर्ष में ज्ञान क्षेत्र से उत्पन्न हुआ और अधिकतर इसी क्षेत्र में सीमित रहा परंतु अरब, फारस आदि देशों में जाकर यह भाव–क्षेत्र के बीच मनोहर रहस्य – भावना के रूप में फैला । सूफी कवि स्वयं को स्त्री मानकर अपने प्रियतम पुरूष रूप में भगवान की भावना करने लगे। वे स्वयं प्रियतमा बनकर उस परमपुरूष प्रियतम से मिलने का प्रयत्न किया करते थे।

भावना जब अद्वैतवाद से प्रभावित होकर व्यक्त होती है तब 'भावनात्मक ''अद्वैतवाद'' की सृष्टि होती है परंतु जब योग का सहारा लेती है तब ''साधनात्मक रहस्यवाद'' उत्पन्न होता है। रहस्य भावना का आधार कोई न कोई विश्वास होता है और उसी कोटि की रहस्य भावना होगी।

हिंदी कवियों में अनेकों ने रहस्यवाद का दृष्टिकोण अपनाया है। इनमें जायसी का रहस्यवाद अत्यंत सुंदर और रमणीय है जायसी की भावुकता अत्यंत उच्च कोटि की है। जायसी से पूर्व भी प्रेमगाथा के रूप में इसी अद्वैत रहस्यवाद की परंपरा चली आ रही थी। जायसी ने यह परंपरा उन्हीं से ग्रहण की । उस परम्परानुसार जायसी प्रियतम की छाया पूरे विश्व में देखते हैं।

ब्रह्म का अनुभव इन्द्रियातीत होता है। उसे इन्द्रियगम्य बनाने के लिए जायसी ने लौकिक प्रेम का सहारा लिया है। मधुर से मधुरतम की ओर ले जाने की पद्धति यही है। इसमें दाम्पत्य जीवन के प्रेम जनित सुख का स्मरण दिलाकर दिव्य जीवन की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी जाती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह रहस्यवाद दाम्पत्य जीवन का ही दिव्य स्तरों पर भोग है। रहस्यवादी साधकों के अनुसार लौकिक भोग क्षणिक और प्रपंचों में उलझा देने वाला है जबकि दिव्य भोग शाश्वत, ज्ञान प्रकाशक और अलौकिक है। इसकी सत्ता एक है। जीव और ब्रह्म एक है और प्रकृति भी ब्रह्म का ही एक रूप है। गुरूत्व सूफी रहस्यवाद का प्राण है। 'पद्मावत' में रत्नसेन गुरू तोते का उपदेश सुन मूर्छित हो जाता है। उसे वैराग हो जाता है। राज–पाट छोड़कर जोगी हो जाता है। नाना प्रकार की कठिनाइयों को पारकर पद्मावती को पाने में सफल होता है। सूफियों ने साधना मार्ग की कठिनाइयों का बहुत अधिक वर्णन किया है। मार्ग की ये कठिनाइयाँ ही सूफी साधना की चार अवस्थाएँ – शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारिफत जानी जा सकती है। सूफी साधना में सौंदर्य व प्रेम अनिवार्य तत्व माने गए हैं। इनके अनुसार जब प्रकृति इतनी सुंदर है तो मूल कितना सुंदर होगा।

जायसी का रहस्यवाद भावात्मक हैं। प्रेम उनका प्रधान प्रतिपाद्य है। जायसी की प्रेम भावना का दृष्टिकोण अनिवर्चनीय है। घायल की गति घायल ही जानता है। इसी प्रकार प्रेम की पीड़ा का अनुभव वही कर सकता है जिसका हृदय प्रेम के बाणों से विंध चुका हो। जायसी के अनुसार प्रेम ही मनुष्य का धर्म और कर्म है। इस पर चलना तलवार की धार पर चलने के बराबर है। परमात्मा से प्रेम करो, उसे पाओ और संसार के सारे बंधन से छूट जाओ इसी भाव का समर्थन करते हुए जायसी कहते हैं।

**मानुस प्रेम भयउ बैकुंठी । न हि तो काह छार एक मूठी**
**।। प्रेम पंथ जो पहुँचे पारा ।। बहुरि न आइ मिले यहि छारा ।।**

सूफियों पर हठयोग का भी प्रभाव है। पिंड में ब्रह्मांड की कल्पना इनको मान्य है। पद्मावत में भी इसकी कल्पना अस्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। कुल मिलाकर जायसी का रहस्यवाद सौंदर्य है। ब्रह्म के प्रतिबिंब रूप जगत को देख सूफी की चेतना का सारा आनन्द उद्वेलित हो उठता है और यही सूफी रहस्यवाद की रूपरेखा है।

✦ ✦ ✦

हिन्दी अब सारे भारत की राष्ट्रभाषा बन गई है । हमें उस पर गर्व होना चाहिए । – **सरदार पटेल**

## आग कहाँ से लाओगे

रोटी तो मिल जाएगी, पर आग कहाँ से लाओगे
हम तुम भूखे रह लेंगे, पर कैसे देश बचाओगे?

तुम नहरे बाँध बना लोगे, घर–घर बिजली पहुँचा दोगे,
सड़कों के जाल बिछा दोगे, बुलडोजर भी चलवा दोगे,
चलकर विकास की राहों पर, समृद्धि फलेगी–फूलेगी,
और बेटियां भी शायद फाँसी पर कभी न झूलेगी,
लेकिन धरती पर मानव की वो रूह कहाँ से लाओगे?

जीना मरना रोज लगा रहता है जिस संग्राम में,
भूखा ही मर गया पसीने का वंशज खलिहान में,
हरियाली में विस्फोटों पर पहले रोक लगाऐं हम
तभी उगेगा जीवन–पौधा जलते रेगिस्तान में ।
लेकिन है सवाल, इस श्रम को कैसे जीत दिलाओगे?

अब तुम इस नीले अंबर में चाहे जितने सूर्य उगालो,
सुर्ख खून है, लाल पसीना, निर्णय अपने हाथ लिखा लो,
भ्रष्टाचार के पागल हाथी पर अंकुश अगर लगा पाओ तो,
तुम धरती पर खुशबू वाले चाहे जितने फूल खिला लो
बहुत बनाए महल–चौबारें, कब इन्सान बनाओगे?
रोटी तो मिल जाएगी, पर आग कहां से लाओगे

**– डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य**

## मेरी दुआ कबूल हो गई

मैंने ईश्वर से एक दुआ मांगी
हे ईश्वर कोई तो ऐसा दें
जो अंधेरों को उजालों में बदल दें,
जो गमों को खुशी में बदल दें,
जो उदास चेहरे पर मुस्कान ला दें,
जो कर सकें प्रेरित और उत्साहित मुझकों
जो समझे मुझसे कहीं बेहतर मुझकों ।।1।।

मैंने ईश्वर से एक दुआ माँगी
कोई तो ऐसा हो जो उम्मीद की किरण जगाएं
जो जिंदगी के संघर्ष में आशाओं के दीप जलाएं ।
कोई जो जिंदगी को जिंदादिली से भर दें
साथ से जिसके आसान हो जिंदगी के मेले ।।2।।

ऐसा कोई जो मंझधार में साथ न छोड़े
साथी ऐसा कोई जो अपने वादे न तोड़े ।
दुआ मांगने के बाद मैंने पीछे मुड़के देखा तो तुम खड़े थे
मुझे लगा मुझसे भूल हो गई है ।
मेरी दुआ तो कब से कुबूल हो गई है ।।3।।

**श्री. सुरेश वसंत कनपटे**

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है । **– श्री सुभाषचन्द्र बोस**

## पंचकाव्य

हिन्दी हिन्द की भाषा है, गांधी के अश्रु यही ।
लोकमान्य के घाव यही, लाठी के निशान यही ।।
वीर शिवाजी की तलवार यही, जो है देश का अभिमान ।
हिन्दी हिन्द का मान है, यही तिरंगा निशान ।।
हिन्दी विश्व की भाषा है, जो छाई सर्वत्र आज ।।
मन से अपनाकर इसे, करें इसमें सारा कामकाज ।
हिन्दी जवाहर है, यही है लाल, गोपाल ।
वीर सावरकर, भगतसिंग की यही है मशाल ।।
हिन्दी कबीर है तुलसी और चन्दवरदाई ।
राजगुरू की कर्मभूमि और सुखदेव की मशाल ।।
इसे लहू से सींचा, दे कर कुरबानी ।
अमर हो गए शहीद जो थे स्वाभिमानी ।।
आओ हम सब मिलकर हिन्दी को अपनाएँ ।
अपना देश, अपनी भाषा का गौरव हम बढ़ायें ।।

**श्री. सत्यप्रसाद कंडवाल**

## गज़ल

घरों में हुए या मुल्कों में हुए ।
युद्ध तो केवल ईर्ष्याओं में हुए ।।
खुद जिएँ और जीना सिखाएँ
ये कार्य सिर्फ कक्षाओं में हुए।।
जलते दियों को बुझाते चलो
ये विमर्श तेज हवाओं में हुए ।।
बीमारी से दुआ बचा ले गई
संशय हर रोज दवाओं में हुए ।।
बरसता तो समझ में भी आता
भ्रष्टाचार ऊपर घटाओं में हुए ।।
अर्थ से तब से खेलने लगे लोग
शब्द जब सीमित सजाओं में हुए ।।
वसंत का इंतजार कब तक करें
लू लपट शामिल फिजाओं में हुए ।।

**डॉ. सतीश चतुर्वेदी**

सबको हिन्दी सीखनी ही चाहिए । इसके द्वारा भाव विनिमय से सारे भारत को सुविधा होगी । – **चक्रवती राजगोपालाचारी**

# हवाईजहाज का सफर मेरा

पति ही करे क्यों हमेशा, मन में आए जैसे
कभी दिल्ली तो कभी मुंबई, जाएँ हवाईजहाज से
मैं भी कर लूँ सफर हवाईजहाज का एक बार
जान लूँ होता है कैसे, हवाईजहाज का कारोबार
सोचकर ऐसा, बैग तैयार मैंने कर दिया
मुझे साथ ले जाने के लिए, पति को मजबूर किया
जाना था हवाईजहाज से, कपड़े महंगे पहने
कसर न रखी कोई, लाये पड़ोसन के भी गहने
पहुँचे हम हवाई–अड्डे पर, समय के पहले तीन घण्टे
डर था मुझे, देरी की वजह से मौका न मेरा छूटे
अंदर जाते वक्त ही, ली गयी पूरी तलाशी मेरी
शर्म से चूर हो गयी मैं, देखकर यह रीत न्यारी
ठीक से बैठी भी नहीं थी मैं, बताई गई कुर्सी पर
बांधा गया मुझे कुर्सी से, हवाईसुंदरी की सलाह पर
हवाईजहाज लगा दौड़ने और हवा में ऊपर उठने
घना अँधेरा लगा छाने, मेरी आँखों के सामने
जब थोड़ा ठीक लगा तो खोल दी आँखे मैंने
नीला नभ था आगे, पीछे, बाएँ और दाहिने
चॉकलेट दिये हवाईसुंदरी ने, रखे मैं ने बच्चों के लिए
लेकिन रहा न गया नींबू रस देख के, दो गिलास पूरे पिए
थोड़ी देर के बाद आया भोजन, दिखने में बहुत अच्छा
समझ में नहीं आ रहा था, चावल क्यों था इतना कच्चा
दाल–रोटी, आलू की सब्जी, गाजर का अचार भी था
इन में से कुछ खाने को मेरा मन ही नहीं कर रहा था
पूछा पति से मैंने, ''अपने घर जैसा मिलेगा यहाँ कुछ?
गुस्से से वे बोले, ''गँवार जैसे सवाल फिर यहाँ मत पूछ''
जब बाकी लोग खा रहे थे मजे में खाना पेटभर
चुपचाप बैठना पड़ा मुझे, दोनों आंखे मूँदकर
खाने के बाद चैन से सो गए लोग बहुत सारे
खर्राटे भरने लगे ज़ोर से बाजू में बैठे पति मेरे
मैं सो न सकी क्योंकि चूहे दौड़ रहे थे मेरे पेट में
बच्चों के लिए रखे हुये चॉकलेट पहुँच गए मेरे मुँह में
न बिलकुल हँसी–मज़ाक, न किसी के साथ कुछ बोलना
पता नहीं, पति को पसंद कैसे,
हवाईजहाज से आना–जाना।
मेरे सफर का मजा तो पूरा किरकिरा हो गया
चंद घंटों का सफर कई दिनों जैसा बन गया
आखिर आने लगा हवाईजहाज नीचे धीरे–धीरे
जी में जी आ गया, जब धरती पर पैर टिके मेरे
सबक सीखा एक मैंने, ढेर सारे पैसे खर्च कर
धरती की एस.टी. बस अच्छी, न हवाईजहाज का चक्कर।

**डॉ. एच.बी.बोराटे**

हिन्दी देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है । हमें इस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना ही चाहिए । – **श्री रवींद्रनाथ ठाकुर**

## हे मानव

हे मानव संभल के चल
होश में आ, समय रहते संभल ।
ईश्वर ने दिया हर वो पल
जिसमें तू समझ सके, हर उसका अंश ।।
हे मानव ! जीवन गतिमान है
अगर तू बैठा, तो इसमें तेरा नुकसान है ।
दिया है उसने, सीमित समय
सहना है उसमें, नियमित तुझे ।।
समय रुपी घड़ी दी है तुझे
सुख दुख की सुई है उसमें
अंतराल में सुख दुख आएंगे
लेकिन समय चला जाएगा
रहना है संभल के तुझे
हर पल को सँवारना है तुझे ।।
अपने काम को आनंद समझ
अपने सुख को साथी समझ
अपने दुख को साहस समझ
अपने व्यवहार को ताकत समझ
अपनी वाणी को वरदान समझ
अगर तू समझ जाएगा
तो तू समय को पाएगा ।।
जीवन में ऊँचाई पाने की कोशिश कर
अपने सपनों को पूरा करने की चाह रख
अपनी ऊर्जा को बचाने की सोच रख
उसी ऊर्जा से पंख फैलाने का इंतजार कर
और एक दिन उडान से,
अपने सपनों को पूरा करने की तैयारी कर ।
अगर समय को नहीं पहचानेगा
तो समय यूँ ही चला जाएगा
और तू बैठा रह जाएगा ।
एक दिन यूं ही पंचतत्व में विलीन हो जाएगा ।
होश में आ, समय रहते संभल।

**– कु. प्रियंका शर्मा**

## बेटी

जब से हुई है तू पैदा
तेरे साथ साथ मुझे भी अपनी फिक्र होने लगी है।
पहले नहीं थी फिक्र अपनी
गुजर रहा है जैसा जीवन
गुजरने दो ऐसा मन मानता था
पर जब से हुई है तू पैदा
मेरे जीवन की राह बदल गई है
न हुई मैं तो तेरा क्या होगा
इस बदले समय में मेरे जैसा तेरा रक्षक कौन होगा?
तुझे समझने– समझाने वाला कौन होगा।
छोटी से बड़ी होती बेटी पर
कब किस दुष्कर्मी की नजर पड़ जाये?
तुझे इन नजरों की भाषा को
समझाने वाला कौन होगा?
न जाओ उस दिशा में
जहाँ भेड़ियों की माँद हो
न पहनों कुछ ऐसा
जो लालायित गिद्ध दृष्टि में आ सकें
दो न निमंत्रण कुछ ऐसा कि जो उन्हें आकृष्ट कर सके
समाज के वहशी भेड़ियों को
सजाओं से, बहसों से, लेखों से, न कैंडल लाईट से
न कमजोर कानून से कुछ होगा।
जब तक मिले न घर से, समाज से,
स्कूल से, मीडिया से, साहित्य से अच्छे संस्कार
तब तक न मिलेगा अच्छा परिणाम
कूट कूट कर भरेंगे हम अच्छे कर्म,
सत्कर्म की परिभाषा, अच्छा ज्ञान अच्छा संस्कार
जो बनाये एक अच्छे व्यक्तित्व की पहचान
जो दे अच्छा परिणाम ।
मन की सोच ही हमें अच्छे कर्म की ओर ले जाती है इसलिये
प्रिय बेटियों, मां की शिक्षा तुम्हारे साथ है
न डरो, न बनों कमजोर, न बनों किसी की कमजोरी

**– श्रीमती मीरा रायकवार**

---

हिन्दी की होड़ किसी प्रान्तीय भाषा के साथ नहीं है । – **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

# जिन्दगी की पाठशाला

जिन्दगी की पाठशाला हम सबको जीना सिखा देती है
थाम कर हमारे हाथों को
दुनिया को जीतना भी सिखा देती है
संग संग चल कर हमारे साथ–साथ
मुश्किल राहों को आसान बना देती है
जिन्दगी की पाठशाला हम सबको जीना सिखा देती है ।
देकर हमें खट्टे मीठे अनुभव का खजाना
ज्ञान हमारा बढ़ा देती है।
हर घटना के माध्यम से सीख अनमोल दे जाती है।
हर पल की नई सीख हमारे जीवन को संवार जाती है।
जिन्दगी की पाठशाला हम सबको जीना सिखा देती है।
हर पल देती है हमें अवसर हजार
पर पहले हम नहीं समझ पाते हैं।
और उन अवसरों को गंवाते हैं।
असफलता और दुख की भी अपनी डगर करते है हम पार
तब यह सिखाती है कि सफलता और
सुख की संभावनाएं भी है अपार।
कोशिशों में हमारी कमी नहीं होनी चाहिए।
परिश्रम और ईमानदारी से कभी दूरी नहीं होनी चाहिए।
इन गुणों को अपनाने की हमें ये सीख दे जाती है।
जिन्दगी की पाठशाला हम सबको जीना सिखा देती है।।
हमारी आकांक्षाओं को उत्साह के पंख लगाती है।
हमारे सपनों को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुंचाती है।
उदासियों में हमें मुस्कुराना सिखाती है।
मुश्किलों से लड़ना और उलझनों को सुलझाना सिखा देती है।
जिन्दगी की पाठशाला हम सबको जीना सिखा देती है।।
इसमें पढ़े पाठ किताबों में नहीं मिलते ।
न ही ये पाठ कहीं सिखाए जाते हैं।
इन्हें तो खुद ही सीखना होता है।
जिन्दगी का हर गुजरता पल एक नया पाठ होता है।
जो बदल जाता है एक अनमोल अनुभव में।
और उन अनुभवों से ही जिंदगी की माला बनती है।
जिन्दगी की पाठशाला हम सबको जीना सिखा देती है।।

**– श्रीमती साधना खन्ना**

# देखो हमारा भारत श्रृंगार कर रहा

दुश्मन तो मुल्क पर वार कर रहा ।
देखो हमारा भारत श्रृंगार कर रहा ।।
इस मुल्क का हर बच्चा ऐसा काम करेगा ।
विश्व में भारत का नाम करेगा ।
आने वाले कल का इन्तज़ार कर रहा ।
देखो हमारा भारत श्रृंगार कर रहा ।।
सोने की चिड़िया की रखना तुम निगरानी ।
इस काम के लिए चाहे हो जाये कुर्बानी ।।
दुश्मन तो सीमा मुल्क़ की पार कर रहा ।
देखो हमारा भारत श्रृंगार कर रहा ।।
झुकने को दुश्मन को मज़बूर कर देना ।
शीशे की तरह इसको चकनाचूर कर देना ।।
वेवजह जो हमसे तकरार कर रहा ।
भारत के वीर मौत से डरते नहीं है।
मर जायें चाहे फिर भी ये मरते नहीं हैं।।
भारत का हर इन्सां देश से प्यार कर रहा।
देखो हमारा भारत श्रृंगार कर रहा ।।
शहीदों के लिए तिरंगा है कपड़ा कफ़न का।
शहीदों ने देखा जो सपना वतन का।।
आज़ाद हिन्द सपना साकार कर रहा।
देखो हमारा भारत श्रृंगार कर रहा ।।
शहीदों की याद जब आती ज़िन्दगानी ।
दिल से दुआ निकलती आँखों से गिरता पानी ।।
शहीदों को नमन ''सागर'' बारम्बार कर रहा ।
देखो हमारा भारत श्रृंगार कर रहा ।।

**– श्री संघशील 'सागर'**

---

हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र की उन्नति। **– श्री रामवृक्ष बेनीपुरी।**

# भावार्पण

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल) है हमारा संस्थान ।
होते है जहां विश्वस्तरीय रासायनिक अनुसंधान ।।

ज्ञान-प्रवर्तन-अनुभव है जिसका ध्येय महान ।
उत्कृष्ट अनुसंधान और विविधता है जिसकी पहचान ।।

प्रबुद्ध वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों ने भी बढ़ाई है इसकी शान ।
शोध छात्रों को भी दिया जाता है कुशल मार्गदर्शन एवं ज्ञान ।।

सुंदर परिसर, सुप्रतिष्ठित नेतृत्व अतिपावन अभियान ।
नित नए अनुसंधानों में प्रवृत्त हैं यहां के वैज्ञानिक अविराम ।।

शिक्षा की इस नगरी पुणे का भी रौशन किया है इसने नाम ।
श्रेष्ठ मानव संसाधन का भी किया है सृजन महान ।।

राष्ट्रीय वैज्ञानिक वातावरण एवं संस्कृति का किया है निर्माण ।
सत्यनिष्ठा और नैतिकता से युक्त है यह गरिमा स्थान ।।

बहुआयामी विशेषज्ञता और संसाधनों का है यह विकास स्थान ।
सीएसआईआर का भी सदैव बढ़ाया है इसने मान ।।

देश के अनेक उद्योगों का भी किया है सदैव उत्थान ।
विश्व पटल पर भारत का बढ़ाया है सदा सम्मान ।।

नए दौर में नई संकल्पनाएं और नया है ज्ञान ।
एनसीएल का संकल्प है विश्व में अग्रणी हो भारत का स्थान ।।

– श्रीमती स्वाति चढ्ढा

# स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ

# हिन्दी कार्यशालाओं की झलकियाँ

**सीएसआईआर – राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे**
**CSIR - National Chemical Laboratory**